नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 292, नई दिल्ली, सोमवार 22 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता हाथों की लकीरों में नहीं, माथे के पसीने में होती है

03 दैनिक जीवन में अंकशास्त्र: व्यावहारिक उपयोग और व्यक्तिगत लाभ
06 पशु-पक्षियों के संकेत और मौसम
08 सरकार की भूमिका देश के लोगो को अवसर प्रदान करती है- अजीत तेवतिया

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव को वाहन स्थान ट्रैकिंग उपकरणों (वीएलटीडी) की कम सक्रियता और प्रस्तावित प्रवर्तन उपाय के संबंध में जारी किया पत्र

संजय बाठला

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वाहन स्थान ट्रैकिंग उपकरणों (वीएलटीडी) की कम सक्रियता और प्रस्तावित प्रवर्तन उपाय के संबंध में भारत देश के सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव को जारी किया पत्र और कहा की किए गए व्यापक प्रयासों के बावजूद, सार्वजनिक सेवा वाहनों (पीएसवी) और राष्ट्रीय यह देखा गया है कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) द्वारा परमिट वाहनों में स्थापित सक्रिय वाहन स्थान ट्रैकिंग उपकरणों (वीएलटीडी) का प्रतिशत कई राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में काफी कम बना हुआ है।

केंद्रीय मोटर वाहन नियम (सीएमवीआर), 1989 के नियम 125 एच के अनुसार, सभी सार्वजनिक सेवा वाहनों (दोपहिया, ई-रिक्शा और तिपहिया वाहनों को छोड़कर) में वीएलटीडी और आपातकालीन बटन लगाना अनिवार्य है। इसी प्रकार, नियम 90(5) राष्ट्रीय परमिट जारी करने के लिए वीएलटीडी फिटमेंट को अनिवार्य बनाता है। हालांकि, वर्तमान में देशव्यापी स्तर पर इसका प्रचलन और सक्रियता संतोषजनक नहीं है।

वीएलटीडी के उपयोग को बढ़ाने और सीएमवीआर प्रावधानों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए और उनकी जांच के लिए जांच सेंटर बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा पैसे देने के बावजूद वर्तमान में देशव्यापी स्तर पर

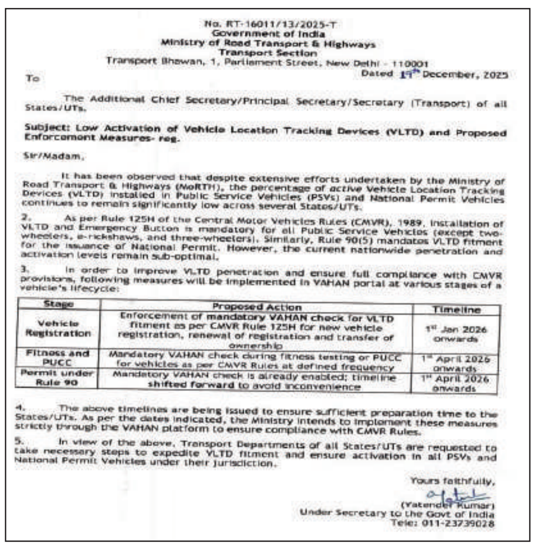

No. RT-16011/13/2025-T
Government of India
Ministry of Road Transport & Highways
Transport Section
Transport Bhawan, 1, Parliament Street, New Delhi - 110001
Dated 19th December, 2025

To
The Additional Chief Secretary/Principal Secretary/Secretary (Transport) of all States/UTs.

Subject: Low Activation of Vehicle Location Tracking Devices (VLTD) and Proposed Enforcement Measures- reg.

Sir/Madam,

It has been observed that despite extensive efforts undertaken by the Ministry of Road Transport & Highways (MoRTH), the percentage of active Vehicle Location Tracking Devices (VLTD) installed in Public Service Vehicles (PSVs) and National Permit Vehicles continues to remain significantly low across several States/UTs.

2. As per Rule 125H of the Central Motor Vehicles Rules (CMVR), 1989, installation of VLTD and Emergency Button is mandatory for all Public Service Vehicles (except two-wheelers, e-rickshaws, and three-wheelers). Similarly, Rule 90(5) mandates VLTD fitment for the issuance of National Permit. However, the current nationwide penetration and activation levels remain sub-optimal.

3. In order to improve VLTD penetration and ensure full compliance with CMVR provisions, following measures will be implemented in VAHAN portal at various stages of a vehicle's lifecycle:

Stage	Proposed Action	Timeline
Vehicle Registration	Enforcement of mandatory VAHAN check for VLTD fitment as per CMVR Rule 125H for new vehicle registration, renewal of registration and transfer of ownership	1st Jan 2026 onwards
Fitness and PUCC	Mandatory VAHAN check during fitness testing or PUCC for vehicles as per CMVR Rules at defined frequency	1st April 2026 onwards
Permit under Rule 90	Mandatory VAHAN check is already enabled; timeline shifted forward to avoid inconvenience	1st April 2026 onwards

4. The above timelines are being issued to ensure sufficient preparation time to the States/UTs. As per the dates indicated, the Ministry intends to implement these measures strictly through the VAHAN platform to ensure compliance with CMVR Rules.

5. In view of the above, Transport Departments of all States/UTs are requested to take necessary steps to expedite VLTD fitment and ensure activation in all PSVs and National Permit Vehicles under their jurisdiction.

Yours faithfully,
(Yatender Kumar)
Under Secretary to the Govt of India
Tele: 011-23739028

इसका प्रचलन और सक्रियता संतोषजनक नहीं है।

इसलिए अब वाहन के जीवनचक्र के विभिन्न चरणों में वाहन पोर्टल पर निम्नलिखित उपाय लागू किए जाएंगें:

वींएलटीडी के लिए अनिवार्य वाहन जांच लागू करना

1. वाहन पंजीकरण:- नए वाहन पंजीकरण, पंजीकरण के नवीनीकरण और स्वामित्व हस्तांतरण के लिए सीएमवीआर नियम 125H के अनुसार 1 जनवरी 2026 से वींएलटीडी फिटमेंट अनिवार्य,

2. फिटनेस और पीयूंसी:- सीएमवीआर नियमो के अनुसार निर्धारित अंतराल पर वाहनों की फिटनेस जांच और पीयूसीसी के दौरान 1 अप्रैल 2026 से वींएलटीडी फिटमेंट जांच अनिवार्य,

3. परमिट के तहत नियम 90 में वींएलटीडी फिटमेंट जांच पहले से ही सक्षम / अनिवार्य है ; समय सीमा असुविधा से बचने के लिए 15 अप्रैल 2026 तक बड़ा दी गई।

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा उपरोक्त समय सीमा राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को तैयारी के लिए पर्याप्त समय सुनिश्चित करने हेतु जारी की गईहै।

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय ने इस पत्र में समय सीमा बढ़ाते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया है की निर्धारित तिथियों के अनुसार, मंत्रालय सीएमवीआर नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए वाहन प्लेटफॉर्म के माध्यम से इन उपायों को सख्ती से लागू करने का इरादा रखता है।

सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय ने इस पत्र के माध्यम से सभी राज्यो को स्पष्ट किया है की उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के परिवहन विभागों से अनुरोध है कि वे अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत **सभी सार्वजनिक परिवहन वाहनों और राष्ट्रीय परमिट वाहनों में वीएलटीडी फिटमेंट में तेजी लाने और उसे सक्रिय करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।**

जाली डिप्लोमा से नौकरी का आरोप, परिवहन विभाग के अधिकारी पर जांच की मांग

"दिल्ली परिवहन विभाग विवाद, आर. रामनाथन जांच, फर्जी दस्तावेज़ मामला, एमवीआई भर्ती धोखाधड़ी, सरकारी नौकरी अनियमितता"

शिकायतकर्ता ने दावा किया – उपायुक्त आर. रामनाथन ने झूठे दस्तावेज़ों के आधार पर एमवीआई पद प्राप्त किया; सरकार से एफआईआर दर्ज करने की अपील

संजय कुमार बाठला

परिवहन विभाग के अधिकारी पर जाली दस्तावेज़ों से नौकरी पाने का आरोप, शिकायत दर्ज, दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में पदस्थ उपायुक्त आर. रामनाथन के विरुद्ध गंभीर आरोप लगाए गए हैं। एक लिखित शिकायत में दावा किया गया है कि उन्होंने जाली और भ्रामक प्रमाणपत्रों के आधार पर मोटर वाहन निरीक्षक (एमवीआई) के पद पर नौकरी प्राप्त की थी।

शिकायतकर्ता अधिवक्ता पवन कुमार ने विभागीय अधिकारियों को दी गई अपनी शिकायत में कहा है कि

* आर. रामनाथन ने 1989 में परिवहन विभाग में एलडीसी के रूप में सेवा प्रारंभ की थी।

* बाद में वर्ष 1993 में उन्हें एमवीआई पद पर पदोन्नत किया गया, जिसके लिए तकनीकी डिप्लोमा और पांच वर्ष के अनुभव की आवश्यकता होती है। (आर. आर. कापी सलग्न)

*** शिकायत के अनुसार,**

*रामनाथन द्वारा प्रस्तुत "मशीन शॉप टेक्नोलॉजी डिज़ाइन ऑफ जिग्स, फिक्स्चर्स एंड प्रेस टूल्स" नामक डिप्लोमा ना तो आवश्यक "मोटर मैकेनिक/ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग" की पात्रता पूरी करता है और ना ही यह दस्तावेज़ प्रामाणिक प्रतीत होता है। **इसके अलावा, शिकायत में कहा गया है कि उन्होंने**

*एक ही समय में सरकारी सेवा करते हुए वाहन परीक्षण, मरम्मत और ड्राइविंग का पांच वर्ष का अनुभव दिखाया, जबकि उसके कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

*** शिकायतकर्ता ने यह भी आरोप लगाया है कि**

* उनके ड्राइविंग लाइसेंस — एलएमवी, टीएसआर और एचएमवी (वर्ष 1992) — संदिग्ध परिस्थितियों में जारी किए गए लगते है क्योंकि वाहन लाइसेंस सेवा के दौरान ही लिया था, परिवहन लाईसेंस लेने के लिए एक महीने की ट्रेनिंग लेनी होती है, और ट्रैनिंग के लिए विभाग से छुटी नहीं ली गई, फिर परीक्षण कैसे लिया इसलिए ड्राइविंग अनुभव का दावा भी फर्जी प्रतीत हो रहा है।

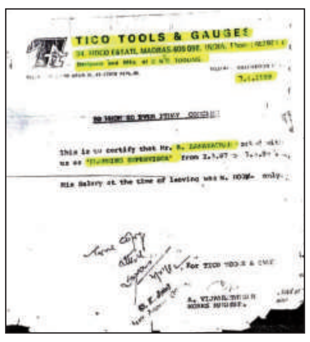

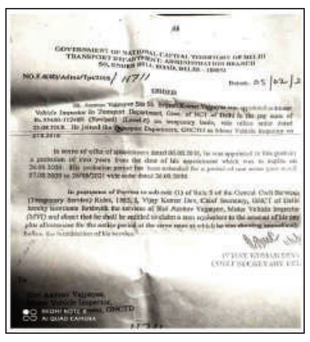

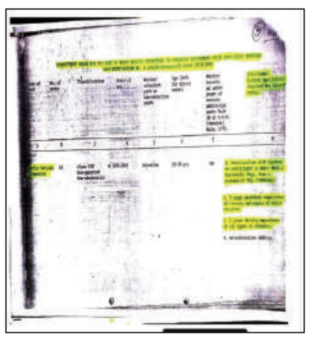

अधिवक्ता पवन कुमार ने अपनी शिकायत में यह भी उल्लेख किया है कि ऐसे ही एक अन्य मामले में, परिवहन विभाग के एक एमवीआई अधिकारी आस्त्रव वाजपेयी को वर्ष 2021 में सेवा से निष्कासित कर दिया था। (कापी सलग्न)

शिकायतकर्ता ने दिल्ली सरकार से मांग की है कि रामनाथन के दस्तावेजों की असलीयत की जांच मुख्य सचिव की अध्यक्षता में करवाई जाए और एफआईआर दर्ज के साथ आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाए।

बांग्लादेश में 27 वर्षीय हिंदू युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई

संगिनी घोष

पिछले कुछ दिनों से यह खबर सभी बढ़े चैनलों (एनडीटीवी, टीओआई, सीएनएन न्यूज 18, आदि) पर एंटी इंडिया प्रोटेस्ट्स और व्यापक अशांति के नाम पर चल रही है, जाने इस पर विशेषज्ञों की क्या कहना है और क्या है यह घटना,
बांग्लादेश में एक हिंदू युवक की भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या कर दी गई, जिससे भीड़ हिंसा और धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हो गई हैं। यह घटना 18 दिसंबर की रात को बांग्लादेश के उत्तरी भाग में स्थित मयमन सिंह जिले के भालुका इलाके में घटी। मृतक की पहचान 27 वर्षीय हिंदू युवक दीपू चंद्र दास के रूप में हुई है, जो एक स्थानीय कपड़ा कारखाने में काम करता था और उसी इलाके में किराए के मकान में रहता था।
पुलिस और स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार, कुछ लोगों ने उस पर इस्लाम के प्रति अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगाया। इन आरोपों के बाद, भीड़ जमा हो गई और उस पर हमला कर उसे बुरी तरह पीटा। हमला इतना क्रूर था कि उसकी मौके पर ही मौत हो गई।
उसकी मृत्यु के बाद, हमलावरों ने कथित तौर पर उनके शव को एक पेड़ से बांध दिया और बाद में उसे आग लगा दी, जिससे स्थानीय निवासियों में भय और आक्रोश फैल गया। हिंसा घटने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव बरामद किया। अधिकारियों ने हत्या के सिलसिले में कई संदिग्धों को गिरफ्तार किया है और कहा है कि इसमें शामिल सभी लोगों की पहचान करने के लिए जांच जारी है।
बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने घटना की निंदा की और दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई का आश्वासन दिया।
यह हत्या देश के कुछ हिस्सों में बढ़े तनाव के दौर में हुई, और इसने एक बार फिर भीड़ द्वारा की जाने वाली हिंसा के खतरों को उजागर किया है, खासकर तब जब यह निराधार आरोपों से प्रेरित हो।
इस घटना की मानवाधिकार समूहों और आम जनता ने व्यापक निंदा की है, जिन्होंने अल्पसंख्यकों के लिए मजबूत सुरक्षा और भविष्य में इस तरह की हिंसा को रोकने के लिए ठोस कार्रवाई की मांग की है।
यह घटना न केवल बांग्लादेश के भीतर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और भीड़ हिंसा को लेकर गंभीर चिंता का विषय बन गई है।
इस पर दो स्तरों पर प्रतिक्रियाएँ और संदर्भ दिख रहे हैं – तत्काल राजनीतिक /कूटनीतिक प्रतिक्रियाएँ और लम्बे समय से चल रही संरचनात्मक समस्याएँ।
ताज़ा अंतर्राष्ट्रीय और सरकारी प्रतिक्रियाएँ बांग्लादेश की अंतरिम सरकार (मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली) ने आधिकारिक बयान में दीपू चंद्र दास की lynching की "पूरी तरह निंदा" की है और कहा है कि "नए बांग्लादेश में ऐसी हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है" तथा दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।
इस घटना की रिपोर्टिंग भारतीय और अंतरराष्ट्रीय मीडिया (NDTV, TOI, CNN-News18 आदि) में "anti-India protests" और व्यापक अशांति की पृष्ठभूमि में की जा रही है, जिससे यह केवल एक आपराधिक केस नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा एवं द्विपक्षीय संबंधों के संदर्भ में भी संवेदनशील मुद्दा है।
भारत तथा बाहरी अभिकरणों की भूमिका भारत के विदेश मंत्रालय ने पिछले एक वर्ष में बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों व अल्पसंख्यकों पर बढ़ते हमलों पर "गंभीर चिंता" जताकर ढाका से अल्पसंख्यकों और पूजा स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की बात आधिकारिक रूप से उठाई है।
एमनेस्टी इंटरनेशनल और अन्य मानवाधिकार संगठनों ने 2024 में ही बांग्लादेश में हिंदू, अहमदी व अन्य अल्पसंख्यकों पर हमलों की स्वतंत्र, निष्पक्ष जांच तथा तत्काल सुरक्षा उपायों की मांग की थी; इस नई lynching को वे उसी पैटर्न की ताज़ा कड़ी के रूप में देख रहे हैं।
बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों की पृष्ठभूमि हिंदू समुदाय बांग्लादेश की आबादी का लगभग 8–9% माना जाता है, और संवैधानिक रूप से समान अधिकार प्राप्त होने के बावजूद विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टें लगातार "कोवर्ट और ओवर्ट भेदभाव" तथा समय समय पर सीधे उत्पीड़न की बात दर्ज करती रही हैं।
बड़े राजनीतिक घटनाक्रम – जैसे चुनाव, सरकार परिवर्तन या साम्प्रदायिक रूप से संवेदनशील विवाद – अक्सर हिंसा के फ्लैशपॉइंट बनते हैं, जिनमें हिंदू समुदाय विशेष रूप से निशाने पर आता है; 2014 के चुनाव, 2021 की दुर्गा पूजा केंद्रित हिंसा और 2024 में शेख हसीना के इस्तीफे के बाद हुए 2,000 से अधिक दर्ज हमले इसके हालिया उदाहरण हैं।
भीड़ हिंसा और ब्लास्फ़ेमी नैरेटिवइस मामले की तरह, "इस्लाम का अपमान" या सोशल मीडिया पोस्ट के आरोप बांग्लादेश में भीड़ हिंसा को ट्रिगर करने वाला बार बार दिखने वाला पैटर्न हैं; 2021 की दुर्गा पूजा हिंसा पर Human Rights Watch ने भी चेताया था कि प्रशासन अफवाहों पर काबू पाने और अल्पसंख्यकों की रक्षा में विफल रहा।
विभिन्न विश्लेषण यह इंगित करते हैं कि साइबर या speech related कानून (जैसे पहले DSA और अब CSA) का अनुप्रयोग भी कई बार असमान होता है – कथित आपत्तिजनक पोस्ट करने वाले हिंदू आरोपियों पर सख़्त कार्रवाई दिखती है, जबकि प्रतिशोधी सामूहिक हिंसा करने वालों पर अपेक्षाकृत ढीला रुख़ देखने को मिलता है।
संरचनात्मक चुनौतियाँ और संभावित सुधार बिंदु रिपोर्टों में बार बार यह सामने आया है कि हर बड़े हमले के बाद कुछ गिरफ्तारियाँ, मुआवज़ा और मंदिर / मकानों का पुनर्निर्माण तो होता है, लेकिन अधिकतर मामलों में दोषियों का त्वरित व विश्वसनीय दंड न मिल पाने से deterrence कमजोर रहता है, जिससे ऐसी lynching दोहराई जाती हैं।
नीतिस्तर पर सुझाए गए उपायों में शामिल हैं:
* अल्पसंख्यक बहुल इलाकों के लिए विशेष सुरक्षा प्रोटोकॉल और त्वरित प्रतिक्रिया बल।
* ब्लास्फ़ेमी आरोपों पर स्वत: स्फूर्त भीड़ एकत्र होने से पूर्व पुलिस की सक्रिय डिजिटल निगरानी और fact checking सेल।
* अंतरराष्ट्रीय दबाव और द्विपक्षीय कूटनीति के माध्यम से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को बांग्लादेश के मानवाधिकार दायित्वों और भारत बांग्लादेश संबंधों का स्पष्ट एजेंडा आइटम बनाना।
1. ***बुनियादी अधिकारफ्रेम (UDHR और ICCPR)UDHR में**
* जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्ति की सुरक्षा (Article 3)*,
* विचार अंतरात्मा धर्म की स्वतंत्रता (Article 18) और
* अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Article 19) को मौलिक मानवाधिकार के रूप में मान्यता दी गई है।
ICCPR इन सिद्धांतों को विधिक रूप से बाध्यकारी बनाता है:
* Article 6: मनमानी ढंग से जीवन से वंचित न किए जाने का अधिकार
* Article 18: विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता (किसी भी धर्म को मानना/न मानना, व्यक्त करना)।
* Article 19: राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जिस पर केवल कानूनसम्मत, आवश्यक और proportionate प्रतिबंध ही लगाए जा सकते हैं।
2. ब्लास्फ़ेमी डिबेट बनाम ICCPR की सीमाएँHuman Rights Committee की general comments और scholarly विश्लेषण यह स्पष्ट करते हैं कि "सिर्फ़ धर्म भावनाएँ आहत होना" या "ब्लास्फ़ेमी" अपने आप में प्रतिबंध का वैध आधार नहीं है;
* प्रतिबंध तभी जायज़ होगा जब Article 20(2) के तहत "religious hatred का ऐसा उकसावा हो जो भेदभाव, शत्रुता या हिंसा की उकसाहट बन जाए"।
ICCPR commentary यह भी रेखांकित करता है कि:
* blasphemy laws जो केवल "धर्म के प्रति अनादर" पर दंड दें, वे आम तौर पर Article 19 के प्रतिकूल हैं।
* ऐसे क़ानून किसी विशिष्ट धर्म/विश्वास को विशेष संरक्षण देकर non believers या dissenters के साथ भेदभाव नहीं कर सकते।
बांग्लादेश वाला यह केस : कथित "इस्लाम के प्रति अपमान" के आरोप के कारण भीड़ हिंसा और हत्या –
* यह स्वयं ICCPR के Article 6, 18, 19 के प्रत्यक्ष उल्लंघन जैसा है;
* राज्य पर Article 2 और 20 के अंतर्गत कर्तव्य है कि वह धार्मिक नफ़रत पर आधारित हिंसा को रोके, दंडित करे और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे – जो यहाँ स्पष्ट रूप से विफल रहा।
3. भारत में भीड़ हिंसा / lynching पर संवैधानिक और न्यायिक दृष्टिभारत का फ्रेमवर्क इस केस को comparative/doctrinal संदर्भ देता है।
* भारतीय संविधान:Article 21 – जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा, जिसमें भीड़ हिंसा से संरक्षण भी शामिल है।
* Articles 25–28 – धर्म की स्वतंत्रता, परंतु "public order, morality and health" के अधीन; यानी धार्मिक उन्माद के नाम पर हिंसा / lynching को कोई मान्यता नहीं।
* Tehseen S. Poonawalla v. Union of India (2018) में सुप्रीम कोर्ट ने lynching को "rule of law और संविधान के मूल्यों पर सीधा हमला" माना और विस्तृत दिशानिर्देश दिए:
* प्रत्येक ज़िले में nodal officer, संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान और बढ़ी हुई पेट्रोलिंग (preventive measures)
* सोशल मीडिया पर hate speech/fake news को रोकने के लिए प्लेटफॉर्म और राज्य की संयुक्त जिम्मेदारी।
* हर lynching केस के लिए fast track कोर्ट, 6 महीने में ट्रायल पूरा करने का प्रयास, कड़ी सज़ा, पीड़ितों / परिजनों के लिए अनिवार्य क्षतिपूर्ति योजना (remedial /punitive measures)
* लापरवाह प्रशासनिक अधिकारियों पर व्यक्तिगत दायित्व और अनुशासनात्मक कार्रवाई
* Doctrinal point: कोर्ट ने कहा कि "कोई भी व्यक्ति या समूह कानून अपने हाथ में नहीं ले सकता" और राज्य का कर्तव्य है कि वह भीड़ हिंसा को रोकने के लिए प्रैक्टिव institutional architecture बनाए।
एक समान कॉन्टेक्स्ट वाले दक्षिण एशियाई लोकतंत्र में उच्चतम न्यायालय ने mob lynching पर क्या minimum standards बताए हैं।
4. doctrinal मैपिंग: Right to life and physical integrity तथ्य: दीपू चंद्र दास की पीट पीटकर हत्या, शव को पेड़ से बाँधना और जलाना – यह arbitrary deprivation of life और cruel, inhuman treatment का चरम उदाहरण है।
मानक: UDHR Article 3, ICCPR Article 6; राज्य पर positive obligation कि वह private actors से भी नागरिकों की रक्षा करे (due diligence obligation)।
Freedom of religion and belief तथ्य : पीड़ित हिंदू, आरोप "इस्लाम के अपमान" का; अल्पसंख्यक की हत्या religious hostility से प्रेरित भी दिखती है।
मानक: ICCPR Article 18 – किसी को उसके धर्म या belief के कारण हिंसा का शिकार नहीं बनाया जा सकता; राज्य को धर्मीय नफ़रत पर आधारित हिंसा रोकनी है।
Freedom of expression और ब्लास्फ़ेमी कथनतथ्य: कथित "अपमानजनक टिप्पणी" (भले ही हुई हो या न हुई हो) पर भी crowd justice
मानक:ICCPR Article 19 – ऐसी राय / अभिव्यक्ति की भी रक्षा करता है जो बहुसंख्यक को अप्रिय लगे, सिवाय जब वह प्रत्यक्ष रूप से हिंसा या भेदभाव को उकसाती है।
किसी alleged blasphemy पर भीड़ द्वारा सज़ा देना किसी भी civilized legal order में अस्वीकार्य है; यदि राज्य ऐसी भीड़ हिंसा को रोकने, जांचने और अभियोजन में विफल रहता है, तो यह स्वयं ICCPR उल्लंघन है।
Hate speech और Article 20(2) ICCPRArticle 20(2) राज्यों पर यह अनिवार्य दायित्व डालता है कि "कोई भी राष्ट्रीय, नस्ली या धार्मिक नफ़रत की वकालत जो भेदभाव, शत्रुता या हिंसा के उकसावे तक पहुँचे, उसे कानून द्वारा प्रतिबंधित किया जाएगा।"
doctrinal angle: यदि भीड़ के नेता या instigators ने "काफ़िर", "धर्म अपमान करने वाला" आदि कहकर हिंसा भड़काई, तो यह Article 20(2) के भीतर आता है और राज्य को ऐसे भाषण को चिन्हित कर आपराधिक रूप से दंडित करना चाहिए था।
Due diligence / State responsibilityrepeated पैटर्न – 2021 और 2024 की anti Hindu हिंसा, मंदिर हमले आदि – यह दिखाते हैं कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ हिंसा episodic नहीं, बल्कि recurring है।
अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार क़ानून में राज्य की ज़िम्मेदारी केवल सीधे कृत्यों तक सीमित नहीं है; यदि वह ज्ञात या reasonably foreseeable ख़तरे (उदाहरण: धार्मिक अफ़वाहों के बाद भीड़ हिंसा) पर पर्याप्त रोकथाम और प्रभावी जांच /अभियोजन में असफल रहता है, तो वह अपनी treaty obligations का उल्लंघन करता है।
"ऐसे में भारत सरकार को तत्काल प्रभाव से हिन्दुओं और हिंदू मंदिरों की सुरक्षा हेतु बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाना था और इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूती से पैश करना चाहिए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

बैंक वित्तीय साइबर धोखाधड़ी की तस्वीर बदल सकते हैं

पिंकी कुंडू

बैंक वित्तीय साइबर धोखाधड़ी की तस्वीर बदल सकते हैं। बैंक अधिकारियों को प्रशिक्षित और सशक्त बनाकर वित्तीय धोखाधड़ी को बहुत हद तक रोका जा सकता है।

बैंक "डिजिटल अरेस्ट" घोटालों के खिलाफ पहली रक्षा पंक्ति हैं। हाल ही में हैदराबाद, तेलंगाना और गुरुग्राम की घटनाओं ने दिखाया कि सतर्क और प्रशिक्षित बैंक अधिकारी बड़े धोखाधड़ी प्रयासों को विफल कर सकते हैं और नागरिकों को भारी नुकसान से बचा सकते हैं।

साइबर जागरूकता का मुख्य फोकस बैंक अधिकारियों पर होना चाहिए।

हाल की घटनाएँ और उनका महत्व

*हैदराबाद एवं तेलंगाना: साइबर अपराध इकाइयों और सतर्क बैंक कर्मचारियों ने बुजुर्ग नागरिकों को निशाना बनाने वाले बड़े "डिजिटल अरेस्ट" घोटालों को रोका, जिससे लाखों से करोड़ों रुपये का नुकसान टला।

*** गुरुग्राम (2025 मामले):**

* एक 70 वर्षीय महिला को धोखेबाजों ने पुलिस बनकर घर में बंद कर ₹78.9 लाख ट्रांसफर करने के लिए मजबूर किया। बैंक अधिकारियों ने असामान्य निकासी को देखकर घोटाले का पता लगाया।

* एक अन्य मामले में, एक महिला ने ₹5.85 करोड़ तेजी से ट्रांसफर कर दिए। बाद में उसने सवाल उठाया कि बैंक ने इतनी असामान्य गतिविधि को क्यों नहीं रोका, जिससे सक्रिय पहचान की आवश्यकता स्पष्ट हुई।

ये घटनाएँ दो सच्चाइयाँ उजागर करती हैं:

1. धोखेबाज सोशल इंजीनियरिंग का उपयोग करते हैं (नकली पुलिस/ईडी कॉल, धमकी भरे वीडियो कॉल)।

2. वे तेज़ी से धन हस्तांतरण पर निर्भर रहते हैं, जो म्यूल खातों के माध्यम से होता है।

जब बैंक कर्मचारी तुरंत कार्रवाई करते हैं और संकेत पहचानते हैं, तो नुकसान रोका जा सकता है।

बैंक क्यों विशिष्ट रूप से सक्षम हैं

*लेनदेन दृश्यता: खाते के प्रवाह की रीयल टाइम निगरानी।

* KYC स्वामित्व: नकली या पुनः उपयोग की गई पहचान, म्यूल चेन का पता लगाना।

* संचालन नियंत्रण: खातों को फ्रीज़, होल्ड या सत्यापित करने की क्षमता।

* ग्राहक संपर्क: कर्मचारियों की बातचीत से विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों में दबाव के संकेत पहचाने जा सकते हैं।

त्वरित और उच्च प्रभाव वाले कदम

1. फ्रंटलाइन जागरूकता: कर्मचारियों को चेतावनी संकेत पहचानने का प्रशिक्षण (धमकी भरे कॉल, जबरन OTP, तात्कालिक ट्रांसफर)।

2. म्यूल खाता विघटन: तेज़ इनबाउंड/आउटबाउंड ट्रांसफर को फ़्लैग करें; नए खातों की करीबी निगरानी।

3. KYC सख्ती: बायोमेट्रिक/लाइव वीडियो जांच; संदिग्ध खातों का पुनः सत्यापन।

4. कमजोर ग्राहकों की सुरक्षा: बुजुर्ग/उच्च जोखिम टैग, सक्रिय जागरूकता कॉल।

5. लेनदेन थ्रॉटलिंग: उच्च मूल्य ट्रांसफर पर सीमा; मल्टी फैक्टर सत्यापन लागू करें।

6. तेज़ एस्केलेशन: 24x7 धोखाधड़ी प्रतिक्रिया लाइनें साइबर अपराध इकाइयों से जुड़ी हों।

7. एनालिटिक्स और एआई: एमएल मॉडल से असामान्यताओं का पता लगाएँ, लगातार अपडेट करें।

संगठनात्मक एवं नीतिगत उपाय

* केंद्रीय धोखाधड़ी एवं वित्तीय अपराध इकाई को लेनदेन रोकने का अधिकार।

* संदिग्ध दबाव मामलों के लिए SOPs (अस्थायी होल्ड, कॉल बैक, एस्केलेशन टाइमलाइन)।

*साइबर पुलिस के साथ नियमित संयुक्त अभ्यास।

* ग्राहकों के लिए आसान "स्टॉप पेमेंट/वेरिफाई" हेल्पलाइन।

शाखा कर्मचारियों के लिए त्वरित चेकलिस्ट

* कॉल करने वाला पुलिस/ईडी होने का दावा करे → रोकें और एस्केलेट करें।

* बुजुर्ग/घबराए ग्राहक → व्यक्तिगत सत्यापन या परिवार से संपर्क करें।

* नया लाभार्थी या तेज़ ट्रांसफर → होल्ड करें और KYC पुनः जाँचें।

* कुछ घंटों में कई आउटवर्ड ट्रांसफर → फ्रीज़ करें और धोखाधड़ी इकाई को सूचित करें।

निष्कर्ष — तात्कालिकता क्यों आवश्यक है हैदराबाद, तेलंगाना और गुरुग्राम की घटनाएँ साबित करती हैं कि प्रशिक्षित और सतर्क बैंक कर्मचारी बड़े धोखाधड़ी को रोक सकते हैं। बैंक यदि प्रशिक्षण, मजबूत KYC, स्मार्ट मॉनिटरिंग, कमजोर ग्राहकों की सुरक्षा और तेज़ कानून प्रवर्तन समन्वय को जोड़ते हैं, तो "डिजिटल अरेस्ट" घोटालों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सक्रियता — केवल प्रतिपूर्ति नहीं — नागरिकों की असली ढाल है।

पैसे से कभी भी स्वास्थ्य और खुशियां नहीं मिलती ,आइए फ़िर से चलें प्रकृति की ओर

पिंकी कुंडू

सोनाली बेंद्रे - कैंसर
अजय देवगन - लिट्राल अपिकोंडिलितिस (कंधे की गंभीर बीमारी)
इरफान खान - कैंसर
मनीषा कोइराला - कैंसर
युवराज सिंह - कैंसर
सैफ अली खान - हृदय घात
रितिक रोशन - ब्रेन क्लोट
अनुराग बासु - खून का कैंसर
मुमताज - ब्रेस्ट कैंसर
शाहरुख खान - 8 सर्जरी (घुटना, कोहनी, कंधा आदि)
ताहिरा कश्यप (आयुष्मान खुराना की पत्नी) - कैंसर
राकेश रोशन - गले का कैंसर
लीसा राय - कैंसर
राजेश खन्ना - कैंसर,
विनोद खन्ना - कैंसर
नरगिस - कैंसर
फिरोज खान - कैंसर
टोम अल्टर - कैंसर...

* यह वो लोग हैं या थे- जिनके पास पैसे की कोई कमी नहीं है / थी!
* खाना हमेशा डाइटीशियन की सलाह से खाते है/ थे।
* दूध भी ऐसी गाय या भैंस का पीते हैं / थे जो AC में रहती है और बिसलेरी का, पानी पीती है।
* जिम भी जाते है।
* रेगुलर शरीर के सारे टेस्ट करवाते है।
* सबके पास अपने हाई क्वालिफाइड डॉक्टर है।

अब सवाल उठता है आखिर अपने शरीर की इतनी देखभाल के बावजूद भी इन्हें इतनी गंभीर बीमारी अचानक कैसे हो गई। जवाब बड़ा छोटा सा है

* क्योंकि यह सभी प्राक्रतिक चीजों का इस्तेमाल बहुत कम करते है या मान लो बिल्कुल भी नहीं करते। जैसा हमें प्रकृति ने दिया है, उसे उसी रूप में ग्रहण करो वो कभी नुकसान नहीं देगा।
* कितनी भी फ्रूटी पी लो, वो शरीर को आम के गुण नहीं दे सकती।
* अगर हम स्वयं इस धरती को प्रदूषित ना करते तो धरती से निकला पानी बोतल बन्द पानी से लाख गुण अच्छा था।

उदाहरण स्वरूप कोई बच्चा जो बचपन से पैसे के बल पर जन्म से ऐसे स्थान पर पला बढ़ा है जहां एक भी कीटाणु नहीं हो सकता उसे बड़ा होने के बाद अगर सामान्य जगह पर रहना पड़ जायेगा तब वो बच्चा एक सामान्य सा बुखार भी नहीं झेल पाएगा! क्यों ?:- क्योंकि उसके शरीर का तंत्रिका तंत्र कीटाणुओ से लड़ने के लिए विकसित ही नही हो पाई।

बड़ी बड़ी कंपनियों ने अपने प्रोडक्ट बेचने के लिए लोगो को इतना डरा रखा है, मानो एक दिन साबुन से नहीं नहाओगे तो तुम्हे कीटाणु घेर लेंगे और शाम तक पक्का मर ही जाओगे।

* समझ नहीं आता हम इतना पढ़ लिखकर भी कहां जी रहे है।
* एक दूसरे से हाथ मिलाने के बाद लोगों को सेनिटाइजर लगाते हुए आजकल देखते हैं हम। इंसान सोच रहा है- पैसों के दम पर वह खुशहाल जिंदगी जियेंगे। पर क्या ?

आपने कभी गौर किया है-- पिज़्ज़ा बर्गर खाने वाले शहर के लोगों की एक बुखार में ही धरती घूमने लगती है और वहीं दूध दही छाछ के शौकीन गांव के बुज़ुर्ग लोगों का वही बुखार बिना दवाई के ठीक हो जाता है। वजह बड़ी साफ है

* क्योंकि उनकी डॉक्टर प्रकृति है।
* क्योंकि वे पहले से ही सादा खाना खाते आए है।

इसलिए आपसे अनुरोध है
* प्राकृतिक चीजों को अपनाओ!
* विज्ञान के द्वारा लैब में तैयार हर एक वस्तु शरीर के लिए नुकसानदायक है!

याद रखे पैसे से कभी भी स्वास्थ्य और खुशियां नहीं मिलती।।
आइए फ़िर से_ चलें प्रकृति की ओर

भूमि आँवला — जिसे संस्कृत में "भूम्यामलकी" कहा जाता है।

पिंकी कुंडू

प्रकृति ने हमें अनमोल औषधीय पौधों का खजाना दिया है, और उनमें से एक है भूमि आँवला — जिसे संस्कृत में ?भूम्यामलकी? कहा जाता है। यह पौधा भले ही छोटा हो, लेकिन इसके औषधीय गुण बेहद प्रभावशाली हैं।

आयुर्वेद में भूमि आँवला को "लीवर टॉनिक" और "पथरी नाशक पौधा" कहा जाता है। सदियों से इसका उपयोग लीवर की बीमारियों, किडनी स्टोन, पाचन विकार और मधुमेह जैसी समस्याओं के उपचार में किया जाता रहा है।

भूमि आँवला के पौधे की पहचान कैसे करें — भूमि आँवला एक छोटा हरा-भरा पौधा है जो जमीन के पास फैलकर बढ़ता है। इसके पत्ते आँवला के पत्तों जैसे होते हैं और इसकी डंठल के नीचे छोटे-छोटे हरे फल लगते हैं, जो दानों के समान दिखते हैं। यही फल इसके औषधीय गुणों का प्रमुख स्रोत हैं। यह भारत के अधिकांश हिस्सों में, विशेष रूप से बरसात के मौसम में खेतों, बागानों और रास्तों के किनारे स्वाभाविक रूप से उग आता है।

भूमि आँवला के 7 औषधीय फायदे

1. किडनी स्टोन में लाभकारी :- भूमि आँवला का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह गुर्दे की पथरी को गलाने और मूत्रमार्ग से बाहर निकालने में मदद करता है। यह पेशाब की रुकावट, जलन और मूत्र संबंधी संक्रमणों को भी दूर करता है।

2. लीवर को मजबूत बनाए :- यह लीवर की कार्यक्षमता को बढ़ाता है और हेपेटाइटिस, फैटी लिवर व जॉन्डिस जैसी बीमारियों में अत्यंत लाभकारी है। यह लीवर को विषैले पदार्थों से मुक्त करके शरीर को डिटॉक्स करता है।

3. पाचन तंत्र को सुधारता है :- भूमि आँवला गैस, अपच, पेट दर्द और कब्ज जैसी समस्याओं में बहुत उपयोगी है। इसका नियमित सेवन पाचन शक्ति को मजबूत करता है और भोजन का सही अवशोषण सुनिश्चित करता है।

4. शरीर की गर्मी और त्वचा की समस्या में राहत :- यह शरीर की आंतरिक गर्मी को कम करता है, जिससे त्वचा पर निकलने वाले दाने, खुजली या एलर्जी जैसी समस्याएँ कम होती हैं।

5. ब्लड शुगर नियंत्रित रखता है :- इस पौधे में एंटी-डायबिटिक तत्व होते हैं जो रक्त शर्करा को नियंत्रित रखते हैं और इंसुलिन के स्तर को संतुलित करते हैं।

6. खून को साफ करने वाला :- यह रक्त को शुद्ध करने में मदद करता है और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालकर त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है।

7. संक्रमण से बचाव :- भूमि आँवला में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को इंफेक्शन से बचाते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

भूमि आँवला का काढ़ा बनाने का तरीका —

*ताज़े पौधे से :- 5–6 टहनियाँ (पत्ते और फल सहित) लें। उन्हें साफ पानी से धो लें, फिर 1 कप पानी उबालें और उसमें टहनियाँ डालें। लगभग 5–7 मिनट धीमी आँच पर पकाएँ। इसे छानकर गुनगुना पीएँ। स्वाद के लिए थोड़ा शहद या नींबू मिला सकते हैं।

* सूखे पत्तों या पाउडर से :- 1 कप पानी में 1 चम्मच सूखा भूमि आँवला पाउडर डालें, 5 मिनट तक उबालें। इसे सुबह खाली पेट पीना सबसे ज्यादा लाभदायक होता है।

भूमि आँवला के पत्तियों और फलों का उपयोग —

1. रोज सुबह 4–5 ताज़ी पत्तियाँ चबाना लीवर और पाचन के लिए बहुत लाभदायक है।

2. छोटे हरे फलों का रस या पेस्ट बनाकर पीने से पेशाब की जलन, पथरी और मूत्र संक्रमण में राहत मिलती है।

3. सूखा पाउडर : 1 चम्मच सूखा पाउडर गुनगुने पानी के साथ रोज लेना शरीर को डिटॉक्स करता है और लीवर को मजबूत बनाता है।

सावधानियाँ —

* लगातार 15–20 दिन सेवन के बाद 5–7 दिन का ब्रेक लेना चाहिए।

* अधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर में ठंडक अधिक बढ़ सकती है।

* गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएँ इसका सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करें।

भूमि आँवला का नियमित सेवन न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है बल्कि लीवर, किडनी और पाचन तंत्र को भी दुरुस्त करता है। यह पौधा वाकई प्रकृति की एक अनमोल देन है, जो बिना किसी साइड इफेक्ट के कई गंभीर बीमारियों से बचाव करता है।

आंवला–चुकंदर मुखवास (Healthy Mouth Freshener | After Meal Digestive)

पिंकी कुंडू

यह एक हेल्दी और प्राकृतिक आफ्टर मील डाइजेस्टिव है, जो दो पोषक तत्वों से भरपूर चीज़ों – आंवला और चुकंदर से बनाया जाता है।

सामग्री (Ingredients)

* आंवला – 12 नग
* चुकंदर – 1 बड़ा
* सौंफ – 2 छोटे चम्मच (भुनी हुई)
* अजवाइन – 1 छोटा चम्मच (भुनी हुई)
* अदरक का रस – 1 टेबलस्पून
* काला नमक – 1 छोटा चम्मच
* पिसी हुई चीनी – 2 टेबलस्पून

बनाने की विधि (Instructions)

1 आंवला तैयार करें आंवले धोकर कद्दूकस कर लें। बीज निकालकर फेंक दें।

2 चुकंदर तैयार करें चुकंदर को धोकर छील लें और कद्दूकस कर लें।

3 मसाला तैयार करें भुनी हुई सौंफ और अजवाइन को दरदरा पीस लें।

4 मिक्स करें एक बड़े बर्तन में कद्दूकस किया आंवला, चुकंदर, अदरक का रस, सौंफ–अजवाइन पाउडर, काला नमक और पिसी हुई चीनी डालें। अच्छी तरह मिलाएँ।

5 सुखाने की प्रक्रिया इस मिश्रण को एक प्लेट में पतला फैलाएँ।

* प्लेट को घर के अंदर ऐसी जगह रखें जहाँ हल्की धूप आती हो।

* अगर बाहर सुखा रहे हों तो प्लेट को मलमल के कपड़े से ढक दें। सीधी तेज़ धूप में न रखें

6 स्टोर करें 3–4 दिन में मिश्रण अच्छी तरह सूख जाएगा।

* पूरी तरह सूखने के बाद इसे एयरटाइट डिब्बे में भरकर रखें।

उपयोग कैसे करें

* खाना खाने के बाद 1–2 चम्मच मुखवास लें

* पाचन बेहतर करता है और मुँह को ताज़गी देता है।

आंवला चटनी रेसिपी

पिंकी कुंडू

सामग्री:

1. आंवला (Amla) – 6-7 (उबले या हल्के स्टीम किए हुए, बीज निकालकर टुकड़ों में कटे)
2. धनिया पत्ता (Coriander leaves) – 1 कप
3. पुदीना पत्ता (Mint leaves) – ½ कप
4. गुड़ (Jaggery) – 1 बड़ा चम्मच (स्वाद अनुसार)
5. अदरक (Ginger) – 1 इंच का टुकड़ा
6. हरी मिर्च (Green chili) – 1-2 (स्वाद अनुसार तीखापन)
7. जीरा (Cumin seeds) – 1 छोटा चम्मच
8. काला नमक (Black salt) – ½ छोटा चम्मच (या स्वाद अनुसार)
9. साधारण नमक – स्वाद अनुसार (वैकल्पिक)
10. थोड़ा पानी – आवश्यकता अनुसार (पेस्ट बनाने के लिए)

विधि:

1. आंवला तैयार करें: आंवले को उबाल लें या स्टीम में 5 मिनट तक पकाएँ, ताकि वे नरम हो जाएँ। फिर बीज निकालकर टुकड़ों में काट लें।

2. मिक्सर में सामग्री डालें: मिक्सर जार में — आंवला, धनिया पत्ता, पुदीना पत्ता, अदरक, हरी मिर्च, जीरा, काला नमक और गुड़ डालें।

3. पानी डालें: 2-3 बड़े चम्मच पानी डालें और सभी चीज़ों को बारीक पीस लें।

4. स्वाद अनुसार समायोजन करें: अगर आपको मीठापन या खट्टापन ज्यादा पसंद है, तो गुड़ या आंवले की मात्रा समायोजित करें।

5. परोसने के लिए तैयार: चटनी को एक कटोरी में निकालें और पराठा, दाल-चावल, या स्नैक्स के साथ परोसें।

टिप्स:

* चटनी को 4-5 दिनों तक फ्रिज में स्टोर किया जा सकता है।

* अगर आप ज्यादा तीखी पसंद करते हैं तो हरी मिर्च की मात्रा बढ़ा सकते हैं।

* स्वाद में गहराई के लिए चाहें तो थोड़ा भुना जीरा पाउडर भी डाल सकते हैं।

यह चटनी खट्टी, मीठी और हल्की तीखी स्वाद का बेहतरीन मिश्रण है — सेहत और स्वाद दोनों के लिए फायदेमंद!

आमला गटागट गोलियाँ

पिंकी कुंडू

सामग्री:

500 ग्राम आमला
250–300 ग्राम चीनी (स्वाद के अनुसार)
1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर
1 छोटा चम्मच काला नमक
1 छोटा चम्मच काला जीरा पाउडर (वैकल्पिक)
छोटा चम्मच अदरक पाउडर (वैकल्पिक)
2–3 बड़े चम्मच चीनी (कोटिंग के लिए)

बनाने की विधि:

1. आमला तैयार करें

1. आमलों को अच्छी तरह धोकर 4–4 टुकड़ों में काट लें।

2. बीज निकाल दें।

3. एक कड़ाही में पानी उबालें और आमला टुकड़ों को 5–7 मिनट उबालें, ताकि हल्के नरम हो जाएँ।

4. पानी छानकर आमलों को पूरी तरह ठंडा होने दें।

2. चाशनी बनाएं

1. एक पैन में 250–300 ग्राम चीनी और कप पानी डालें।

2. चीनी घुलने तक पकाएँ और 1 तार की चाशनी बना लें। (हल्की गाढ़ी लेकिन बहुत ज्यादा नहीं)

3. आमला मिलाएँ

1. इस चाशनी में उबले हुए आमला टुकड़े डालें।

2. मध्यम आंच पर 8–10 मिनट पकाएँ ताकि चाशनी अंदर तक अच्छे से समा जाए।

3. जब आमला हल्का चमकदार दिखने लगे, तब गैस बंद कर दें।

4. मसाला मिलाएँ

1. अब इसमें इलायची पाउडर, काला नमक, काला जीरा पाउडर और अदरक पाउडर डालें।

2. अच्छी तरह मिक्स करें।

3. मिश्रण को पूरी तरह ठंडा होने दें।

5. गटागट गोलियाँ बनाना

1. ठंडे आमला टुकड़ों को 2–3 चम्मच चीनी में टॉस करें ताकि हल्की चीनी कोटिंग आ जाए।

2. अब हर टुकड़े को उँगलियों से हल्का गोल या गोली जैसा आकार दें।

3. इन्हें 4–5 घंटे एयर-ड्राई होने दें।

4. आपकी आमला गटागट गोलियाँ तैयार!

स्टोर कैसे करें? गोलियों को एयरटाइट जार में रखें। 2–3 महीने तक आराम से चल जाएँगी।

टेस्ट कैसा होगा ?

हल्की खटास

मीठा–चटपटा स्वाद

इलायची और काला नमक का मजेदार फ्लेवर

आंवला पाचक - शरीर को अंदर से साफ, हल्का और मज़बूत बनाने वाला एक संतुलित प्राकृतिक पाचन सहायक

पिंकी कुंडू

यह बालों की जड़ों को मज़बूती देता है, त्वचा का निखार वापस लाता है और रोज़मर्रा की पाचन समस्याओं में राहत देता है।

सामग्री

* आंवलाः 1 किलो (बड़े साइज़ का)
* चुकंदरः 4 ताज़े (मीठे होने चाहिए)
* अदरकः 1 से 1.5 इंच का टुकड़ा

मसाला भूनने के लिएः

* सौंफः 1 छोटी चम्मच
* जीराः 1 छोटी चम्मच
* काली मिर्चः 1 छोटी चम्मच

अन्य मसालेः

* पिसा हुआ मसालाः 2 चम्मच
* चाट मसाला पाउडरः 1 टीस्पून भर
* अमचूर पाउडरः 1/2 टीस्पून
* मिश्री/चीनी का पाउडरः 3 टेबलस्पून
* नमकः लगभग 1/2 चम्मच

विधि

* सबसे पहले आंवला और चुकंदर को धोकर बड़े वाले कद्दूकस से कसें ताकि मोटे और एक समान लच्छे बनें।

* चुकंदर मीठा होना ज़रूरी है, वरना पाचक का स्वाद खराब हो जाएगा।

* अदरक को छीलकर बारीक कद्दूकस करें ताकि इसका रस मिश्रण में अच्छे से घुल सके।

* अब एक पैन गर्म करें और उसमें सौंफ, जीरा और काली मिर्च डालें। इन्हें हल्का भूनें, बस इतना कि धुआँ हल्का दिखने लगे। ज़्यादा भूनोगे तो मसाला कड़वा हो जाएगा।

* ठंडा करके इसे ओखली या ग्राइंडर में दरदरा पीस लें।

* अब एक बड़े बर्तन में कद्दूकस किया हुआ आंवला, चुकंदर और अदरक डालें।

* ऊपर से भुना हुआ मसाला, चाट मसाला, अमचूर, मिश्री पाउडर और नमक मिलाएँ।

* तैयार मिश्रण को चौड़े बर्तनों या थालियों में पतली परत में फैलाएँ।

* इसे सिर्फ़ पंखे के नीचे या हल्की धूप में सूखने दें। कड़क धूप में रखोगे तो रंग काला पड़ेगा।

* इसे पूरी तरह सूखकर करारा होना चाहिए, क्योंकि नमी बची तो यह जल्दी खराब होगा।

* जब मिश्रण पूरी तरह सूख जाए, तब इसे एयर-टाइट डिब्बे में भरकर रखें। लीजिए आपका आंवला पाचक (Amla Pachak) तैयार है।

टिप्स

1. आंवला मोटे लच्छे में कद्दूकस करें ताकि सूखने में आसानी हो।

2. चुकंदर मीठा हो, फीका चुकंदर स्वाद बिगाड़ देगा।

3. मसाले को बस हल्का भूनें, ज़्यादा भूनने से कड़वाहट आएगी।

4. मिश्रण को हाथ से ही मिलाएँ, इससे मसाले एक समान मिल जाएंगे।

5. सुखाने में जल्दबाज़ी मत करें, अभी आंवला और चुकंदर नरम रहेगा तो बाद में खराब हो सकता है।

6. कड़क धूप से बचें, इससे पाचक का रंग और स्वाद दोनों बिगड़ते हैं।

7. एयर-टाइट डिब्बे का ढक्कन अच्छी तरह लॉक होना चाहिए।

सर्दियों में रोजाना 1 आंवला खाना क्यों जरूरी है?

जैसे-जैसे सर्दी का मौसम शुरू होता है, मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता और संपूर्ण स्वास्थ्य बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस दिशा में, आमला एक शक्तिशाली सहयोगी के रूप में उभरता है। पोषक तत्वों और औषधीय गुणों से भरपूर, आंवला को अपने दैनिक शीतकालीन आहार में शामिल करने के पांच ठोस कारण यहां दिए गए हैं, जो स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता का पावरहाउस

आंवला अपने असाधारण रूप से उच्च विटामिन सी की मात्रा के लिए प्रसिद्ध है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्दियों के महीनों में, जब संक्रमण और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है, तो आंवले के रोग प्रतिरोधक गुण अमूल्य हो जाते हैं। नियमित सेवन से श्वेत रक्त कोशिकाओं का उत्पादन बढ़ता है, जिससे सर्दी-जुकाम, फ्लू और अन्य मौसमी बीमारियों के खिलाफ शरीर की रक्षा प्रणाली मजबूत होती है।

एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर

विटामिन सी से भरपूर होने के अलावा, आंवला पॉलीफेनॉल और फ्लेवोनोइड्स सहित एंटीऑक्सीडेंट्स का एक शक्तिशाली स्रोत है। ये एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर में फ्री रेडिकल्स से लड़ते हैं, जिससे ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और सूजन कम होती है। हानिकारक अणुओं को निष्क्रिय करके, आंवला कोशिकाओं के स्वास्थ्य में योगदान देता है और पर्यावरणीय तनावों के प्रभाव को कम करने में मदद करता है, जिससे समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

त्वचा और बालों का पोषण

सर्दी के मौसम में पड़ने वाली ठंड और शुष्कता त्वचा और बालों को नुकसान पहुंचा सकती है। आंवला अपने उच्च विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण त्वचा और बालों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है, जो कोलेजन संश्लेषण और त्वचा की लोच में योगदान करते हैं। अपने आहार में आंवला शामिल करने से स्वस्थ त्वचा बनाए रखने और सर्दियों में होने वाली त्वचा संबंधी समस्याओं से निपटने में मदद मिलती है।

अनुकूलनकारी गुण

आंवला एक एडाप्टोजेन है, जो शरीर को तनावों से निपटने और संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। सर्दियों में, जब ठंड और पर्यावरणीय बदलाव जैसे बाहरी तनाव कारक समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं, तो आंवले के एडाप्टोजेनिक गुण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं। नियमित सेवन से शरीर को तनाव से निपटने और सहनशीलता बढ़ाने में मदद मिलती है।

पाचन स्वास्थ्य सहायता

सर्दियों में अक्सर खान-पान की आदतों में बदलाव आता है और लोग भारी और पौष्टिक भोजन की ओर आकर्षित होते हैं। इस मौसम में पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में आंवला महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह फाइबर से भरपूर होता है, जिससे नियमित मल त्याग होता है और कब्ज से बचाव होता है। इसके अलावा, आंवले के प्राकृतिक विषनाशक गुण पाचन तंत्र से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करते हैं, जिससे पाचन क्रिया सुचारु रूप से चलती है।

“न राज-मुकुट का मोह था, न वन का कोई त्रास, पिता के एक वचन हेतु, स्वीकार किया वनवास।”

पिंकी कुंडू

प्रभु श्री राम का वनगमन रामायण का मात्र एक अध्याय नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति का वह पृष्ठ है जहाँ से त्याग एवं समर्पण की परिभाषा आरम्भ होती है। यह घटना सिद्ध करती है कि सिंहासन पर बैठकर तो कोई भी राजा बन सकता है, किन्तु कांटों भरे पथ पर चलकर ही कोई पुरुषोत्तम बनता है। यह पारिवारिक कलह की कथा नहीं, अपितु रघुकुल की कीर्ति और वचन-पालन का सर्वोच्च अनुष्ठान था।

अयोध्या की गलियां उत्सव के रंगों में सराबोर थीं। महाराज दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को युवराज पद सौंपने वाले थे। पूरी प्रजा के नेत्रों में भविष्य को लेकर सुखद स्वप्न तैर रहे थे। किन्तु, नियति ने समय के गर्भ में कुछ और ही छिपा रखा था।

“सजी थी पूरी अवधपुरी, मंगल गीत गाए जा रहे थे,क्या पता था अपनों के ही हाथों, षड्यंत्र रचे जा रहे थे।”

रानी कैकेयी की प्रिय दासी मंथरा की ईर्ष्या ने एक विनाशकारी भूमिका निभाई। मंथरा ने रानी के मन में यह भय बिठा दिया कि राम के राजा बनते ही उनका और भरत का अस्तित्व शून्य हो जाएगा। जो कैकेयी राम पर अपने प्राणों से अधिक स्नेह बरसाती थीं, उनकी बुद्धि पर कुमति का पर्दा पड़ गया। कोप भवन में जाकर उन्होंने महाराज दशरथ को पिछले देवासुर संग्राम के समय दिए गए उन दो वचनों की स्मृति दिलाई, जो आज अयोध्या के भाग्य का निर्णय करने वाले थे।

“जिस जिह्वा पर सरस्वती,
कभी करती थीं विश्राम,
उसी ने आज मांग लिया,
अपने ही सुत का वन-धाम।”

कैकेयी ने निष्ठुरता की पराकाष्ठा पार करते हुए दो वर मांगे - प्रथम, भरत का राज्याभिषेक और द्वितीय, राम को चौदह वर्षों का वनवास। महाराज दशरथ के लिए यह वज्रपात था। एक ओर पुत्र का मोह था, तो दूसरी ओर रघुकुल की वह शाश्वत परंपरा— ₹प्राण जाई पर वचन न जाई।₹ धर्मसंकट में फंसे पिता का हृदय विदीर्ण हो गया, किन्तु वे वचन से बंधे थे।

“धर्म और स्नेह के रण में,
एक पिता का हृदय हार गया,
कुल की रीत निभाने में,
जीवन का सब सुख वार गया।”

जब यह समाचार श्रीराम तक पहुँचा, तो उनकी प्रतिक्रिया ने ही

उन्हें ईश्वरत्व के निकट खड़ा कर दिया। न क्रोध, न प्रश्न, न कोई प्रतिवाद। उन्होंने पिता के वचन और माता की आज्ञा को सिर- माथे लगाया। राजसी वस्त्रों का त्याग कर वल्कल धारण किए। उनका यह त्याग ही वह नींव थी जिस पर रामराज्य का भव्य भवन निर्मित होना था।

“मुस्कुरा कर पी लिया,
जिसने विष का प्याला,
वही राम बना जग में,
मर्यादा का रखवाला।”

श्रीराम के वनगमन में सीता और लक्ष्मण का त्याग भी अतुलनीय है। जनकसुता सीता ने महलों के सुख को तुच्छ मानकर पति के चरणों की छाया को चुना। उधर, भ्राता लक्ष्मण ने सेवाधर्म को सर्वोपरि रखते हुए नींद और चैन का त्याग कर दिया। अयोध्या आंसुओं में डूबी रह गई और तीन तपस्वी वन के कंटीले पथ पर अग्रसर हो गए।

“महलों के सुख शैया को,
तिनके सा जिसने तोड़ा,
धन्य वो वैदेही जिसने,
कभी न पति का साथ छोड़ा।”

लौकिक दृष्टि से यह एक दुखद घटना थी, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से यह अनिवार्य था। यदि राम वन न जाते, तो ऋषियों को अभय कौन देता? रावण के अहंकार का अंत कैसे होता? वनवास की अग्नि में तपकर ही राम का व्यक्तित्व निखरा। उन्होंने संसार को सिखाया कि विपत्ति में धैर्य और सत्ता के मद में विनम्रता कैसे रखी जाती है। प्रभु श्रीराम ने सिखाया कि कैसे सोने सा तपकर ही कुंदन, जग में अनमोल बनता है, कष्टों की भट्ठी में ही तपकर इंसान का चरित्र निखरता है।

पूजाप्रसुन न
अंक ज्योतिष सलाहकार
09599101326, 07303855446

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

दैनिक जीवन में अंकशास्त्र: व्यावहारिक उपयोग और व्यक्तिगत लाभ

संख्याशास्त्र एक ब्रह्मांडीय विज्ञान है, यह केवल भविष्य बताने वाला विज्ञान नहीं है; यह एक व्यावहारिक जीवन उपकरण है जो व्यक्तियों को उनके जीवन को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक ऊर्जाओं को समझने और उनके साथ तालमेल बिठाने में मदद करता है।

मूल रूप से, संख्याशास्त्र संख्याओं, ग्रहों की ऊर्जाओं और मानव व्यवहार के बीच संबंधों का अध्ययन करता है, जिससे यह दैनिक जीवन में निर्णय लेने में अत्यंत उपयोगी साबित होता है।

रोजमर्रा की जिंदगी में, अंक ज्योतिष का उपयोग अक्सर महत्वपूर्ण कार्यों जैसे कि व्यवसाय शुरू करना, समझौते पर हस्ताक्षर करना, विवाह, यात्रा, परीक्षा या किसी नए प्रोजेक्ट को लॉन्च करने के लिए शुभ तिथियों का चयन करने के लिए किया जाता है।

सहायक अंकों के साथ कार्यों को संरेखित करके, व्यक्ति बाधाओं को कम कर सकते हैं और सफलता को बढ़ा सकते हैं।

कई लोग अपने, बच्चों, व्यवसायों या ब्रांडों के लिए नाम चुनने के लिए भी अंक ज्योतिष का उपयोग करते हैं, क्योंकि नामों में ध्वनि कंपन होते हैं जो व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, स्वास्थ्य और अवसरों को सीधे प्रभावित करते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर, अंकशास्त्र व्यक्ति को आत्म-जागरूकता प्राप्त करने में मदद करता है। जन्मतिथि और नाम से प्राप्त अंक व्यक्ति की शक्तियों, कमजोरियों, भावनात्मक आवश्यकताओं और जीवन के अनुभवों को प्रकट करते हैं।

यह समझ व्यक्ति को करियर, रिश्तों और वित्त के क्षेत्र में बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, साथ ही उन आदतों से बचने में भी सहायक होती है जो बार-बार चुनौतियां उत्पन्न करती हैं।

संख्याशास्त्र भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी लाभकारी है। यह आंतरिक संघर्षों, जीवन में होने वाले परिवर्तनों के समय और कर्मिक पाठों की व्याख्या करता है, जिससे व्यक्ति भय के बजाय स्पष्टता के साथ बदलावों को स्वीकार कर पाते हैं।

कुछ सरल दैनिक अभ्यास— जैसे कि शुभ अंकों, रंगों, दिनों या सकारात्मक विचारों का उपयोग— आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में सूक्ष्म सुधार ला सकते हैं।

संक्षेप में, अंकशास्त्र व्यक्तियों को अधिक सचेत और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की शक्ति प्रदान करता है। संख्यात्मक कंपन को समझकर, व्यक्ति जीवन की ऊर्जाओं के विरुद्ध संघर्ष करने के बजाय उनके साथ तालमेल बिठा सकता है, जिससे अंकशास्त्र संतुलित और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए एक मूल्यवान मार्गदर्शक बन जाता है।

“जिसे खोने का डर वह मोह, जिसे खोकर भी आत्मा स्थिर रहे, वह प्रेम”

पिंकी कुंडू

मोह क्या है ? जब कोई अपना दूर चला जाता है , तो मन टूट जाता है। जिंदगी निरर्थक लगती है, बहुत दर्द होता है यही मोह है।
लगभग हर व्यक्ति ने यह दर्द जीया है, जब अपने चले जाते हैं और हम टूट जाते हैं। प्रेमी, पति / पत्नी दूर हो गए। बच्चे बड़े होकर अपने जीवन में व्यस्त हो गए या कोई बहुत अपना अचानक जीवन से निकल गया तब हम कहते हैं कि “इतना दर्द क्यों हो रहा है ?” “मैंने क्या गलती की ?” “भगवान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ?”
लेकिन रामायण बहुत शांति से हमसे पूछती है कि क्या यह दर्द प्रेम का है या मोह के टूटने का ? मोह तब होता है, जब हम किसी इंसान को ‘अपना’ नहीं, बल्कि ‘ज़रूरी’ बना लेते हैं। जब हमारी ख़ुशी, शांति और पहचान किसी और की मौजूदगी पर टिक जाती है। इसलिए जब वह जाता है तो हम रोते हैं, टूट जाते हैं, खुद को खो देते हैं। क्योंकि हमने खुद को उसी के साथ बाँध दिया था। अगर कोई चला जाए और हम उदास हों तो यह स्वाभाविक है, लेकिन अगर कोई चला जाए और हम खुद को खो दें, तो समझ लीजिए —वहाँ प्रेम नहीं, मोह था।
मोह हमें यह झूठ सिखाता है कि “उसके बिना मैं कुछ नहीं”, “मेरी ज़िंदगी उसी से शुरू और उसी पर खत्म होती है”
रामायण कहती है कि जो आपको खुद से दूर कर दे, वह प्रेम नहीं हो सकता।
रामायण में सब कुछ छिनता है, लेकिन कोई टूटता नहीं। राजा दशरथ पुत्र से बिछड़ते हैं। सीता मां राम जी से दूर होती हैं। राम —- राज्य, माता, पत्नी — सब कुछ खोते हैं। लेकिन कहीं भी यह नहीं लिखा कि “अब मैं जी नहीं सकता।”
क्यों ? क्योंकि वहाँ मोह नहीं, धर्म था।
श्रीराम — जिनसे सब छिन गया, फिर भी मन शांत रहा। श्रीराम को

* वनवास मिला।
* पिता जीवित थे, फिर भी दूर थे
* माता रो रही थीं
* राज्य छिन गया
* भविष्य अंधकारमय था।

लेकिन श्रीराम ने यह नहीं कहा कि “मेरे साथ अन्याय हुआ है।” उन्होंने कहा कि “जो घट रहा है, वह धर्म के अनुसार है।”
श्रीराम जानते थे — जो मेरा है, वह मुझसे कोई छीन नहीं सकता और जो छिन गया, वह कभी मेरा था ही नहीं।
सीता माता रामजी के साथ वन जाती हैं। लेकिन ध्यान दीजिए कि उन्होंने कभी नहीं कहा कि “आपके बिना मैं नहीं रह सकती।” उन्होंने कहा कि “जहाँ आपका धर्म है, वहीं मेरा मार्ग है।” यह प्रेम है। मोह नहीं। क्योंकि मोह कहता है कि “मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं।” और प्रेम कहता है कि “तुम जहाँ हो, मैं वहाँ भी स्वयं हूँ।”
भरत को सब कुछ मिल सकता था —सिंहासन, सत्ता, सम्मान, लेकिन भरत ने कहा —“जो धर्म से नहीं मिला, वह मेरा नहीं।” उन्होंने राम से प्रेम किया, लेकिन राम को बाँधना नहीं चाहा। प्रेम पकड़ता नहीं, प्रेम नमन करता है।
कैकेयी — मोह कैसे जीवन जला देता है- कैकेयी ने कुछ भी नया नहीं माँगा। उन्होंने वही माँगा जो उन्हें मिला हुआ था। लेकिन फर्क यह था कि उन्होंने अपने पुत्र को अपना विस्तार मान लिया। पुत्र मोह ने उनकी बुद्धि छीन ली, विवेक जला दिया, अंत में पश्चाताप करने छोड़ दिया।
रामायण चेतावनी देती है कि मोह सबसे पहले सोचने की शक्ति को नष्ट करता है। यह हमारे लिए आईना है। जब आपका

* प्रेमी चला गया — क्या आप उससे प्रेम कर रहे थे या उसे अपनी ज़रूरत बना चुके थे ?
* जब बच्चे दूर हो गए —क्या आपने उन्हें स्वतंत्र आत्मा माना था, या अपनी भावनात्मक पूर्ति का साधन ?
* जब पति / पत्नी अलग हुए —क्या रिश्ता साझेदारी था या पहचान ?

रामायण पूछती है —क्या आपने प्रेम किया था या स्वयं को सौंप दिया था ?
मोह से बाहर कैसे निकलें ?

* प्रेम रखें, लेकिन नियंत्रण नहीं
* संबंध निभाएँ, लेकिन आत्मसम्मान के साथ
* अपने को किसी एक व्यक्ति में न समेटें

रामायणजी कहती हैं कि “जिसे खोने का डर हो, वही मोह है, जिसे खोकर भी आत्मा स्थिर रहे, वही प्रेम है।”
जो चला गया, वह आपको तोड़ने नहीं आया था। वह आपको यह याद दिलाने आया था कि आप अकेले भी पूरे हैं।

शनि महाराज की कृपा प्राप्त करने का सबसे सुगम और सटीक उपाय है, हनुमानजी महाराज की भक्ति

पिंकी कुंडू

आज हम हनुमानजी और शनि महाराज के एक प्रसंग का स्वाध्याय करेंगे, तुलसीदासजी कहते हैं- ₹संकट ते हनुमान छुड़ावें₹ शनि को हम संकट कहते हैं, एक बार हनुमानजी पहाड़ की तलहटी में बैठे थे तभी शनि महाराज हनुमानजी के सिर पर आ गये, हनुमानजी ने सिर खुजाया लगता है कोई कीड़ा आ गया, हनुमानजी ने पूछा तू है कौन ? शनिदेव ने कहां- मैं शनि हूँ, मैं संकट हूँ, हनुमानजी ने कहा मेरे पास क्यो आये हो ? शनि बोले मैं अब आपके सिर पर निवास करूँगा।

हनुमानजी ने कहाँ- अरे भले आदमी, मैंने ही तुझे रावण के बंधन से छुड़वाया था और मेरे ही सिर पर आ गये, बोले हाँ क्यो छुड़ाया था आपने, इसका फल तो आपको भोगना पडेग़ा, अच्छा कितने दिन रहना है ? शनि बोला साढ़े सात साल और अच्छी खातिरदारी हो गयी तो ढाई साल और, हनुमानजी ने कहा भले आदमी किसी और के पास जाओं।

मैं भला श्री रामजी का मजदूर आदमी, सुबह से शाम तक सेवा में लगा रहता हूँ, मुश्किल पड़ जाएगी, तुम भी दुःख भोगेगे और मुझे भी परेशान करोगे, शनिदेव ने कहा मैं तो नही जाऊंगा, हनुमानजी बोले कोई बात नही तुम ऐसे नही मानोगे, हनुमानजी ने एक बहुत बड़ा पत्थर उठाया और अपने सिर पर रखा,

पत्थर शनिदेव के ऊपर आ गया, शनि महाराज बोले यह क्या कर रहे हो ? बोले माँ ने कहा था कि चटनी बनाने के लिए एक बटना ले आना वह ले जा रहा हूँ, हनुमानजी ने जैसे ही पत्थर को उठाकर मचका दिया तो शनि चीं बोलने लगा, दूसरी बार किया तो बोले क्या करते हो ? बोले चिन्ता मत करों, शनिदेव बोले- छोड़ो-छोड़ो, हनुमानजी बोले नहीं अभी तो साढ़े सात मिनट भी नहीं हुये है, तुम्हें तो साढ़े सात साल रहना है।

जब दो-तीन मचके ओर दिये तो शनिदेव तिलमिला गये, शनिदेव ने कहा भैय्या मेरे ऊपर कृपा करो, बोले ऐसी कृपा नही करूँगा, बोले वरदान देकर जाओं, शनि का ही दिन था, हनुमानजी ने कहा कि तुम मेरे भक्तो को सताना बंद करोगे, तब शनि ने कहा कि

हनुमानजी के जो भी भक्त शनिवार को आपका स्मरण करेगा आपके चालीसा का पाठ करेगा मैं उसके यहाँ नही, बल्कि उसके पडोसी के वहाँ भी कभी नही जाऊंगा, उसका संकट दूर हो जायेगा।

फिर शनिदेव ने कहा कि हनुमानजी एक कृपा आप भी मुझ पर कर दीजिये, हनुमानजी बोले क्या? शनिदेव बोले- आपने इतनी ज्यादा मेरी हड्डियां चरमरा दी हैं, इसलिये थोड़ी तेल मालिश हो जाये तो बड़ी कृपा हो जायें, हनुमानजी ने कहा कि ठीक है मैं अपने भक्तो को कहता हूँ कि शनिवार के दिन जो शनिदेव को तेल चढ़ायेंगा उसके संकट मैं स्वयं दूर करूँगा।

दूसरा संकट क्या है ? त्रिताप ही संकट है, दैविक, दैहिक तथा भौतिक ताप यही संकट है और इसकी मुक्ति का साधन क्या है ? केवल भगवान्‌का सुमिरन, ₹राम राज बैठें त्रैलोका, हरषित भये गये सब सोका₹ रामराज कोई शासन की व्यवस्था का नाम नही है, रामराज मानव के स्वभाव की अवस्था का नाम है, समाज की दिव्य अवस्था का नाम है।

आज कहते हैं कि हम राम राज लायेंगे, तो भाई-बहनों फिर राम कहाँ से लायेंगे ? नहीं-नहीं व्यवस्था नहीं, वह अवस्था जिसको राम राज कहते हैं,

रामराज्य की अवस्था क्या है ? ₹सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती₹ यह रामराज्य की अवस्था है, व्यवस्था कैसी भी हो अगर, व्यक्तियों की और समाज की यह अवस्था रहेगी तो शासन में कोई भी बैठो राज्य राम का ही माना जायेगा,

राम मर्यादा है, धर्म है, सत्य है, शील है, सेवा है, समर्पण है, राम किसी व्यक्तित्व का नाम नही है, राम वृत्ति का नाम है, स्वरूप का नाम राम नहीं है बल्कि स्वभाव का नाम राम है, इस स्वभाव के जो भी होंगे वे सब राम ही कहलायेंगे, वेद का, धर्म की मर्यादा का पालन हो, स्वधर्म का पालन हो, यही रामराज्य है।

स्वधर्म का अर्थ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध धर्म का पालन नही है, स्वधर्म का अर्थ है जिस-जिस का जो-जो धर्म है, पिता का पुत्र के प्रति धर्म, पुत्र का पिता के प्रति धर्म, स्वामी का धर्म, सेवक का धर्म, राजा का धर्म, प्रजा का धर्म, पति का धर्म, पत्नी का धर्म, शिक्षक का धर्म, शिष्य का धर्म।

यानी अपने-अपने कर्तव्य का पालन, जैसे सड़क पर अपनी-अपनी लाईन में यदि वाहन चलेंगे तो किसी प्रकार की टकराहट नही होगी, संघर्ष नही होगा और जब आप लाईन तोड़ देंगे जैसे मर्यादा की रेखा जानकीजी ने तोड़ दी थी, आखिर कितने संकट में फँस गयी, कितना बड़ा युद्ध करना पड़ा जानकीजी को छुड़ाने के लियें।

जरा सी मर्यादा का उल्लंघन जीवन को कितने बड़े संकट में फँसा सकता है, जो रामराज्य में रहेगा हनुमानजी उसके पास संकट आने ही नही देंगे, क्योंकि रामराज्य के मुख्य पहरेदार तो श्री हनुमान जी महाराज हैं, तीनों कालों का संकट हनुमान जी से दूर रहता है, संकट होता है- शोक, मोह और भय से, भूतकाल का भय ऐसा क्यों कर दिया, ऐसा कर देता तो मोह होता है।

वर्तमान में जो कुछ सुख साधन आपके पास हैं यह बना रहे, इसको पकड़कर बैठना यह मोह और भय होता है, भविष्यकाल में कोई छीन न ले कोई लूट न ले, भविष्य का भय की मेरा क्या होगा ? भाई-बहनों आपको भविष्य की चिंता छोड देना, क्योंकि, हनुमानजी सब कालों में विधमान हैं, ₹चारों जुग प्रताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा₹ हनुमानजी तो अमर हैं।

चारों युगों में हैं सम्पूर्ण संकट जहाँ छूट जाते हैं शोक, मोह, भय वह है भगवान्‌ श्री रामजी की कथा, कथा में हनुमानजी रहते हैं, अगर वृत्तियाँ न छूटे तो हनुमानजी छुड़ा देंगे, बिल्कुल मानस के अंत में पार्वतीजी ने प्रमाणित किया है, ₹सुनि भुसुंडि के बचन सुहाये, हरषित खगपति पंख फुलाये₹ तीनों संकट अगर दूर चले जाते हैं, या छोड़ देते हैं, मनुष्य को तो वह श्रीराम की कृपा मिल जाती है, और उस कृपा से मोह का नाश होता है,

बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद, होय न दृढ़ अनुराग।।

भगवत कथा, सत्संग यह मोह का नाश करती है, संत-मिलन संत-दर्शन शोक को दूर करता है ₹तोहि दैखि वेग शीतल भई छाती₹ जैसे हनुमानजी मिले तो जानकीजी का हृदय शान्त हो गया, शीतल हो गया, हनुमानजी के प्रति श्रद्धा रखियें, श्रद्धा से भय का नाश होता है, आपके मन में यदि भगवान्‌के प्रति श्रद्धा है तो आप कभी किसी से भयभीत नही होंगे।

।।जय सियाराम जी।।
।।ॐ नमः शिवाय।।

आधी साड़ी के बदले हजारों गज कपड़ा, जाने कर्म का फल कैसे बढ़ता और मिलता हैं

द्रोपदी यमुना स्नान के लिए गई । नहाते समय उसकी दृष्टि कुछ दूर स्नान करते एक साधु पर पड़ी। उनके शरीर पर केवल एक लंगोटी मात्र थी ।दूसरी लंगोटी बदलने के लिए किनारे पर रखी थी। पर हवा का झोंका आया और वह दूसरी लंगोटी उड़कर पानी में बह गई। दुर्भाग्य से भीगी हुई लंगोटी भी पुराने होने के कारण उसी समय फट गई ।तन ढकने में भी अड़चन खड़ी हो गई ।

प्रकाश फैलने लगा था। स्नान करने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। साधु का असमंजस बढ़ा। वह निर्लज्ज बनकर कैसे खड़ा रहे ? उसने कुछ दूर पर उगी एक छोटी सी झाड़ी के नीचे अपने को छिपा लिया। जब रात हो जाए तब अंधेरे में अपने स्थान पर जाने का उसका इरादा था।

द्रोपदी ने यह सारा दृश्य देखा और साधु की कठिनाई को समझा। उसने सहायता करने की बात सोची। उसके पास दूसरी धोती न थी। सो, आधी फाड़ कर अपना शरीर किसी प्रकार ढक लिया और से आधी को लेकर उस झाड़ी के समीप पहुंची जहां निर्वस्त्र साधु छिपा हुआ था।

द्रोपदी बोली– पिताजी ! आपकी कठिनाई को मैंने समझा है। अपनी आधी साड़ी फाड़ कर लाई हूं। इससे आप अपना तन ढकें और घर चले जाएं। आधी से मेरा भी काम चल गया है।
साधु की आंखों में आंसू आ गए। उसने कपड़े के टुकड़े को ले लिया,पहना और घर चला गया। मन ही मन आशीर्वाद देता गया कि, भगवान सदा तुम्हारी लज्जा को ढके रहे।

बात बहुत पुरानी हो गई। द्रोपदी को पांडव जुंए में हार गए। दुशासन उसे भरी सभा में नंगी करने के लिए उतारू हो गया। द्रोपदी के अपशब्दों का बदला लेने के लिए वही सूझ सूझी थी।

द्रोपदी ने इस विकट संकट में भगवान को पुकारा, जो शेष शैया पर सोए थे। नारद ने उन्हें जगाकर कहा -भक्तों की पुकार सुनिए। उसकी सहायता का प्रबंध कीजिए !

उनीदी आंखों से भगवान ने कहा- “ना मैं किसी की सहायता करता हूं, ना हैरानी में डालता हूं। सभी अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं। द्रोपदी का कोई पिछला पुण्य हो तो पता लगाओ। उसके पुण्य होंगे तो बदला मिल जाएगा।”

नारद ने हिसाब की बही देखी, विदित हुआ कि द्रोपदी ने किसी साधु को अपनी आधी साड़ी फाड़ कर दान दी थी। वह टुकड़ा अब ब्याज समेत बढ़ते बढ़ते गट्ठे जितना हो गया है।

भगवान ने कहा -हम किसी के पुण्य का प्रतिफल समय पर क्यों नहीं देंगे ?

गरुड़ पर चढ़कर वस्त्रों का गट्ठा लिए कौरवों की सभा के समीप पहुंचे। दुशासन वस्त्र खींचता गया। भगवान ऊपर से उसकी पूर्ति करते गए। खींचने वाला थक गया। वस्त्र बढ़ता रहा,द्रोपदी की लाज बच गई ।उसे आधी साड़ी के बदले हजारों गज कपड़ा मिल गया ।

तो यदि मनुष्य का स्वयं कुछ किया ना हो, तो स्वयं विधाता भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।

क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण कार्यक्रम को लेकर अपर जिला अधिकारी राजेश कुमार यादव ने ली सिविल डिफेंस की बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा की रविवार को कलेक्ट्रेट स्थित नागरिक सुरक्षा कार्यालय पर क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण को लेकर सिविल डिफेंस के प्रभारी अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश कुमार यादव के नेतृत्व मे बैठक आयोजित की गई जिसमें सिविल डिफेंस में भर्ती अभियान चलाए जाने के लिए कहा गया साथ ही भारत सरकार के द्वारा चलाए जा रहे क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण कार्यक्रम को मथुरा जिले में 360 वार्डन एवं स्वयंसेवको को प्रशिक्षत करना है जिसके लिए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल नागपुर एवं केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ से मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके सिविल डिफेंस मथुरा के मास्टर ट्रेनर ने बताया कि अपर जिला अधिकारी एवं डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल के निर्देशन में नव वर्ष को लेकर 25 दिसम्बर 2025 से 1 जनवरी 2025 को ठाकुर बाके बिहारी जी मन्दिर वृन्दावन में बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा में सिविल डिफेंस मथुरा के वार्डन एवं स्वयंसेवको की ड्यूटी लगाई गई। बैठक में डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल, डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल, पोस्ट वार्डन एवं मास्टर ट्रेनर अशोक यादव, राम सैनी, राम कुमार चौहान, गिरीश वार्ष्णेय, शैलेश खण्डेलवाल, सुनेना, आलोक व्यास, जगदीश, गुलशेर, देवेन्द्र, हेमंत, विनोद, प्रमोद, रोहित, पंकज गर्ग, जितेन्द्र, शैली, शालू, पिंकी शर्मा, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक मौजूद रहे।

देश में एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम की नीव है स्नातक संवाद यात्रा-कृष्णा नन्द पाण्डेय

परिवहन विशेष न्यूज

वाराणसी. धरोहर संरक्षण सेवा संगठन के आयाम केसरिया भारत द्वारा स्नातक संवाद यात्रा के प्रथम पड़ाव का आयोजन संस्कृति सभागार शिवम् इंग्लिश स्कूल रामदत्तपुर पाण्डेयपुर में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता वाराणसी खण्ड स्नातक विधान परिषद प्रत्यासी कृष्णा नन्द पाण्डेय ने कहा कि महँगी शिक्षा से देश के 95% लोग अत्यन्त पीड़ा में जीवन जी रहे हैं जिसका परिणाम आज हम सबके सामने है कि कभी अभिभावक तो कभी छात्र आत्महत्या के लिए बिवस हो रहा है, पूरे देश में जिसका निदान केवल *एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम* के द्वारा ही किया जा सकता है, बेरोजगार स्नातकों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए सरकार द्वारा वर्ष में १०० दिन की रोजगार गारण्टी योजना लागू करना चाहिए, बेरोजगार स्नातकों की व उनके परिवार की सुरक्षा की दृष्टि से सरकार को कम से कम बीस लाख रुपए का दुर्घटना बीमा करवाना चाहिए ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की दुर्घटना के बाद उनके परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके, प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षकों से केवल पठन पाठन का ही कार्य कराया जाए, जन गड़ना से मत गड़ना तक व अन्य कार्य बेरोजगार स्नातकों से करवाना चाहिए, यह एक बड़ी समस्या है जिस पर सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए, सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए धरोहर संरक्षण, केसरिया भारत के कार्यकर्ता विगत कई वर्षों से सड़क पर आवाज उठा रहे हैं, ये आवाज जब सदन में उठेगी तभी इस समस्या का समाधान होगा।

वक्ताओं ने केसरिया भारत के प्रदेश अध्यक्ष गौरिश सिंह ने कहा कि देश में मदरसे पूर्णतया प्रतिबंधित होना चाहिए क्योंकि मुगलों के द्वारा थोपी गई शिक्षा से केवल आतंकवादी व विघटनकारी विचारधारा ही पैदा हो रही है जो राष्ट्र, सनातन संस्कृति घातक है

कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. अभिषेक मिश्र ने किया, संचालन गौरव मिश्र ने किया, समापन श्री हनुमान चालीसा पाठ से हुआ।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से चन्द्रदेव पटेल, राकेश त्रिपाठी, सोनू गोंड, प्रियम मिश्रा, बालगोविंद शर्मा, शुभम पाण्डेय, रामवली पटेल, अशोक पाण्डेय पप्पू, गोविंद जी, सुधीर दीक्षित, सहित गणमान्य युवा उपस्थित रहे।

विश्व के महानतम गणितज्ञों में अग्रणी श्रीनिवास रामानुजन जी की जयंती पर उन्हें शत शत नमन।

पिंकी कुंडू

अपनी असाधारण प्रतिभा, मौलिक शोध और अद्वितीय गणितीय दृष्टि से उन्होंने भारत को विश्व मंच पर गौरवान्वित किया। संख्या सिद्धांत, विश्लेषण और अनंत श्रेणियों में रामानुजन जी का योगदान गणित के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

सीमित संसाधनों में भी असंभव को संभव कर दिखाने वाला उनका जीवन हर युवा के लिए प्रेरणास्रोत है।

राष्ट्रीय गणित दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

रामानुजन जी का चिंतन, साधना और समर्पण सदैव ज्ञान-मार्ग का प्रकाश बना रहेगा।

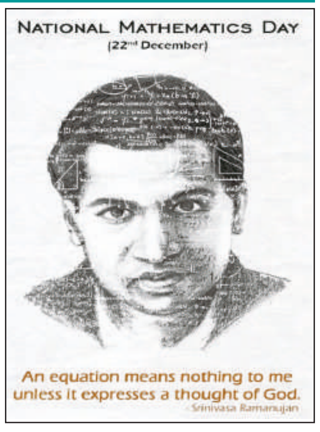

The Man Who Knew Infinity — मानव बुद्धि की अनंत संभावनाओं का प्रतीक।

पोलियो से बचाव हम सबकी जिम्मेदारी: लक्ष्मी कश्यप

मड़यिपारा में पोलियो उन्मूलन की दिशा में अहम पहल
स्वास्थ्य विभाग के तत्वावधान में 180 बच्चों को पिलाई गई पोलियो ड्रॉप

सुनील चिंचोलकर

जगदलपुर, छत्तीसगढ़। महाराणा प्रताप वार्ड मड़यिपारा क्षेत्र में पोलियो उन्मूलन अभियान के तहत बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाई गई। शिविर का शुभारंभ समाजसेविका एवं गूंज वेलफेयर सोसायटी की अध्यक्ष लक्ष्मी कश्यप ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि "पोलियो जैसी गंभीर बीमारी से बच्चों को सुरक्षित रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। समय पर पोलियो ड्रॉप पिलाकर हम अपने भविष्य को स्वस्थ और सुरक्षित बना सकते हैं।"

शिविर के दौरान क्षेत्र के 180 बच्चों को पोलियो ड्रॉप पिलाई गई। अभियान को लेकर स्थानीय नागरिकों एवं अभिभावकों में उत्साह देखा गया। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने घर-घर जागरूकता के माध्यम से लोगों को पोलियो टीकाकरण के महत्व के बारे में जानकारी दी, जिससे अधिक से अधिक बच्चों को इस अभियान से जोड़ा जा सके।

इस अवसर पर एएनएम अनुशा सिंह, मितानिन साधना सिंह, नर्स भूमिका ठाकुर एवं चंचल साहू सहित अस्पताल स्टाफ की सक्रिय सहभागिता रही। सभी ने मिलकर अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में गूंज वेलफेयर सोसायटी की अध्यक्ष लक्ष्मी कश्यप ने स्वास्थ्य कर्मियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे जनहितकारी कार्यक्रम लगातार आयोजित करने की बात कही।

जिला परिषद और ब्लॉक समिति चुनाव में बीजेपी उम्मीदवारों ने अच्छा प्रदर्शन किया- भाजपा नेता

संगरूर, २१ दिसंबर (जगसीर सिंह)- जिला संगरूर-1 में बीजेपी ऑफिस में भाजपा के सीनियर नेताओं में सुनील गोयल, डिंपल राज्य एग्जीक्यूटिव मेंबर बीजेपी पंजाब और सुरेश बेदी, जिला वाइस प्रेसिडेंट भाजपा संगरूर ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि पंजाब में पहली बार भारतीय जनता पार्टी हाईकमान ने जिला परिषद और ब्लॉक समिति चुनाव लड़े हैं, जिसमें संगरूर हलके में भारतीय जनता पार्टी ने दो जिला परिषद, मंगवाल जोन और फग्गूवाला जोन और छह ब्लॉक समिति सीटों पर चुनाव लड़ा है। इन सभी सीटों पर अनुसूचित जाति के उम्मीदवार मैदान में थे। इन दोनों सीटों, मंगवाल जोन और फग्गूवाल जोन और छह ब्लॉक समिति सीटों पर, सभी बीजेपी उम्मीदवारों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। इस मौके पर गोयल और बेदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता कमल के निशान को पोलिंग स्टेशनों तक ले आए हैं, २०२७ के विधानसभा चुनाव के लिए फैसला लोगों को करना है क्योंकि २०२२ के विधानसभा चुनाव में एक मफलर पहने दिल्ली वाले ने हमारे भोले-भाले लोगों को बहला-फुसलाकर सरकार बना ली थी, जिसका खामियाजा लोग आज भी भुगत रहे हैं, इन्हीं वजहों से हमारा पंजाब बहुत पीछे चला गया है, अब लोग समझ गए हैं। अब लोग समझ गए हैं कि जो सरकार केंद्र में है, वही सरकार राज्य में भी होनी चाहिए, जिससे देश और राज्य में ज्यादा विकास हो। इस समय इंप्रूवमेंट ट्रस्ट संगरूर के पूर्व चेयरमैन जोगी राम साहनी, निर्भय सिंह छन्ना और सुरजीत सिंह सिद्धू ने बताया कि बीजेपी से चुनाव लड़ चुके जिला परिषद और ब्लॉक समिति के उम्मीदवार उनके संपर्क में थे। चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की लिस्ट इस तरह है: मंगवाल ज़ोन से प्रदीप सिंह और फग्गूवाल ज़ोन से जगसीर सिंह और ब्लॉक समिति मंगवाल से गुरविंदर सिंह, ब्लॉक समिति फतेहगढ़ छन्ना से अवतार सिंह, ब्लॉक समिति अकोई साहिब से लाल सिंह, ब्लॉक समिति लाडी से कुलविंदर कौर, ब्लॉक समिति गहला से रंजीत कौर, ब्लॉक समिति भट्टीवाल से किरण बाला ये सभी बीजेपी के उम्मीदवार थे। इस समय सतपाल सिंह अकोई साहिब, वर्मा जी तथा और भाजपा नेता मौजूद थे।

शादी और तलाक-पवित्र बंधन से कानूनी संघर्ष तक की यात्रा- फटाफट तलाक-राहत या जल्दबाजी ?-एक समग्र विश्लेषण

हजारों दंपति, वर्षों तक अदालतों के चक्कर काटते रहते हैं, रिश्तों की भावनात्मक पीड़ा कानूनी तारीखों, वकीलों की फीस और सामाजिक दबावों में और गहरी हो जाती है–

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत में शादी भारतीय समाज में केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों, दो संस्कृतियों और दो जीवन-दृष्टियों का पवित्र मिलन मानी जाती रही है। इसे सात जन्मों का बंधन, संस्कार और धर्म से जोड़कर देखा गया है।इसी कारण तलाक शब्द आज भी भारतीय सामाजिक मानस में दुख, असफलता और विघटन का प्रतीक माना जाता है।परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि आधुनिक जीवन की जटिलताओं, बदलती सामाजिक संरचना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती चेतना ने इस पवित्र संस्था की परिभाषा को चुनौती दी है। आज तलाक केवल व्यक्तिगत संबंधों का अंत नहीं, बल्कि एक लंबी, थकाने वाली और मानसिक रूप से पीड़ादायक कानूनी प्रक्रिया बन चुका है, विशेषकर तब जब मामला फैमिली कोर्ट के लंबे चक्रव्यूह में फँस जाता है।

साथियों बात अगर हम भारतीय फैमिली, सुप्रीम और हाई कोर्ट, जहाँ रिश्ते फाइलों में बदल जाते हैं इसको समझने की करें तो, भारत में फैमिली कोर्ट की स्थापना का उद्देश्य वैवाहिक विवादों का त्वरित, संवेदनशील और सुलह-आधारित समाधान था। लेकिन व्यावहारिक स्थिति यह है कि हजारों दंपति वर्षों तक अदालतों के चक्कर काटते रहते हैं। रिश्तों की भावनात्मक पीड़ा कानूनी तारीखों, वकीलों की फीस और सामाजिक दबावों में और गहरी हो जाती है। तलाक की प्रक्रिया कई बार उस पीड़ा को बढ़ा देती है, जिससे निकलने के लिए पक्ष अदालत पहुँचे होते हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या कानून वास्तव में टूट चुके रिश्तों को जोड़ने का माध्यम बन रहा है या केवल समय की औपचारिकता निभा रहा है।न्यायिक दृष्टिकोण में बदलाव-सुप्रीम कोर्ट से हाई कोर्ट तक पिछले कुछ वर्षों में भारतीय न्यायपालिका ने वैवाहिक विवादों को देखने के अपने दृष्टिकोण में एक उल्लेखनीय परिवर्तन किया है।सुप्रीम कोर्ट ने यह स्वीकार किया है कि हर विवाह को बचाया जाना न तो संभव है और न ही आवश्यक।यदि विवाह भावनात्मक मानसिक या सामाजिक रूप से पूरी तरह टूट चुका है, तो उसे कृत्रिम रूप से जीवित रखना दोनों पक्षों के साथ अन्याय हो सकता है।इसी क्रम में 17 दिसंबर को दिल्ली हाईकोर्ट का शिक्षा कुमारी बनाम संतोष कुमार निर्णय एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनकर उभरा है।दिल्ली हाई कोर्ट का ऐतिहासिक स्पष्टिकरण-दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के तहत म्यूचुअल कंसेंट डिवोर्स के लिए एक वर्ष तक अलग रहने की शर्त अनिवार्य नहीं है, यदि दोनों पक्ष पूर्ण सहमति में हों। कोर्ट ने कहा कि यह शर्त कानून की आत्मा नहीं, बल्कि प्रक्रिया का एक हिस्सा है, जिसे उपयुक्त मामलों में वेव किया जा सकता है। यह निर्णय केवल एक कानूनी तकनीकी स्पष्टिकरण नहीं, बल्कि वैवाहिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत गरिमा की दिशा में एक बड़ा कदम है।

साथियों बात अगर हम फटाफट तलाक-राहत या जल्दबाजी ? इसको समझने की करें तो फटाफट तलाक शब्द सुनते ही समाज में मिश्रित प्रतिक्रियाएँ सामने आती हैं। कुछ इसे विवाह संस्था के पतन के रूप में देखते हैं, जबकि कुछ के लिए यह जीवन में नई शुरुआत का अवसर है। विशेष रूप से वे लोग जो टॉक्सिक, हिंसक या मानसिक रूप से दमनकारी रिश्तों में फँसे होते हैं, उनके लिए लंबे कानूनी इंतजार किसी अतिरिक्त सजा से कम नहीं होता। ऐसे मामलों में एक साल अलग रहने और फिर छह महीने के कूलिंग-ऑफ पीरियड की अनिवार्यता पीड़ितों के लिए राहत नहीं, बल्कि पीड़ा को लंबा करने का साधन बन जाती है।

साथियों बात अगर हम बच्चों के दृष्टिकोण से तलाक की प्रक्रिया को समझने की करें तो, जब दंपति के बीच विवाद में बच्चे शामिल होते हैं, तब मामला और भी संवेदनशील हो जाता है। लंबे समय तक चलने वाली कोर्ट- कचहरी बच्चों के मानसिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती है। घरेलू तनाव, माता-पिता के बीच टकराव और अनिश्चित भविष्य बच्चों में असुरक्षा की भावना पैदा करता है। ऐसे में यदि आपसी सहमति से तलाक जल्दी और सम्मानजनक तरीके से हो जाए, तो बच्चों को उस संघर्ष से बचाया जा सकता है। इस दृष्टि से फटाफट तलाक कई परिवारों के लिए व्यावहारिक समाधान बनकर उभरता है।

साथियों बात अगर हम म्यूचुअल कंसेंट डिवोर्स, कानून क्या कहता है इसको समझने की करें तो, हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13B के अंतर्गत म्यूचुअल कंसेंट डिवोर्स का प्रावधान किया गया है। इसके तहत दोनों पति-पत्नी यदि यह मानते हैं कि वे साथ नहीं रह सकते, तो आपसी सहमति से तलाक ले सकते हैं। धारा 13B (2) में पहले एक वर्ष अलग- अलग रहने की शर्त और उसके बाद छह महीने का कूलिंग-ऑफ पीरियड निर्धारित किया गया है। इसका उद्देश्य यह था कि जल्दबाजी में लिया गया कोई फैसला भविष्य में पछतावे का कारण न बने और पक्षों को पुनर्विचार का अवसर मिले।कूलिंग-ऑफ पीरियडः उद्देश्य और वास्तविकता सिद्धांत रूप में कूलिंग-ऑफ पीरियड एक सकारात्मक अवधारणा है। यह माना गया कि समय मिलने पर पति- पत्नी अपने गुस्से, भावनात्मक उथल-पुथल से बाहर आकर सुलह कर सकते हैं। लेकिन व्यवहार में यह अवधि कई मामलों में केवल औपचारिकता बनकर रह गई। जिन दंपतियों ने वर्षों तक संघर्ष झेला होता है, उनके लिए छह महीने का अतिरिक्त इंतजार किसी समाधान की बजाय मानसिक बोझ बन जाता है। यही कारण है कि अदालतों ने इस अवधि की अनिवार्यता पर पुनर्विचार शुरू किया। सुप्रीम कोर्ट का 2017 का ऐतिहासिक फैसलाअमरदीप सिंह बनाम हरवीन कौर (2017) मामले में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि धारा 13B (2)का छह महीने का कूलिंग -ऑफ पीरियड मैंडेटरी नहीं, बल्कि डायरेक्टरी है। यदि अदालत को यह प्रतीत होता है कि विवाह पूरी तरह टूट चुका है, सुलह की कोई संभावना नहीं बची है और दोनों पक्ष सभी मुद्दों, जैसे गुजारा भत्ता, बच्चों की कस्टडी पर सहमत हैं, तो यह अवधि माफ की जा सकती है। यह निर्णय न्यायपालिका की मानवीय दृष्टि और व्यावहारिक समझ को दर्शाता है।

साथियों बात अगर हम अनुच्छेद 142 और न्यायिक विवेक इसको समझने की करें तो, सुप्रीम कोर्ट ने यहशक्ति अनुच्छेद 142 के तहत प्रयोग की, जो उसे पूर्ण न्याय करने का अधिकार देता है। इस अनुच्छेद के माध्यम से कोर्ट कानून की कठोरता से ऊपर उठकर न्याय की भावना को प्राथमिकता देता है। तलाक के मामलों में इसका प्रयोग यह दर्शाता है कि अदालतें अब विवाह को केवल एक कानूनी अनुबंध नहीं, बल्कि एक जीवंत मानवीय संबंध मानकर देख रही हैं, जिसकी मृत्यु को भी सम्मान और संवेदनशीलता के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए।

साथियों बात अगर हम दिल्ली हाई कोर्ट का फैसला- सुप्रीम कोर्ट की सोच का विस्तार इसको समझने की करें तो, दिल्ली हाई कोर्ट का 17 दिसंबर का निर्णय सुप्रीम कोर्ट की इसी न्यायिक सोच का विस्तार है। हाई कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यदि दोनों पक्ष आपसी सहमति से तलाक चाहते हैं, तो एक वर्ष अलग रहने की शर्त को भी माफ किया जा सकता है। यह फैसला न केवल कानून की व्याख्या को स्पष्ट करता है, बल्कि फैमिली कोर्ट्स के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत भी प्रस्तुत करता है।

साथियों बात कर हम इस संपूर्ण विषय को वैश्विक परिप्रेक्ष्यमें क़ि दुनियाँ तलाक को कैसे देखती है इसको समझने की करें तो, अंतरराष्ट्रीय स्तरपर देखें तो कई विकसित देशों में नो-फॉल्ट डिवोर्स की अवधारणा लागू है।
अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और कई यूरोपीय देशों में यदि दोनों पक्ष सहमत हों, तो तलाक की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल और त्वरित होती है। वहाँ अदालतें यह मानती हैं कि यदि दो वयस्क व्यक्ति साथ नहीं रहना चाहते, तो राज्य को उन्हें जबरन बाँधकर रखने का अधिकार नहीं है। भारत में हालिया न्यायिक रुझान इसी वैश्विक सोच के अनुरूप दिखाई देता है।संविधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विवाह, भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है। सुप्रीम कोर्ट ने समय-समय पर इसकी व्याख्या करते हुए इसमें गरिमा के साथ जीने काअधिकार जोड़ा है। यदि कोई विवाह व्यक्ति की गरिमा, मानसिक शांति और आत्मसम्मान को नष्ट कर रहा है, तो उससे बाहर निकलने का अधिकार भी इसी अनुच्छेद की आत्मा से जुड़ा हुआ है। म्यूचुअल डिवोर्स को सरल बनाना इसी संवैधानिक दृष्टिकोण का व्यावहारिक रूप है।क्या फटाफट तलाक से विवाह संस्था कमजोर होगी ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। आलोचकों का तर्क है कि तलाक को आसान बनाने से लोग विवाह को हल्के में लेने लगेंगे। लेकिन इसके विपरीत तर्क यह है कि मजबूरी में निभाए जा रहे रिश्ते विवाह संस्था को मजबूत नहीं, बल्कि खोखला बनाते हैं। सम्मानपूर्वक अलग होने की सुविधा विवाह को डर का नहीं, बल्कि विकल्प का संबंध बनाती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि मानवीय कानून की ओर बढ़ता भारत, दिल्ली हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्णय यह संकेत देते हैं कि भारतीय न्यायपालिका अब वैवाहिक विवादों को केवल कानूनी तकनीक से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना और संवैधानिक मूल्यों के साथ देख रही है। फटाफट तलाक का अर्थ विवाह के प्रति उदासीनता नहीं, बल्कि टूट चुके रिश्तों को सम्मानजनक अंत देने की कोशिश है। यदि यह प्रवृत्ति संतुलन और विवेक के साथ आगे बढ़ती है, तो यह न केवल पीड़ितों के लिए राहत बनेगी, बल्कि न्याय प्रणाली की विश्वसनीयता को भी सुदृढ़ करेगी।

अनंत के स्वामी: रामानुजन और गणित का अविचल दीप

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जब मानवीय चेतना अपनी सीमाओं को लाँघकर अनंत से संवाद करने लगती है, तब इतिहास ऐसे महामानव को जन्म देता है जो गणित को केवल गणना नहीं, बल्कि साधना, दर्शन और आत्मानुभूति का शिखर बना देता है। ऐसे ही संख्याओं के द्रष्टा थे श्रीनिवास रामानुजन—सूत्रों के तपस्वी और अनदेखे सत्य के उद्घोषक। 22 दिसंबर उस दिव्य अवसर का स्मरण कराता है जब भारत की धरती पर ऐसी विलक्षण प्रतिभा का अवतरण हुआ, जिसने यह सिद्ध कर दिया कि मानवीय मस्तिष्क की कोई सीमा नहीं होती, उसकी संभावनाएँ अनंत होती हैं। रामानुजन केवल गणितज्ञ नहीं थे; वे संख्याओं के द्रष्टा थे—ऐसे द्रष्टा जिन्होंने अनंत को केवल अनुभूत ही नहीं किया, बल्कि उसे सूत्रों, प्रतीकों और विचारों के माध्यम से संपूर्ण मानवता के लिए साकार कर दिया।

रामानुजन का जीवन इस सत्य का जीवंत प्रमाण है कि प्रतिभा सुविधाओं की दासी नहीं होती। तमिलनाडु के इरोड नगर में जन्मे उस बालक के पास न धन था, न प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान, न ही कोई अकादमिक संरक्षण। फिर भी उसके भीतर एक ऐसी अग्नि जल रही थी, जो किसी भी बाधा से बुझने वाली नहीं थी। आर्थिक तंगी, सामाजिक सीमाएँ और औपचारिक शिक्षा की कमी—ये सब उसके मार्ग की कठिनाइयाँ थीं, पर उसकी जिज्ञासा, उसका विश्वास और उसकी एकाग्रता उससे कहीं अधिक प्रबल थे। जहाँ सामान्य मनुष्य परिस्थितियों के आगे झुक जाता है, वहीं रामानुजन ने परिस्थितियों को अपने सामने झुकने पर विवश कर दिया।

बचपन से ही संख्याएँ उनके लिए मात्र अंक नहीं थीं। वे उनके मित्र थीं, उनके स्वप्न थीं, उनका संसार थीं। जहाँ अन्य बच्चे खेल-कूद में मग्न रहते, वहीं रामानुजन संख्याओं की आंतरिक संरचना को समझने में लीन रहते। स्कूल की गणित उनके लिए शीघ्र ही अपर्याप्त सिद्ध हुई, और उन्होंने स्वयं ज्ञान की खोज आरंभ की। पंद्रह वर्ष की आयु में जब उन्हें जी. एस. कार की प्रसिद्ध गणितीय पुस्तक प्राप्त हुई, तो वह उनके लिए केवल पुस्तक नहीं रही—वह उनके जीवन का मार्गदर्शक ग्रंथ बन गई। उसी क्षण से उनकी नोटबुक्स में ऐसे सूत्र उतरने लगे, जिन्हें समझने में विश्व को आने वाले दशकों तक संघर्ष करना पड़ा।

रामानुजन के लिए गणित एक आध्यात्मिक अनुभूति थी। वे मानते थे कि उनके सूत्र किसी बौद्धिक प्रयास का परिणाम नहीं, बल्कि ईश्वरीय अनुकंपा का प्रसाद हैं। उनकी कुलदेवी नमगिरि उनके लिए प्रेरणा का स्रोत थीं। वे गणित और ईश्वर को अलग-अलग नहीं देखते थे; उनके लिए दोनों एक ही सत्य के दो रूप थे। अनंत श्रेणियाँ, निरंतर भिन्न, विभाजन फलन, मॉड्यूलर समीकरण और मॉक थीटा फलन—ये सब उनके लिए केवल गणितीय संरचनाएँ नहीं थीं, बल्कि ब्रह्मांड की उस भाषा के अक्षर थे, जिनमें सृष्टि स्वयं संवाद करती है। π (पाई) के लिए दी गई उनकी श्रृंखलाएँ आज भी आधुनिक गणना प्रणालियों का आधार हैं, और उनके सिद्धांत आधुनिक भौतिकी से लेकर ब्रह्मांड विज्ञान तक में प्रयुक्त हो रहे हैं।

1913 में लिखा गया उनका पत्र गणित के इतिहास की दिशा बदल देने वाला सिद्ध हुआ। जब यह पत्र कैम्ब्रिज के महान गणितज्ञ जी. एच. हार्डी के हाथ लगा, तो वे पहले चकित हुए, फिर विस्मित और अंततः नतमस्तक। दर्जनों मौलिक सूत्रों से भरे उस पत्र ने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रतिभा किसी भौगोलिक सीमा की मोहताज नहीं होती। कैम्ब्रिज में हार्डी और रामानुजन की जोड़ी ने संख्या सिद्धांत को नई ऊँचाइयाँ दीं। हार्डी–रामानुजन सूत्र आज भी गणित की आधारशिला माने जाते हैं। स्वयं हार्डी ने स्वीकार किया कि रामानुजन जैसी प्रतिभा जीवन में एक बार मिलती है—या शायद कभी नहीं।

रामानुजन की नोटबुक्स केवल काग़ज़ों का संग्रह नहीं, बल्कि गणित के भविष्य का उद्घोष हैं। उनमें संचित हजारों सूत्र इस सत्य की साक्षी हैं कि उनकी दृष्टि अपने युग की सीमाओं से बहुत आगे तक पहुँच चुकी थी। उनकी मॉक थीटा फलन जैसी गूढ़ अवधारणाएँ इक्कीसवीं सदी में जाकर अपनी सम्पूर्ण अर्थवत्ता में समझी जा सकीं, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि रामानुजन किसी एक कालखंड के गणितज्ञ नहीं थे। वे गणित के आने वाले युगों के शिल्पकार थे—ऐसे दूरदर्शी जिनका सृजन समय से आगे चल रहा था। उनका कार्य आज भी विश्वभर के शोधकर्ताओं को नई दिशाएँ प्रदान करता है और यह सिद्ध करता है कि सच्ची प्रतिभा घड़ी की सुइयों से नहीं बँधती, वह समय को स्वयं दिशा देती है।

इसी असाधारण योगदान के सम्मान में 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस घोषित किया गया। यह निर्णय केवल एक महान व्यक्ति को सम्मान देने का औपचारिक कार्य नहीं, बल्कि उस दृष्टिकोण का सार्वजनिक स्वीकार है जो गणित को भय का विषय नहीं, बल्कि संभावनाओं का संसार मानता है। यह दिन विद्यार्थियों को यह संदेश देता है कि गणित याद करने का नहीं, बल्कि सोचने, प्रश्न करने और खोजने का विषय है। रामानुजन का जीवन हमें सिखाता है कि साधन सीमित हो सकते हैं, परिस्थितियाँ कठिन हो सकती हैं, किंतु यदि संकल्प असीम हो, तो असंभव जैसा कुछ भी नहीं रह जाता।

आज, 22 दिसंबर को, जब हम श्रीनिवास रामानुजन की जयंती का स्मरण करते हैं, तब हम केवल एक महान गणितज्ञ को याद नहीं करते—हम उस चेतना को नमन करते हैं जिसने संख्याओं को आत्मा दी। हम उस अनंत दीप के सम्मुख नतमस्तक होते हैं, जो गणित के मंदिर में युगों से प्रज्वलित है और युगों तक प्रज्वलित रहेगा। समय बदलेगा, सिद्धांत विकसित होंगे, तकनीक नई ऊँचाइयों को छुएगी, किंतु रामानुजन की साधना, उनका तेज और उनकी प्रेरणा कभी क्षीण नहीं होगी। जब तक संख्याएँ जीवित रहेंगी, जब तक समीकरण गूँजते रहेंगे, श्रीनिवास रामानुजन अमर रहेंगे—अनंत को स्पर्श कर उसे संपूर्ण मानवता को अर्पित करने वाले महामानव के रूप में।

बचपन पर बोझ नहीं, संरक्षण चाहिए: हमारी सामाजिक होड़ और बच्चों का स्वास्थ्य

- डॉ. प्रियंका सौरभ

हाल ही में 10 वर्षीय एक बच्चे की अचानक मृत्यु से जुड़ा समाचार केवल एक दुखद घटना नहीं है, बल्कि हमारे समय की सबसे गंभीर सामाजिक विडंबना का संकेत है। चिकित्सकों द्वारा बताए गए संभावित कारण—अधूरी नींद, बिना नाश्ता स्कूल जाना, भारी स्कूल बैग, होमवर्क और प्रदर्शन का मानसिक दबाव, समय पर व पौष्टिक भोजन का अभाव—एक ऐसे तंत्र की ओर इशारा करते हैं, जिसमें बचपन लगातार कुचला जा रहा है। यह घटना हमें यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि क्या हम बच्चों को बेहतर भविष्य देने की कोशिश में उनका वर्तमान छीन रहे हैं।

आज का समाज उपलब्धियों की अंधी दौड़ में फँसा हुआ है। अभिभावक, शिक्षक और संस्थाएँ—सभी किसी न किसी रूप में प्रतिस्पर्धा को जीवन का मूल मंत्र मान बैठे हैं। इस प्रतिस्पर्धा का सबसे कमजोर शिकार वे बच्चे हैं, जिनकी उम्र अभी खेलने, सीखने और सहज विकास की है। चार-पाँच साल की उम्र में जब बच्चा दुनिया को समझना शुरू करता है, तब उससे अपेक्षा की जाती है कि वह तय समय पर उठे, तय पाठ्यक्रम पूरा करे, परीक्षा में अव्वल आए और भविष्य की दिशा अभी से तय कर ले। यह सोच न केवल अवैज्ञानिक है, बल्कि अमानवीय भी है।

बाल मनोविज्ञान स्पष्ट रूप से बताता है कि शुरुआती वर्षों में बच्चे का मस्तिष्क सबसे अधिक लचीला और संवेदनशील होता है। इस दौर में उस पर डाला गया दबाव उसके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ता है। नींद की कमी, तनाव और भय की स्थिति में सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है। फिर भी, हम सुबह कच्ची नींद में बच्चों को जगाते हैं, उन्हें बिना नाश्ता कराए स्कूल भेज देते हैं और उनसे उम्मीद करते हैं कि वे पूरे दिन सक्रिय और एकाग्र रहेंगे। यह उम्मीद वास्तविकता से कोसों दूर है।

भारी स्कूल बैग वर्षों से चर्चा का विषय रहे हैं। सरकारी दिशा-निर्देश और न्यायालयों के आदेशों के बावजूद, आज भी छोटे बच्चे अपने वजन से अधिक बोझ कंधों पर ढोते दिखाई देते हैं। यह केवल शारीरिक समस्या नहीं है; यह मानसिक संदेश भी देता है कि शिक्षा एक बोझ है। आनंद नहीं। जब शिक्षा बोझ बन जाती है, तो बच्चे के मन में सीखने के प्रति स्वाभाविक जिज्ञासा धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

होमवर्क और परीक्षा का दबाव इस समस्या को और गहरा करता है। होमवर्क का उद्देश्य कक्षा में सीखी गई बातों को दोहराना और समझ को मजबूत करना होना चाहिए, न कि बच्चे को भयभीत करना। लेकिन व्यवहार में होमवर्क अक्सर दंड का रूप ले लेता है। अधूरा रहने पर डाँट, सजा और तुलना—ये सब बच्चे के आत्मसम्मान को चोट पहुँचाते हैं। वह सीखने के बजाय गलती से डरने लगता है, और यही डर आगे चलकर तनाव, चिंता और अवसाद का कारण बनता है।

भोजन और दिनचर्या भी बच्चों के स्वास्थ्य में अहम भूमिका निभाते हैं। स्कूल में समय पर और पौष्टिक भोजन न मिलना, ठंडा लंच खाने की मजबूरी, और घर लौटते ही बिना आराम नहाने व पढ़ने का दबाव—यह सब बच्चे के शरीर की प्राकृतिक जरूरतों की अनदेखी है। शरीर और मन को विश्राम की आवश्यकता होती है। बिना विश्राम के लगातार गतिविधि बच्चे की सहनशीलता को तोड़ देती है।

यह सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम बच्चों से आखिर चाहते क्या हैं। क्या हम उन्हें खुश, स्वस्थ और संवेदनशील इंसान बनाना चाहते हैं, या केवल अंक और पदवी हासिल करने वाली मशीन? जब अभिभावक अपने बच्चे को दूसरों से तुलना करते हैं—"फलाँ का बच्चा यह कर रहा है, तुम क्यों नहीं"—तो वे अनजाने में उसके मन में हीन भावना भर देते हैं। यह तुलना सामाजिक होड़ को जन्म देती है, जिसमें हर कोई आगे निकलने की कोशिश करता है, चाहे उसकी कीमत बच्चे का बचपन ही क्यों न हो।

शिक्षा व्यवस्था को भी इस संदर्भ में आत्ममंथन करना होगा। स्कूल केवल पाठ्यक्रम पूरा करने की फैक्ट्री नहीं हैं; वे समाज निर्माण की प्रयोगशालाएँ हैं। यदि स्कूलों में खेल, कला, संवाद और रचनात्मक गतिविधियों के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, तो शिक्षा अधूरी है। शिक्षक बच्चों के लिए केवल ज्ञानदाता नहीं, मार्गदर्शक और संरक्षक भी होते हैं। अनुशासन के नाम पर भय का वातावरण बनाना शिक्षा के मूल उद्देश्य के विपरीत है।

नीतिगत स्तर पर सरकार और प्रशासन की भूमिका भी अहम है। स्कूल बैग का वजन, स्कूल समय, होमवर्क की मात्रा और प्रारंभिक कक्षाओं में परीक्षा प्रणाली—इन सब पर स्पष्ट और सख्त दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है। साथ ही, इन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी निगरानी तंत्र भी होना चाहिए। बच्चों के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, काउंसलिंग सेवाएँ और पोषण कार्यक्रम शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनने चाहिए।

अभिभावकों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न आत्मचिंतन का है। अपनी शिक्षा-यात्रा को याद करना जरूरी है—हमने कब स्कूल जाना शुरू किया, कैसे सीखा, कितनी जगह खेल और मित्रता को मिली। क्या हम सचमुच आज के बच्चों से अधिक सक्षम थे, या हमें सीखने के लिए अधिक समय और स्वतंत्रता मिली थी? यदि हमने संघर्ष किया और आगे बढ़े, तो यह मान लेना कि हमारे बच्चे भी वही रास्ता अपनाएँ, जरूरी नहीं। हर पीढ़ी की चुनौतियाँ और जरूरतें अलग होती हैं।

यह भी समझना होगा कि सफलता का अर्थ केवल ऊँचा पद या अधिक वेतन नहीं है। एक संतुलित, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनना भी सफलता है। यदि बच्चा मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है, तो उसकी उपलब्धियाँ खोखली हैं। समाज को यह स्वीकार करना होगा कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता—उसकी रुचियाँ, क्षमताएँ और गति अलग-अलग होती हैं। शिक्षा का उद्देश्य इन भिन्नताओं को सम्मान देना होना चाहिए, न कि उन्हें कुचल देना।

मीडिया और सामाजिक विमर्श की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। जब केवल टॉपर्स, रैंक और रिकॉर्ड की बातें होती हैं, तो अप्रत्यक्ष रूप से दबाव का माहौल बनता है। हमें उन कहानियों को भी जगह देनी चाहिए, जहाँ बच्चों ने खेल, कला, सेवा और मानवीय मूल्यों के माध्यम से जीवन को अर्थ दिया। इससे समाज का दृष्टिकोण संतुलित होगा।

अंततः, यह प्रश्न हमारे सामने खड़ा है—क्या हम सचमुच बच्चों का भविष्य संवार रहे हैं, या अपने अहंकार और असुरक्षा को उनके कंधों पर लाद रहे हैं? यदि किसी उपलब्धि की कीमत बच्चे की सेहत, मुस्कान और जीवन है, तो वह उपलब्धि नहीं, विफलता है। बच्चों को दया नहीं, अधिकार चाहिए—आराम का, खेलने का, गलती करने का और अपनी गति से बढ़ने का। अब समय आ गया है कि हम होड़ से हटकर संवेदना को चुनें। शिक्षा को भय से मुक्त करें, बचपन को बोझ नहीं, संरक्षण दें। क्योंकि स्वस्थ बचपन से ही स्वस्थ समाज की नींव होती है, और यदि नींव ही कमजोर होगी, तो भविष्य की इमारत कितनी भी ऊँची क्यों न हो, टिक नहीं पाएगी।

राष्ट्रीय गणित दिवस: प्रेरणा, नवाचार और सीख

-सुनील कुमार महला

हर वर्ष २२ दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिन महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती के रूप में मनाया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि श्रीनिवास रामानुजन का परिवार सरल और पारंपरिक दक्षिण भारतीय पृष्ठभूमि का था। उनके पिता के. श्रीनिवास एक सरकारी कर्मचारी थे और माता रामाइय्या गृहिणी थीं। उनके दो बहनें और एक भाई थे तथा रामानुजन का जन्म २२ दिसंबर 1887 को इरोड, तमिलनाडु में हुआ था। परिवार धार्मिक और अनुशासित था, और बचपन में रामानुजन ने माता-पिता से नैतिक और धार्मिक शिक्षा प्राप्त की, जिसने उनके व्यक्तित्व और मानसिक अनुशासन को मजबूत किया। परिवार ने उन्हें शिक्षा और गणित में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, और उनकी मां का धार्मिक दृष्टिकोण उनके जीवन और कार्यों पर गहरा प्रभाव डाला। रामानुजन ने कुंभकोणम के सरकारी कॉलेज में पढ़ाई की थी, लेकिन गैर-गणितीय विषयों में उनकी रुचि नहीं थी और यही कारण था कि वे १२वीं की परीक्षा में फेल हो गए थे। जिस स्कूल में वो १२वीं में दो बार फेल हुए आज उसका नाम रामानुजन के नाम पर है। जानकारी मिलती है कि उन्होंने मात्र १२ साल की उम्र में त्रिकोणमिति में महारत हासिल कर ली थी। उन्होंने कई प्रमेय (थ्योरम्स) विकसित कीं तथा कई फॉर्मूले ईजाद किए। उनके इस कमाल से दुनियाभर के गणितज्ञ हैरान रह गए थे। वर्ष 1912 में उन्होंने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क के पद पर काम करना शुरू कर दिया। यहां उनकी गणित की प्रतिभा को उनके साथियों ने पहचाना और उन्हें कैंब्रिज यूनिवर्सिटी, ट्रिनिटी कॉलेज में रैफर कर दिया। दूसरा विश्व युद्ध शुरू होने से कुछ महीने पहले रामानुजन ने ट्रिनिटी कॉलेज ज्वॉइन कर लिया था तथा 1916 में उन्होंने बैचलर इन साइंस की डिग्री ली। गौरतलब है कि लंदन की मैथमैटिकल सोसायटी में 1917 में उनका चुनाव कर लिया गया।यह भी उल्लेखनीय है कि सन 1918 में रामानुजन को कैम्ब्रिज फिलोसॉफिकल सोसायटी, रॉयल सोसायटी तथा ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज तीनों का फेलो चुन गया। 1919 में वह भारत लौट आए।

गणित हमारे जीवन का प्रमुख आधार है:-

बहरहाल, आज गणित हर रूप में हमारी जिंदगी से जुड़ा हुआ है और सच तो यह है आज गणित हमारे जीवन का प्रमुख व महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय में मोबाइल फोन, इंटरनेट, कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता सभी गणित पर ही चलते हैं। अस्पतालों में रोगों की जाँच हो, दवाइयों की सही मात्रा और बीमारियों के फैलाव सभी को समझने में गणित ही मदद करता है। अंतरिक्ष यान भेजने, मौसम का हाल बताने और जलवायु परिवर्तन समझने में भी गणित की अहम भूमिका है। बैंक, एटीएम, ऑनलाइन भुगतान और पैसों के लेन-देन को सुरक्षित बनाने में गणित काम आता है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में समय का हिसाब रखना, घर का बजट बनाना, मकान बनवाना या किसी मशीन का इस्तेमाल करना-ये सब गणित के बिना संभव नहीं हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि गणित हमारे जीवन को आसान और सुरक्षित बनाता है।विज्ञान, गणित और तकनीक आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और आधुनिक जीवन की प्रगति का आधार हैं। विज्ञान प्रकृति और ब्रह्मांड के नियमों को समझने का प्रयास करता है, गणित उन नियमों को संख्याओं, सूत्रों और तर्क के रूप में व्यक्त करता है, जबकि तकनीक विज्ञान और गणित के ज्ञान को व्यवहार में लाकर मानव जीवन को सुविधाजनक बनाती है। बिजली, इंटरनेट, मोबाइल, चिकित्सा उपकरण, अंतरिक्ष यान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता-ये सभी विज्ञान की खोज, गणित की सटीकता और तकनीक के अनुप्रयोग का परिणाम हैं। सरल शब्दों में कहा जाए तो विज्ञान सोच देता है, गणित उसे सही दिशा और माप देता है, और तकनीक उस सोच को जीवन में उपयोगी बनाती है।

राष्ट्रीय गणित दिवस की शुरुआत और उद्देश्य:-

बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भारत सरकार ने २०१२ में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा रामानुजन की १२५वीं जयंती पर यह घोषणा की कि २२ दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाएगा और उसी साल २०१२ को पहले राष्ट्रीय गणित वर्ष के रूप में भी मनाया गया था। आज बच्चे गणित विषय में बहुत कम रूचि दिखाते हैं अथवा गणित के सवालों को हल करने से बचते हैं, यह दिवस बच्चों को गणित विषय के प्रति रूचि, उनमें प्रोत्साहन(प्रतियोगिताएँ, क्विज़, वर्कशॉप और व्याख्यान आयोजित कर) पैदा करता है। यह दिवस बताता है कि गणित केवल एक विषय ही नहीं है बल्कि यह तो सोचने, विश्लेषण करने और समस्या-समाधान की एक महान व बड़ी कला है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह दिवस रामानुजन के गणित के क्षेत्र में योगदान को सम्मान देता है। वास्तव में, उनकी खोजों ने आधुनिक गणित को गहराई और विस्तार दिया है। वास्तव में,इस दिवस को मनाने के पीछे का उद्देश्य समाज, विशेषकर विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि, तार्किक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है। जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि आज हमारे विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि लगातार घटती जा रही है। वास्तव में, इसका मुख्य कारण इसे केवल नियम और फार्मूलों की रटाई के रूप में पढ़ाया जाना है, जिससे इसकी वास्तविक उपयोगिता समझ में नहीं आती और न ही गणित के सवालों को हल करने में आनंद और खुशी का अनुभव बच्चों को हो पाता है। इसके अलावा गणित को कठिन और डराने वाला विषय मानने की मानसिकता, असफलताओं का अनुभव और रोज़मर्रा के जीवन से अलग लगना भी इसकी रुचि कहीं न कहीं कम करता है। इस समस्या का समाधान गणित को खेल, प्रयोग और वास्तविक जीवन के उदाहरणों से जोड़कर पढ़ाने में है। साथ ही, समस्या-समाधान और सोचने-समझने की विधियों पर जोर देकर छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाया जा सकता है। इस तरह गणित रोचक और उपयोगी बनकर विद्यार्थियों की पसंद में शामिल हो सकता है। गणित केवल अंकों का खेल नहीं है, बल्कि जीवन की हर व्यवस्था-विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था और दैनिक निर्णयों की आधारशिला है।

आज के युग में गणित की प्रासंगिकता और महत्व:-

पाठकों को बताता चलूं कि उस जमाने में रामानुजन के पास न तो आधुनिक किताबें थीं, न ही शिक्षक या सुविधाएँ, फिर भी उन्होंने अपनी प्रतिभा और मेहनत से ऐसे परिणाम दिए जो आज भी कंप्यूटर विज्ञान,भौतिकी,अंतरिक्ष विज्ञान, एन्क्रिप्शन (डेटा सुरक्षा) जैसे क्षेत्रों में उपयोग हो रहे हैं। संक्षेप में कहें तो रामानुजन का गणित समय से बहुत आगे था, इसलिए वह आज भी प्रासंगिक है। पाठकों को बताता चलूं उन्होंने गणित के कुछ बहुत कठिन और गहरे क्षेत्रों में ऐसे सूत्र और सिद्धांत खोजे, जिन पर आज भी दुनिया के गणितज्ञ और वैज्ञानिक काम कर रहे हैं। उन्होंने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रेणियां, निरंतर भिन्न, गणितीय विश्लेषण पर काम किया। उन्होंने संख्या सिद्धांत पर काम करते हुए संख्याओं के गुण-धर्मों को समझा-जैसे अभाज्य संख्याएँ। इसमें रामानुजन ने ऐसे नियम खोजे जो पहले किसी को ज्ञात नहीं थे। उन्होंने अनंत श्रेणियाँ(ऐसी संख्यात्मक श्रेणियाँ जिनका कोई अंत नहीं होता) पर काम करते हुए इनके लिए तेज़ और सटीक सूत्र दिए।निरंतर भिन्न संख्याओं को लिखने का ऐसा तरीका है जिससे कठिन गणनाएँ कम चरणों में अधिक सटीक हो जाती हैं, और रामानुजन ने इसका उपयोग जटिल संख्याओं के सही मान खोजने में किया। वहीं गणितीय विश्लेषण गणित का वह क्षेत्र है जो यह समझने में मदद करता है कि संख्याएँ और फलन कैसे बदलते हैं या अनंत की ओर कैसे बढ़ते हैं; रामानुजन ने इसी के माध्यम से अनंत श्रेणियों और जटिल समीकरणों के लिए सरल, प्रभावी और नए सूत्र दिए, जो आज भी गणित और विज्ञान में उपयोगी हैं।आज गणित को केवल किताबों और परीक्षाओं तक सीमित न रखकर उसे व्यवहारिक और उपयोगी बनाने की जरूरत है। जब शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ती है, तो छात्र सूत्र रटने के बजाय यह समझ पाते हैं कि गणित दैनिक जीवन, विज्ञान और आधुनिक तकनीक में कैसे काम करता है। उदाहरण के लिए, बजट बनाना, समय प्रबंधन, खरीद-फरोख्त, ब्याज की गणना रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में गणित के प्रयोग हैं। वहीं विज्ञान में गति, ऊर्जा, आँकड़ों का विश्लेषण, और तकनीक में कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस गणित पर ही आधारित हैं। जब पढ़ाने का तरीका प्रयोगात्मक, उदाहरण-आधारित और समस्या-समाधान केंद्रित होता है, तो छात्रों की सोचने की क्षमता, तर्कशक्ति और नवाचार बढ़ती है और वे गणित को जीवन से जोड़कर आत्मविश्वास के साथ इस्तेमाल करना सीखते हैं।

रामानुजन से जुड़े कुछ किस्से :-

हाल फिलहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि श्रीनिवास रामानुजन से जुड़े कई किस्से उनकी असाधारण प्रतिभा को उजागर करते हैं। सबसे प्रसिद्ध किस्सा 1729 संख्या से जुड़ा है, जब प्रोफेसर हार्डी ने इसे साधारण टैक्सी नंबर बताया, लेकिन रामानुजन ने तुरंत इसे दो अलग-अलग तरीकों से दो घनों के योग के रूप में व्यक्त कर दिया। रामानुजन अक्सर बिना लिखित प्रमाण के जटिल सूत्र लिख देते थे और मानते थे कि ये सूत्र उन्हें देवी नमगिरि की प्रेरणा से प्राप्त होते हैं, जिन्हें बाद में आधुनिक गणित ने सही सिद्ध किया। सीमित संसाधनों और गरीबी के कारण वे स्लेट पर गणना करते थे, जिससे उनका गणित अत्यंत संक्षिप्त और मौलिक बन गया। इंग्लैंड के गणितज्ञ जी. एच. हार्डी को लिखा गया उनका पत्र, जिसमें सैकड़ों नए सूत्र थे, उनकी प्रतिभा की पहचान बना, लेकिन श्रीनिवास रामानुजन का बेहद ही कम उम्र में (३३ वर्ष) टीबी रोग से ग्रस्त होने के कारण २६ अप्रैल 1920 को निधन हो गया था।बीमारी और कठिन परिस्थितियों में भी गणित उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा, जो उन्हें एक असाधारण गणितज्ञ के रूप में अमर करता है।अंत में यही कहूंगा गणित केवल अंकों और सूत्रों का ही विषय नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को समझने और सँवारने की कला है। समय की गणना से लेकर धन के लेन-देन, दूरी और गति के अनुमान से लेकर निर्णय लेने तक-हमारा हर कदम कहीं न कहीं गणित से ही जुड़ा हुआ है। सुबह अलार्म का बजना, बजट बनाना, रास्ता चुनना, खाना पकाते समय मात्रा तय करना-ये सभी गणितीय सोच के सरल रूप हैं। आज के आधुनिक जीवन में गणित की भूमिका और भी व्यापक हो गई है। विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों की नींव गणित पर टिकी है। डेटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और भविष्यवाणी मॉडल हमें बेहतर निर्णय लेने में सहायता करते हैं। साथ ही, गणित हमें तार्किक सोच, समस्या-समाधान और अनुशासन सिखाता है, जो जीवन की चुनौतियों से जूझने की शक्ति देता है।गणित जीवन का अनकहा साथी है-जो नजर तो कम आता है, लेकिन हर पल हमारे साथ चलता है। इसके बिना जीवन अधूरा है।

भाजपा बनी हिंदू महासभा : (आलेख : राजेन्द्र शर्मा)

भाजपा के पर्ची से निकले अध्यक्ष (अभी कार्यकारी) नितिन नबीन ने जब राजधानी दिल्ली में भाजपा मुख्यालय में कुर्सी संभालने के बाद, अपने पहले बयान में 'सब का साथ, सब का विकास' की बात की, तो सचमुच काफी अटपटा-सा लगा। बेशक, ऐसा तो नहीं है कि भाजपा ने 2019 के चुनाव की जीत के बाद नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए इस नारे को आधिकारिक रूप से छोड़ ही दिया हो। वैसे आधिकारिक रूप से भाजपा ने छोड़ा तो संभवतः 'गांधीवादी समाजवाद' को भी नहीं है, जिसे जनता पार्टी में विभाजन के बाद, उसके जनसंघ घटक के गिर्द 1980 में भाजपा के गठन के समय, अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में इस पार्टी की मूल विचारधारा के रूप में स्वीकार किया गया था। बहरहाल, 'गांधीवादी समाजवाद' के साथ कभी जोर-शोर से घोषित अपने नाते को भाजपा अब तक करीब-करीब भुला ही चुकी है और इस भूले हुए रिश्ते को याद करने में भी, अब उसे किसी पुरानी भूल को याद करने जैसी शर्म ही आती लगती है।

उस हद तक तो नहीं, फिर भी कुछ-कुछ उसी तरह पिछले कुछ वर्षों में और खासतौर पर 2024 के आरंभ में अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का पूरा श्रेय प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में संघ-भाजपा द्वारा आधिकारिक रूप से लूटे जाने के बाद से, उनकी बयानबाजी में से यह नारा करीब-करीब गायब ही हो चुका है। हां! भूले-भटके किसी बहस में संघ-भाजपा के अल्पसंख्यक-विरोधी और खासतौर पर मुस्लिमविरोधी होने की आलोचनाओं के जवाब में, ढाल की तरह इस नारे की दुहाई का इस्तेमाल जरूर देखने को मिल सकता है। कहने की जरूरत नहीं है कि 2019 में नरेंद्र मोदी की दूसरी पारी की शुरूआत में जब यह नारा लगाना शुरू किया गया था, तब भी इसका संघ-भाजपा और उनकी सरकार के आचरण में इसका कोई प्रभाव नजर नहीं आता था। वास्तव में यह नारा, 'सब का साथ' से ठीक उल्टे आचरण को ही ढांपने का काम करता था। फिर भी, कम से कम एक पर्दा तो था, जो अब पूरी तरह से गायब हो चुका है।

नितिन नबीन एक तो नये-नये और जाहिर है कि काफी अप्रत्याशित तरीके से, एक ऐसी राष्ट्रीय भूमिका में आ टपके हैं, जिसके लिए वह तैयार नहीं थे। इसलिए, उनकी बोली-बानी का संघ-भाजपा की आज की बोली से पूरी तरह से मेल नहीं बैठने में बहुत हैरानी नहीं होनी चाहिए। इसके ऊपर से उनका पूरा का पूरा राजनीतिक कैरियर उस बिहार का है, जहां संघ-भाजपा को अब भी मजबूरी में नीतीश कुमार को अपना 'नेता' मानना पड़ रहा है, जिसका अर्थ उनका खुलकर सांप्रदायिक बोली का प्रयोग न कर पाना भी है। और यह स्थिति उतने ही समय से है, जितना लंबा उनका राजनीतिक कैरियर है। ऐसे में नये भाजपा अध्यक्ष का, 'सब का साथ सब का विकास' का जिक्र करना, उस जगह की ही याद दिलाता है, जिसे वास्तव में संघ-भाजपा खाली कर चुके हैं।

वास्तव में संघ-भाजपा 2025 के आखिर में राजनीतिक रूप से और अपनी बोली-बानी में भी, किस जगह पर पहुंच चुके हैं, इसे अभी हाल के दो प्रकरण बखूबी रेखांकित करते हैं। याद रहे कि ये दोनों प्रसंग उन राज्यों के हैं, जो अगले साल के शुरू में होने वाले विधानसभाई चुनावों के चक्र में संघ-भाजपा और उसके मोदी राज के खास निशाने पर हैं। हमारा इशारा तमिलनाडु और प. बंगाल की ओर है। पाठकों को याद ही होगा कि पिछले ही दिनों अपने बहुप्रचारित दावे में, मोदी राज में नंबर दो माने जाने वाले अमित शाह ने जोर-शोर से इसका ऐलान किया था कि इन दोनों राज्यों में अगले चुनाव में भाजपा सत्ता में आकर रहेगी। बेशक, शाह के इस ऐलान को उनका चुनावी राजनीति का जुमला मानकर छोड़ा जा सकता था, बशर्ते अपने इस दावे को जमीन पर उतारने की कोशिश में भाजपा, वह सब नहीं कर रही होती, जो वह कर रही है। और इससे भी बड़ी बात कि यह सब इतना विनाशकारी नहीं होता, जितना कि वास्तव में है।

तमिलनाडु में, जो देश के ऐसे उंगलियों पर गिने जा सकने वाले राज्यों में से एक है, जहां के लोगों के गहराई से धार्मिक होने के बावजूद, वहां सांप्रदायिक टकराव और तनाव का कोई इतिहास है ही नहीं, आने वाले विधानसभाई चुनाव की अपनी तैयारियों के हिस्से के तौर पर संघ-भाजपा ने मदुरै जिले के अंतर्गत तिरुप्परनकुंद्रम की पहाड़ी के गिर्द, एक झूठा धार्मिक विवाद और तनाव रच दिया है। यह खेल कितना कुटिलतापूर्ण और खतरनाक है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह विवाद खड़ा करने के लिए संघ-भाजपा ने इस स्थल को 'दक्षिण की अयोध्या' के रूप में प्रचारित करना पहले से शुरू कर दिया था। संबंधित पहाड़ी पर तीन मंदिर हैं, एक दरगाह है, जिसे सिकंदर शाह की दरगाह के नाम से जाना जाता है और कई प्राचीन जैन गुफाएं हैं। जैसा कि आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है, संघ परिवार ने दरगाह को मंदिर साबित करने का अभियान छेड़ दिया है।

इसी मुहिम के हिस्से के तौर पर इस साल के शुरू में ही संघ-भाजपा ने बाहर से लोगों को लाकर, दरगाह के खिलाफ झगड़ा खड़ा करने की कोशिश की थी। बाद में इसी अभियान के हिस्से के तौर पर, एक व्यक्ति हाई कोर्ट में पहुंच गया कि पहाड़ी के मंदिर में कार्तिकाइ दीपम के नाम से बड़ी-सी आग जलाने की जो पुरानी परंपरा है, उसके हिस्से के तौर पर उसे दरगाह के ठीक बगल में, दीपम करने की इजाजत दी जाए। राज्य सरकार के विरोध के बावजूद और संबंधित मंदिर के बाहर ऐसी कोई परंपरा नहीं होने के बावजूद, एक विवादों के घेरे में रहे न्यायाधीश की एकल न्यायाधीश बैंच ने, आस्था के नाम पर इस भड़काने वाली कार्रवाई की इजाजत भी दे दी। राज्य सरकार चूंकि अपने राज्य को इससे पैदा होने वाले अनावश्यक तनाव से बचाना चाहती थी, उसके खिलाफ संघ-भाजपा ने जबर्दस्त अभियान छेड़ दिया। इस अभियान के हिस्से के तौर पर, मदुरै से सीपीआई (एम) के सांसद, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लेखक, सू वेंकटेशन को हिंदुत्ववादी संगठनों ने हत्या की धमकियां तक देना शुरू कर दिया। और शासन ने जब इस धार्मिक स्थल के गिर्द जबरन झगड़ा करने पर आमादा संघ कार्यकर्ताओं को रोका, भाजपा के समर्थक दलों ने भी उनकी इस शरारत का समर्थन करना शुरू कर दिया। इस तरह संघ-भाजपा को तमिलनाडु में, जहां उनके पास सांप्रदायिक तनाव और ध्रुवीकरण का कोई स्थानीय मुद्दा नहीं था, ऐसा मुद्दा मिल गया। यही तो संघ-भाजपा की सफलता की राह है! साफ है कि भाजपा को एक ऐसे राज्य में भी, जहां सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की कोई परंपरा नहीं है, बहुसंख्यकवादी सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के बहाने गढ़ने में कोई हिचक नहीं है।

दूसरा प्रसंग प. बंगाल का है, जो एक और ऐसा राज्य है जहां संघ-भाजपा अपनी सारी कोशिशों के बावजूद, अब तक सत्ता तक पहुंचने में कामयाब नहीं हुए हैं। सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस के निलंबित विधायक, हुमायूं कबीर की अपने इलाके में बाबरी मस्जिद बनाने की घोषणा को, संघ-भाजपा ने बिना जरा भी समय गंवाए जवाबी सांप्रदायिक गोलबंदी का बहाना बना लिया। हिंदुत्ववादी संगठनों के नाम पर, लेकिन संघ-भाजपा के प्रत्यक्ष समर्थन से, ब्रिगेड परेड मैदान में कई लाख लोगों के कथित 'सामूहिक गीता पाठ' के आयोजन का ऐलान कर दिया गया और एक लाख से ज्यादा लोगों के साथ ऐसा आयोजन किया भी गया। जैसा कि आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है, यह कोई धार्मिक आयोजन न होकर वास्तव में बुनियादी तौर पर मुस्लिम-विरोधी भावनाएं भड़काने वाला आयोजन भर था। संघी राज्यपाल तक इस आयोजन में जा पहुंचे। इस आयोजन के मूल चरित्र का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि मैदान के बाहर ही चिकन पैटिस बेच रहे एक मुस्लिम फेरीवाले को पीट-पीटकर बुरी तरह से घायल कर दिया गया। और जब इस हमले के दोषियों को, जिन्हें पुलिस ने भी लगता है कि जान-बूझकर बहुत हल्की धाराओं में ही गिरफ्तार किया था, अदालत ने जमानत पर छोड़ दिया, भाजपा के शीर्ष नेताओं ने सार्वजनिक रूप से उनका ऐसा सार्वजनिक अभिनंदन किया, जैसे वे राष्ट्र के लिए कोई बहुत भारी कुर्बानी देकर आये हों।

बेशक, हमने यहां दो ही उदाहरण दिए हैं, जबकि भाजपा के सीधे सांप्रदायिकता भड़काने में लिप्त होने और खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक बोली बोलने के इसी महीने के दर्जनों उदाहरण दिए जा सकते हैं। लेकिन, इन दो उदाहरणों से ही स्पष्ट है कि संघ और उसकी राजनीतिक बाजू के रूप में भाजपा, अपने चुनावी प्रभाव का विस्तार करने के लिए, बेशरमी से सांप्रदायिक खेल खेलने और बोली बोलने के ही आसरे हैं। और इसमें अब उन राज्यों का नंबर आ रहा है, जो अब तक संघ-भाजपा के राजनीतिक नियंत्रण से और इसलिए सांप्रदायिक ध्रुवीकरण से भी किसी हद तक बचे रहे थे। अगर चुनाव के महीनों पहले यह खुला सांप्रदायिक खेल खेला जा रहा है, तो चुनाव प्रचार में और चुनाव के समय क्या होगा, इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

अपने दूसरे जन्म के समय की गांधीवादी-समाजवाद की बोली-बानी के बाद, एक सर्वधर्म समानता में विश्वास करने वाली पार्टी होने का दिखावा तो भाजपा ने तभी छोड़ दिया था, जब बाबरी मस्जिद-विरोधी अभियान के साथ पर्दे के पीछे से खेलने के बाद, 1988 में पालमपुर की अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में भाजपा ने, बाबरी मस्जिद हिंदुओं को सौंपे जाने की औपचारिक रूप से मांग की थी। उसके बाद से भाजपा, नंगी सांप्रदायिकता की ढलान पर लगातार खिसकती ही गयी है। बहरहाल, मोदी राज में भाजपा ने वाजपेयी के राज में रही तिनके की ओट भी हटा दी है और मोदी के तीसरे कार्यकाल में तो भाजपा, बाकायदा हिंदू महासभा बनने की ओर है। अब जबकि चुनाव आयोग से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक, किसी से भी यह सवाल उठाने की तो उम्मीद की नहीं जा सकती है कि धर्मनिरपेक्ष संविधान के अंतर्गत, एक खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक बोली बोलने वाली पार्टी को कैसे चलने दिया जा सकता है, क्यों नहीं मोदी जी अपना नाम बदलने का भी शौक पूरा कर लें और भाजपा का नाम बदलकर, हिंदू महासभा कर दें!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

पशु-पक्षियों के संकेत और मौसम का रंग

विजय गर्ग

राजस्थान में मारवाड़ के गांवों में भी मौसम के पूर्वानुमान के लिए आज भी प्रकृति के संकेतों का अनुसरण किया जाता । जहां एक और विज्ञान ने मौसम की भविष्यवाणी के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का विकास किया है, वहीं दूसरी ओर ये पारंपरिक तरीके आज भी बड़े काम आते हैं। पशु-पक्षियों के व्यवहार में मौसम के महत्त्वपूर्ण संकेत छिपे होते हैं। यह पारंपरिक ज्ञान न केवल ग्रामीणों के लिए, बल्कि वैज्ञानिकों के लिए भी एक अहम संदर्भ बन चुका है।

राजस्थान में जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग ने हाल ही में एक अध्ययन में यह साबित किया है कि पक्षियों के घोंसले बनाने के तरीके से लेकर जानवरों के व्यवहार तक से मौसम के संकेतों को समझा जा सकता है। यह शोध 'इंटरनेशनल जर्नल आफ एनवायरमेंटल साइंस' में प्रकाशित हुआ है। इसमें बताया गया है कि जानवरों के व्यवहार से अस्सी फीसद तक मौसम का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि पुराने समय से चली आ रही यह पारंपरिक जानकारी जो ग्रामीणों की ओर से इस्तेमाल की जाती रही है, अब वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो चुकी है। उदाहरण के लिए मोर का नृत्य या कूजन मानसून की शुरुआत का संकेत देता है। इसी तरह चींटियों का भोजन इकट्ठा करना सूखा पड़ने का संकेत है।

विश्वविद्यालय के इस शोध दल का कहना है कि प्रकृति के संकेत आज भी कारगर हैं।। पशु- -पक्षियों के व्यवहार से मौसम का पूर्वानुमान लग जाता है। वैज्ञानिक अध्ययन में इन बातों और तथ्यों की पुष्टि हुई है। यानी इससे पुरानी प्रथाओं के वैज्ञानिक प्रमाण साबित हुए हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि पशु-पक्षियों का व्यवहार आज भी मौसम के संकेत बताने में पूरी तरह सक्षम है। यह भी दावा किया गया है कि पारंपरिक ज्ञान का आज भी कोई तोड़ नहीं है। इसके संकेत आज भी वैज्ञानिक कसौटी पर खरे उतरते हैं। यह भी बताया गया कि कैसे पुराने समय में लोग पारिस्थितिकी तंत्र के सदस्यों के व्यवहार से मौसम की भविष्यवाणी करते थे। लोमड़ी, सियार और अन्य जानवरों का व्यवहार' भी इस प्रणाली का हिस्सा था था। उदाहरण के लिए लोमड़ी खेतों में चूहों की संख्या को नियंत्रित करती है, जो कृषि के लिए अच्छा संकेत है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में भील, मीणा और बंजारा समुदायों के लोग अब भी पशु- पक्षियों के संकेतों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए लाल चींटियां जब अपने अंडे इधर-उधर ले जाती हैं, तो यह बारिश के करीब आने का संकेत होता है। यह पारिस्थितिकी तंत्र के इन जीवों की सूझबूझ को दर्शाता है, जो मौसम की सटीक जानकारी देते हैं।

राजस्थान में मारवाड़ के गांवों में भी मौसम के पूर्वानुमान के लिए आज भी प्रकृति के संकेतों का अनुसरण किया जाता । जहां एक और विज्ञान ने मौसम की भविष्यवाणी के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का विकास किया है, वहीं दूसरी ओर ये पारंपरिक तरीके आज भी बड़े काम आते हैं। पशु-पक्षियों के व्यवहार में मौसम के महत्त्वपूर्ण संकेत छिपे होते हैं। यह पारंपरिक ज्ञान न केवल ग्रामीणों के लिए, बल्कि वैज्ञानिकों के लिए भी एक अहम संदर्भ बन चुका है। यह पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाता है। प्राचीन समय से चली आ रही ये पद्धतियां अब आधुनिक विज्ञान के माध्यम से और अधिक प्रमाणित हो रही हैं।

पक्षियों और अन्य जीवों के पारंपरिक संकेतों के कुछ अर्थ होते हैं। सांप का पेड़ों पर चढ़ना बारिश की संभावना का पूर्वानुमान है। इसी तरह लोमड़ी की उपस्थिति खेतों में चूहों का नियंत्रण होने का संकेत देती है। मौसम के साथ जीवन से पक्षियों के संकेत भी जुड़े हुए हैं, जैसे चिड़िया अथवा गौरैया का घर में घोंसला बनाना खुशहाली और तरक्की का संकेत है। पक्षियों के मौसम के संकेत में उनकी उड़ान की ऊंचाई (कम ऊंचाई पर उड़ना बारिश का संकेत है, जबकि ऊंची उड़ानें अच्छे मौसम का संकेत देती हैं), उनकी आवाज (जैसे उल्लू का

बोलना या मोर का नाचना बारिश का संकेत माना जाता है) और उनका भोजन व्यवहार (तूफान से पहले खूब खाना) शामिल है। कुछ ग्रामीण परंपराएं पक्षियों के घोंसले बनाने जगह को भी मौसम का सूचक मानती हैं। उल्लू का चीखना और गौरैया का धूल में लोटना बारिश का संकेत माना जाता है। यदि कौवे कांटेदार पेड़ों पर घोंसला बनाते हैं, तो इसे बारिश कम होने की संभावना के रूप में देखा जाता है।₹ ₹ इसी तरह पक्षियों का आसमान में ऊंची उड़ान भरना अच्छे मौसम का संकेत होता है, यानी बारिश की कोई संभावना नहीं होती। जोड़े में उड़ने वाले कौवे भी अच्छे मौसम का संकेत देते हैं। इसी तरह तूफान से पहले पक्षी वसा जमा करने के लिए अधिक सक्रिय हो जाते हैं और खूब खाना खाते हैं। बारिश आने पर मुर्गियां बेचैन हो जाती हैं या धूल में खुद को रगड़ती हैं। हंस की छाती की

हड्डी का ला का लाल या गहरे रंग का होना ठंडी और तूफानी सर्दी का संकेत हो सकता है। यदि सारस आकाश में गोलाकार परावलय बना कर उड़ते हैं, तो यह शीघ्र वर्षा का संकेत है। पेड़ों पर दीमक का तेजी से घर बनाना अच्छी वर्षा का संकेत है। जब पक्षी एक साथ इकट्ठा होते हैं और अपने पंख फड़फड़ाते हैं, तो मौसम में बदलाव की उम्मीद की जाती है। वहीं चातक को बारिश का पक्षी माना जाता है। इसका आगमन मानसून के मौसम का संकेत है। इस तरह पशु- पक्षियों की हरकतों को देख कर मौसम का काफी हद तक पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

हमारे पूर्वजों ने असल में यह हमारा पशु-पक्षियों से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान है, जिसे ने पूरा मान और सम्मान दिया है। मनुष्य लंबे समय से पशु-पक्षियों के व्यवहार को बदलते मौसमों के संकेतक के रूप में इस्तेमाल करता रहा है। कई लोक कथाएं और किस्से हैं, जो बताते हैं। कि पक्षियों की बढ़ती या घटती गतिविधि एक अध्याय के अंत और एक नए अध्याय की शुरुआत का रुआत का संकेत देती है। हम में से ज्यादातर लोग इस जुड़ाव को भूल चुके हैं, लेकिन कोई भी पक्षी प्रेमी आपको सर्दियों के आखिरी नीरस दिनों में पक्षियों को रंग-बिरंगे रंग में रंगते देखने के उत्साह के बारे में जरूर बता देगा। सामान्य पक्षियों की तरह प्रवासी पक्षी बताते हैं, जैसे 'माकिंगबर्ड' और 'ब्लैकबर्ड' का रात भी कई अनुमान भर चहचहाना बताता है कि गर्म आने वाले हैं। कई प्रवासी पक्षी सर्दियों के आगमन अथवा जाने के बारे में इशारा हैं। केवल पर्यावरण की बात करें, तो पक्षियों का अध्ययन पारिस्थितिकी संतुलन को समझने क्योंकि वे कीट मदद करता करता है, नियंत्रण, परागण और बीज प्रसार में अहम भूमिका निभाते हैं। पक्षी पर्यावरण में हो रहे बदलाव के शुरुआती संकेत देते हैं। उनकी आबादी में गिरावट आवासों के क्षरण या जलवायु परिवर्तन का संकेत हो सकती है। पक्षी कीटों को नियंत्रित करते हैं, बीज फैलाते हैं और परागण में मदद करते हैं, जो मानव द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई पौधों के लिए अहम है। पक्षी मृत जीवों और कचरे को साफ करने भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। पक्षियों का वैज्ञानिक अध्ययन उनके व्यवहार, प्रवास, प्रजनन और शारीरिक विशेषताओं को समझने में इंसान की पूरी तरह से मदद करता है। हमें केवल इस ज्ञान की समझ होने और इसके वैज्ञानिक प्रयोगों को पहचानने की जरूरत है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

शिक्षा की गुणवत्ता और दायित्व का बोझ

डॉ विजय गर्ग

भारत में शिक्षकों की भूमिका और उनकी जिम्मेदारियों को लेकर लंबे समय से बहस चलती रही है, विशेष रूप से तब, जब उन्हें गैर शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाता है। देश के विभिन्न राज्यों में शुरू की गई मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया में भी शिक्षकों को बूथ स्तरीय अधिकारी के तौर पर शामिल किया गया है। इसलिए यह बहस नए सिरे से राष्ट्रीय विमर्श का विषय बन गई है। ऐसी खबरें आईं कि काम के दबाव से कई बूथ स्तरीय अधिकारियों की मौत हो गई। जिनमें हृदयाघात, तनाव और आत्महत्या जैसे कारण बताए गए। ये घटनाएं केवल व्यक्तिगत त्रासदियां नहीं, बल्कि एक गहरी संरचनात्मक समस्या का संकेत हैं, जो बताती है कि देश में शिक्षा के संवाहक कहे जाने वाले शिक्षकों को प्रशासनिक प्रणाली के सामान्य कर्मियों की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है।

इससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, बल्कि शिक्षकों का का सम्मान, मानसिक स्वास्थ्य और कार्य संतुलन भी प्रभावित होता है। कुछ समय पहले पश्चिम बंगाल में रंगमाटी पंचायत की एक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की मौत पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान हो गई। गुजरात में एक शिक्षक पत्र लिखकर कहा कि वे लगातार थकान । और मानसिक 5 दबाव से जूझ न हैं, इस कारण पुनरीक्षण कार्य को आगे जारी नहीं रख सकते। इस तरह मध्य प्रदेश में एक शिक्षक को प्रतिदिन कम से कम से कम सौ मतदाताओं का सर्वेक्षण करने ने का लक्ष्य दिया गया था और लापरवाही के आरोप में निलंबन के अगले दिन उनका निधन हो गया। इन घटनाओं से यह सवाल अधिक मुखर होकर सामने आता है कि क्या शिक्षकों की प्राथमिक भूमिका प्रशासनिक कार्यों बोझ तले दब गई है! यह पहली बार नहीं है जब चुनावी या अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगे शिक्षकों को जीवन की कीमत चुकानी पड़ी हो। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश बिहार में कई मतदान कर्मचारियों की ल म चुनावी से मौत हो गई थी, , जिनमें शिक्षक भी शामिल थे। घटनाएं संकेत देती हैं कि समस्या आकस्मिक या व्यक्तिगत स्तर की नहीं, बल्कि संरचनात्मक और प्रबंधन की गंभीर कमी से उपजी है। शिक्षक का समाज के निर्माणकर्ता माने जाते हैं। उनसे । उनसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बच्चों व्यक्तित्व निर्माण और राष्ट्र भविष्य का उत्तरदायित्व जुड़ा होता है। मगर वास्तविकता यह है कि शिक्षकों का एक बड़ा हिस्सा अपने मूल कार्य, यानी शिक्षण में अपेक्षित समय और ऊर्जा नहीं लगा पाता है। उन्हें चुनावी सेवाओं, जनगणना, पल्स पोलियो अभियान, आधार सत्यापन, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम निगरानी और छात्रवृत्ति एवं सरकारी योजनाओं से जुड़े प्रशासनिक कार्यों में निरंतर और छात्रवृ लगाया जाता रहा है। रपट राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय की एक अध्ययन अनुसार, देश के सरकारी स्कूलों के शिक्षक अपने कुल कार्य समय करीब उन्नीस फीसद ही वास्तविक शिक्षण कार्य में लगा पाते हैं। उनका शेष समय गैर शैक्षणिक कार्यों और विद्यालय संबंधी प्रशासनिक गतिविधियों में व्यतीत होता है। इस तथ्य से स्पष्ट है कि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली सबसे गंभीर समस्याओं में से एक शिक्षक का अपने मूल कार्य से लगातार विचलन है राजस्थान के उदयपुर जिले में किए गए एक अध्ययन से पता चला कि सरकारी स्कूलों में प्रतिदिन कक्षा शिक्षण का समय केवल ढाई से तीन घंटे तक सीमित रह गया है, जबकि शेष समय अन्य कार्यों में खर्च होता है। यह स्थिति अभिभावकों को निजी शिक्षण संस्थानों की ओर धकेल रही है, क्योंकि वहां शिक्षक को पूरी तरह शिक्षण कार्य के लिए समर्पित माना जाता है। परिणामस्वरूप सरकारी शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता लगातार कमजोर होती जा रही है। और यह शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है कि शिक्षकों को केवल जनगणना, चुनाव में मतदान और मतगणना प्रक्रियाओं तथा आपदाओं से संबंधित राहत कार्य के अतिरिक्त किसी अन्य गैर शैक्षणिक कार्य में नहीं लगाया जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय भी इसी दिशा में निर्देश जारी कर चुका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में गैर-शैक्षणिक कार्यों को शिक्षकों के सामने सबसे बड़ी समस्या बताया गया है नीति स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षकों को उनके मूल कार्य से असंबंधित प्रशासनिक कार्यों में नहीं लगाया जाएगा। इसके बावजूद धरातल पर स्थिति भिन्न है। अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह समस्या कुछ अन्य देशों में भी मौजूद है। पाकिस्तान में भी शिक्षकों को चुनावी एवं अन्य सरकारी अभियानों में मैं लगाया जाता है, जिसके कारण शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। फिलीपींस ने वर्ष 2016 में एक कानून बनाकर चुनावी कार्य को शिक्षकों के लिए अनिवार्य से स्वैच्छिक कर दिया और उनके लिए विशेष लाभ, जैसे मृत्यु एवं स्वास्थ्य बीमा, अतिरिक्त अवकाश तथा बेहतर मानदेय की व्यवस्था बनाई। वहीं ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों में चुनाव आयोग के लिए स्वतंत्र कर्मचारी और स्वयंसेवक नियुक्त होते हैं। वहां शिक्षक का उद्देश्य केवल शिक्षण और लोकतांत्रिक मूल्यों का संप्रेषण माना जाता है, न कि चुनाव प्रक्रिया के लिए श्रमिक तौर पर कार्य करना। भारत में म की जड़ यह है कि शिक्षकों को शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ या ज्ञान संवाहक के रूप में नहीं, बल्कि सरकारी कर्मचारी के रूप में देखा जाता है। इसी मानसिकता के कारण उनका व्यापक उपयोग प्रशासनिक कार्यों में किया जाता है। इस इस दृष्टि में बदलाव नीतिगत और संरचनात्मक सुधारों के बिना संभव नहीं है। शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों से मुक्त किए बिना देश में शिक्षा व्यवस्था को गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी बनाना मुश्किल है। इसके लिए सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि चुनाव समेत अन्य । समेत अन्य कार्यक्रमों या अभियानों के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन विकसित किए जाएं, ताकि शिक्षकों को केवल तभी जिम्मा सौंपा जाए, जब स्थिति अत्यधिक अनिवार्य हो। दूसरा, यदि किसी परिस्थिति में शिक्षकों को ऐसे दायित्व निभाने पड़े, तो उनके लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, उचित मानदेय, कार्यदिवस संतुलन और बीमा जैसे प्रावधानों को अनिवार्य स्कारों और प्रशासनिक तंत्र को बनाया जाए। । तीसरा, राज्य सरकारों और शिक्षा के अधिकार कानून का गंभीरता से पालन सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ ही विद्यालयों में लिपिक और सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि गैर शैक्षणिक कार्यों का बोझ शिक्षकों पर न पड़े। एक और महत्त्वपूर्ण पहलू शिक्षकों के अभाव का है। कई राज्यों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में एकल- शिक्षक स्कूलों की संख्या बहुत अधिक है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता स्वाभाविक रूप से प्रभावित होती है। जब कुल शिक्षकों की संख्या अपर्याप्त हो और उन्हें अतिरिक्त दायित्व सौंप दिए जाएं, तो समर्प शिक्षण सामर्थ्य और कम होता जाता है। विश्व बैं के एक अध्ययन के ₹विकासशील देशों में प्राथमिक स्तर शिक्षक अनुपस्थिति 11-30 फीसद तक है। भारत में यह अनुपस्थिति कई बार विद्यालय से शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों के लिए बुलाए जाने के कारण होती है। यदि किसी राष्ट्र को गुणवत्ता आधारित शिक्षा व्यवस्था स्थापित करनी होती है, तो सर्वप्रथम उसे शिक्षक का सम्मान, सुरक्षा और कार्य संतुलन सुनिश्चित करना होता है। अगर शिक्षकों को उनके मूल कार्य से भटकाकर सतत प्रशासनिक भार का साधन बनाया जाता रहेगा, तो शिक्षा व्यवस्था भी सही दिशा में आगे नहीं बढ़ पाएगी।

उलझनों का घेरा : डॉ विजय गर्ग

वर्तमान समय का मनुष्य जितना बाहरी उपलब्धियों में आगे बढ़ा है, उतना ही भीतर की उलझनों से जूझ भी रहा है। तकनीक, प्रतिस्पर्धा और निरंतर बदलते परिवेश ने एक ऐसी मानसिक स्थिति बना दी है, जिसमें व्यक्ति अपने ही विचारों के शोर में डूबता चला जाता है। सच यह है कि मन की उलझनें अचानक नहीं जन्म लेतीं। वे धीरे-धीरे जमा होते तनाव, अनकहे दबाव और असमंजस से उत्पन्न होती हैं। ऐसे में मन को सुलझाने का हुनर केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि समय की एक अनिवार्य मांग बन चुका है। यह माना जाता है कि मन का अव्यवस्थित होना किसी बाहरी परिस्थिति का परिणाम है, लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है । उलझन का मूल कारण कई बार हमारे भीतर छिपा वह अंतर्विरोध होता है, जिसे हम पहचानने का प्रयास नहीं करते। आधुनिक दौर के मनुष्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह स्वयं के भीतर उठने वाली हलचल को समझ सके। यह एक विडंबना है कि जानकारी की भीड़ में व्यक्ति अपने ही मानसिक तंतुओं को पहचानने में पिछड़ गया है। मन की उलझनें वहीं अधिक गहराती हैं, जहां आत्मावलोकन की गुंजाइश कम होती जाती है ।

मन को सुलझाने का पहला कदम यह स्वीकार करना है कि हर विचार उपयोगी नहीं होता और हर भावना अनिवार्य नहीं। विचारों की भीड़ में कुछ ऐसे होते हैं, जो हमारे निर्णय को अस्पष्ट करते हैं। इस भीड़ से निकलने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति अपने भीतर एक शांत कोना बनाए, जहां वह बिना दबाव और बिना भय के स्वयं से संवाद कर सके। मन का यह संवाद कोई आध्यात्मिक अभ्यास मात्र नहीं, बल्कि मानसिक स्पष्टता का आधार है। जो लोग अपने भीतर की आवाज सुनने में सक्षम होते हैं, वे परिस्थितियों के दबाव में कम आते हैं और निर्णय क्षमता में अधिक सक्षम होते हैं। मगर यह भी सच है कि मनुष्य केवल सिद्धांतों से नहीं चलता। उसके भीतर भावनाओं का एक विस्तृत संसार होता है, जिसमें बीते अनुभवों का प्रभाव भी गहराई से जुड़ा रहता है। कई बार मन समय के किसी पुराने अध्याय में अटक जाता है और व्यक्ति वास्तविक परिस्थिति को उसी दृष्टि से देखने लगता है। यह मन की सबसे सूक्ष्म उलझन है। इसे सुलझाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति न तो अपने अतीत के प्रति कठोर बने और न ही उससे पूरी तरह दूरी बनाए । मन को सुलझाने का हुनर इसी संतुलन में निहित है, जहां स्मृतियों को स्थान तो मिले, पर वे वर्तमान का मार्ग अवरुद्ध न करें।

मन की उलझनों का एक बड़ा कारण यह भी है कि हम अपनी समस्याओं को आकार से अधिक महत्त्व देने लगते हैं। छोटी-सी चिंता धीरे-धीरे मन पर इतनी भारी हो जाती है कि वह असलियत से बड़ी प्रतीत होने लगती है। समाधान की दिशा में कदम नहीं उठाने से यह भार और बढ़ जाता है। इसलिए व्यावहारिक दृष्टि यह कहती है कि मन को सुलझाने की प्रक्रिया किसी 'विशाल समाधान' से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे, सतत कदमों से शुरू होती है। जब व्यक्ति जटिल समस्या को छोटे हिस्सों में विभाजित करता है, तब उसकी निर्णय क्षमता अपने आप जागृत होती है और मन बोझ से मुक्त होने लगता है

1इस संदर्भ में एक और सत्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता। मन की अव्यवस्था केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहती । वह व्यवहार, संबंधों और निर्णयों पर भी प्रभाव डालती है । ऐसा व्यक्ति न केवल खुद तनाव महसूस करता है, बल्कि दूसरों तक भी वही बेचैनी पहुंचाता है।

यह स्थिति सामाजिक स्तर पर भी कई तरह की समस्याओं को जन्म देती है । अगर मनुष्य अपने मन को व्यवस्थित करने का कौशल विकसित करे, तो वह स्वयं अपने साथ-साथ अपने परिवेश को भी अधिक संतुलित बना सकता है। इसलिए मानसिक व्यवस्था व्यक्तिगत उपलब्धि ही नहीं, सामाजिक जिम्मेदारी भी है ।

कई बार यह तर्क दिया जाता है कि मन को सुलझाने के लिए व्यक्ति को बाहरी बदलाव की आवश्यकता होती है। वास्तविकता यह है कि भीतर की स्पष्टता के बिना बाहरी व्यवस्थाएं अधिक समय तक प्रभावी नहीं रहतीं। मन की सुलझन बाहर नहीं, भीतर पैदा होती है अभिव्यक्ति से, आत्मबोध से और विचारों के सुविचारित संयोजन से । इस प्रक्रिया में किसी त्वरित परिणाम की अपेक्षा न करना ही बुद्धिमानी है । मन भी किसी धागे की तरह है। जितना खींचेंगे, उतना उलझेगा, जितना धैर्य से पकड़ेंगे, उतना सहज खुलेगा । आज की पीढ़ी के सामने मन को सुलझाने की चुनौती और भी अधिक है, क्योंकि उसका अधिकांश समय डिजिटल सूचनाओं के बीच बीतता है। निरंतर तुलना, लगातार उपलब्ध रहने की मजबूरी और त्वरित प्रतिक्रिया की संस्कृति ने मन को थका दिया है। ऐसे वातावरण में मानसिक अनुशासन का महत्त्व और बढ़ जाता है। प्रतिदिन कुछ समय बिना किसी व्यवधान के स्वयं पर केंद्रित होना केवल लाभकारी अभ्यास नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है।

मन को सुलझाने का हुनर किसी एक तकनीक का नाम नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का परिवर्तन है । यह स्वीकार करने में कि हर विचार का अनुसरण जरूरी नहीं, यह समझने में कि भावनाएं दिशा चाहती हैं, दमन नहीं और यह मानने में कि समाधान की ओर बढ़ाया गया प्रत्येक छोटा कदम व्यक्ति को स्वयं के अधिक पास ले जाता है। मनुष्य तब ही पूरी तरह विकसित हो सकता है, जब उसका मन संतुलित, शांत और स्पष्ट हो । यही वह अवस्था है, जिसमें जीवन के निर्णय अधिक परिपक्व होते हैं, संबंध अधिक अर्थपूर्ण बनते हैं और मनुष्य स्वयं अपने भीतर अधिक मजबूत बनकर उभरता है। इसलिए मन को सुलझाने का हुनर केवल मानसिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक बनाने की कला है।

नकली बीजों से संकट में किसान

डॉ विजय गर्ग

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की ओर से हाल में जारी बीज विधेयक 2025 का मसविदा किसानों, कृषि विशेषज्ञों और उद्योग जगत के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। सरकार ने सभी हितधारकों से इसके प्रावधानों पर ग्यारह दिसंबर 2025 तक सुझाव मांगे हैं। प्रस्तावित विधेयक मौजूदा बीज अधिनियम, 1966 और बीज (नियंत्रण) आदेश, 1983 का स्थान लेगा। मसविदा छोटी श्रेणी के अपराधों को अपराधमुक्त करने, व्यापार सुगमता बढ़ाने और अनुपालन का बोझ कम करने पर जोर देता है। सरकार का दावा है कि यह कानून बाजार में उपलब्ध बीजों और रोपण सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करेगा। इससे किसानों को किफायती दरों पर अच्छे बीज उपलब्ध होंगे, नकली और घटिया बीजों की बिक्री पर अंकुश लगेगा, नवाचार और नई वैश्विक किस्मों का रास्ता खुलेगा। बीज आपूर्ति श्रृंखला अधिक पारदर्शी बनेगी। सरकार के दावों के बावजूद इस मसविदे पर कई सवाल भी उठ रहे हैं।

देश में नकली बीज किसानों के लिए एक बड़ी समस्या बन चुके हैं। हाल में मुंबई में आयोजित एशियाई बीज कांग्रेस- 2025 में केंद्रीय कृषि मंत्री ने भी माना कि नकली बीज किसानों के लिए विनाशकारी साबित हो रहे हैं। बीज उत्पादक किसानों को दिए जाने वाले बीजों की ठीक से जांच करें, क्योंकि किसान की एक साल की फसल बिगड़ी, तो उसकी पांच साल तक हालत बिगड़ जाती है। यह कथन जमीनी सच्चाई को पूरी तरह बयान करता है। देश के लगभग सभी राज्यों में किसानों को नकली और मानकों पर खराब गुणवत्ता वाले बीज बेचे जा रहे हैं। नतीजा यह कि या तो अंकुरण नहीं होता या होता है, तो उत्पादकता बहुत कम निकलती है। ऐसे मामलों में किसान अक्सर कर्ज के जाल में फंस जाते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार घटिया बीजों से जीआई टैग वाली फसलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। निर्यात अस्वीकृत हो जाता है और देश की कृषि साख को भी नुकसान पहुंचता है यह संकट केवल बीजों तक सीमित नहीं है। खाद और कीटनाशक भी बड़े पैमाने पर नकली पाए जा रहे हैं। लोकसभा में सरकार द्वारा हाल में दी गई जानकारी समस्या की गंभीरता को उजागर करती है। सरकार के अनुसार वर्ष 2023-24 में 1,33,588 बीज नमूने लिए गए, जिनमें 3,630 नमूने खराब पाए गए। वर्ष 2023-24 के दौरान 1,81, 153 उर्वरक नमूनों में से 8,988 नमूने मानकों के अनुरूप नहीं थे। इसी प्रकार 80,789 कीटनाशक नमूनों में से 2,222 नमूने नकली पाए गए।

अन्य आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2024-25 में जांचे गए 2.53 लाख नमूनों 32,525 बीज घटिया पाए गए। तेलंगाना, राजस्थान, गुजरात और पश्चिम बंगाल ऐसे राज्य हैं, जहां बीजों में गड़बड़ी के सर्वाधिक मामले सामने आए हैं। राजस्थान में छापेमारी अभियान में नकली बीजों के कई मामले पकड़े गए राज्य में अब तक 73 विक्रेताओं के खिलाफ मुकदमे दर्ज हो चुके हैं। बड़ा सवाल यह भी है कि विधेयक के मसविदे में सजा के जो प्रावधान किए गए हैं, वे कितने असरदार होंगे? सरकार के अनुसार नया कानून

नकली बीजों के धंधे पर नकेल कसने के लिए तीन स्तरों पर कड़े दंड का ढांचा तैयार करता है। सरकार का दावा है कि कानूनी प्रावधानों से बाजार में अनुशासन आएगा, तो फिर किसान संगठन विरोध क्यों कर रहे हैं? किसान संगठनों का सवाल है कि क्या इससे किसानों की फसल खराब होने पर मुआवजे की समस्या सुलझ पाएगी ? किसान संगठनों का कहना है कि यह मसविदा कई अहम पहलुओं को छूता ही नहीं है। खराब बीज मिलने पर किसानों के लिए मुआवजे का प्रावधान है। यह कानून कंपनियों पर जुर्माना तो लगाता है, पर नुकसान किसे भरना है, यह साफ नहीं है। फसल खराब होने पर किसानों को सीधे मुआवजा देने का ठोस प्रावधान नहीं है। 'ट्रांसजेनिक' बीजों के आयात और बिक्री पर सुरक्षा उपाय अपर्याप्त हैं। उनका आरोप है कि अगर यह विधेयक पास हो गया, तो बीज आयात बढ़ेगा और स्थानीय बीज विविधता खतरे में पड़ जाएगी। किसान संगठनों को बीज महंगा होने का डर भी है।

झारखंड के सर्वाधिक छोटे ,मंझले उद्योग भरे जिले में विधानसभा पर्यावरण प्रदुषण समिति ने की बैठक

सरायकेला में 1200 उद्योग जहां प्रदुषण का स्तर मध्यम ,सतर्क रहने की दे रही है चेतावनी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। झारखण्ड विधानसभा की पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण समिति द्वारा आज परिषदन सभागार, सरायकेला में जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता माननीय विधायक उदय शंकर सिंह (सभापति) द्वारा की गई। बैठक में विधायक श्वेता सिंह, विधायक जीग्गा सुसारण होरो तथा विधायक, पोटका संजीव सरदार उपस्थित सरायकेला खरसावां जिला जहां झारखंड के सर्वाधिक छोटे मंझले उद्योग बसे हैं अब यहां पर्यावरण को खतरा महासुस हो रहा है ।

सरायकेला खरसावां जिले में आज (21 दिसंबर, 2025) प्रदूषण का स्तर मध्यम है ।विश्व स्वास्थ्य संगठन के गाइडलाइन से अधिक होने के कारण (85 µg/m3) स्थिति सामान्य नहीं कहा जा सकता ।

विधानसभा की बैठक बैठक में समिति द्वारा जिला खनन पदाधिकारी से जिले में संचालित खदानों की वर्तमान स्थिति, बालू घाटों की अद्यतन जानकारी तथा राजस्व संकलन की प्रगति की समीक्षा की गई। जिला खनन पदाधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप राजस्व संकलन किया जा रहा है। साथ ही अवैध खनन गतिविधियों के विरुद्ध की गई कार्रवाई, दर्ज प्राथमिकी, जब्त वाहनों एवं वसूली गई राशि की जानकारी समिति के समक्ष प्रस्तुत की गई। समिति द्वारा निर्देश दिया गया कि अवैध खनन, भंडारण एवं परिवहन के विरुद्ध निरंतर निगरानी रखते हुए सख्त एवं समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

प्रदूषण नियंत्रण विभाग से जिले में संचालित औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण की स्थिति की विस्तृत समीक्षा की गई। समिति द्वारा सभी औद्योगिक इकाइयों में एयर पॉल्यूशन कंट्रोल यूनिट की अनिवार्य स्थापना, पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप संचालन सुनिश्चित करने तथा प्रदूषण नियंत्रण संबंधी गाइडलाइन का कड़ाई से अनुपालन कराने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही कारखाना परिसरों में पौधारोपण, चाहरदीवारी निर्माण तथा आंतरिक एवं संपर्क सड़कों पर नियमित जल छिड़काव सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

समिति द्वारा यह भी स्पष्ट निर्देश दिया गया कि प्रदूषण से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत प्राप्त होने पर उसका तत्काल संज्ञान लेते हुए प्राथमिकता के आधार पर निष्पादन किया जाए तथा लंबित शिकायतों का निर्धारित समयसीमा के भीतर निष्पादन कर अनुपालन प्रतिवेदन उपलब्ध कराया जाए।

बैठक के दौरान समिति द्वारा श्रम अधीक्षक को श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी का अनिवार्य रूप से भुगतान सुनिश्चित कराने तथा श्रम कानूनों के अनुपालन की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए गए। वहीं नियोजन पदाधिकारी को संबंधित अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत स्थानीय लोगों को 75 प्रतिशत रोजगार का लाभ सुनिश्चित कराने हेतु प्रभावी कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।

स्वास्थ्य विभाग को जिले के सभी अस्पतालों एवं स्वास्थ्य संस्थानों से उत्पन्न बायो-मेडिकल वेस्ट का वैज्ञानिक, सुरक्षित एवं मानक प्रक्रिया के अनुरूप निष्पादन सुनिश्चित करने तथा इस संबंध में नियमित अनुश्रवण करने का निर्देश दिया गया।

इसके अतिरिक्त समिति द्वारा पेयजल, डीएमएफटी, भू-अर्जन, नगर निकाय सहित अन्य विभागों की भी क्रमवार समीक्षा की गई तथा सभी योजनाओं एवं कार्यों के प्रभावी, पारदर्शी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

बैठक में उप विकास आयुक्त सुश्री रीना हांसदा, निदेशक डी आर डी ए के डॉ अजय तिर्की, अपर उपायुक्त जयवर्धन कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी सरायकेला, जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपथी समेत विभिन्न विभागों के वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

झारखंड मे राष्ट्रपति आगमन समाचार ओडिशा जानने को आतुर पर भाषा की तरह ओड़िया पत्रकारिता जगत तहस

सरायकेला+, सिंहभूम उत्तर कलिंग माटी ओड़िशा के महान पत्रकारों की कर्मभूमि रही है

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। ओड़िया भाषा सरायकेला एवं खरसावां की रियासती राजकीय भाषा रही है ।दोनों देशी रियासत का विधिवत विलय केंद्र में 1947 को ओड़िशा के साथ रखें जाने हेतु इसकी महत्वपूर्ण इकरारनामे में मूल ओड़िया लोगों का हित स्पष्ट रूप से उल्लेख है। संभवतः यही वजह रही की सरायकेला खरसावां की जनता के हालात को देखते हुए ओडिशा विधानसभा ने इसे पुनः वापस लेने हेतु एक रिजुलूसन सन 2000ई में पारित कर केंद्र को भेजा था ।।इतना ही नहीं दर्जनों एम पी इस पर कई दिनों तक बहस लोक सभा, राज्य सभा में वहस करते रहे। उस बिहार विभाजन विधेयक पर ।कालान्तर में झारखंड गठन के दशकों बाद 2011 में ओड़िया को राजकीय भाषा बनाया जाता है ।जब ओड़िया राज्य की दुशरी राजभाषा बनी तो समूचे सिंहभूम जिले से ओडिया शिक्षक जो कुछ बचे थे वे एवं 99% स्कूल बंद कर दिये गये ।कुछ ऐसी ही भयावह सच्चाई झारखंड में ओडिया के साथ।

ठीक वैसी ही हाल है ओडिया भाषी पत्रकारों की । आज जब महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मूर्मू का सरायकेला खरसावां जिला आगमन होने जा रहा है ऐसे में ओडिशा के अखबार अपने लोगों यानी पाठकों के लिए ओड़िया पत्रकारों से समाचार मांग रहै है पर प्रशासन कितने ओड़िया पत्रकारों की महत्व को जानती यह जग जाहिर है ।भाषा की तरह कोई ओड़िया भाषी पत्रकार हैं ही नहीं सरकार, प्रशासन के नजर में । ढाई हजार साल पुरानी ओड़िया भाषा पर जो यहां की मूल भाषा रही कारण यह अतीत में यह उत्तर कलिंग रहा उसे झारखंड के अधिकारियों ने खत्म कर दिया गया है ।

अब मजे की बात सुनिए ओड़िया स्कूलों की भाती ओडिया पत्रकारिता को झारखंडी अधिकारियों ने वर्षो पूर्व खत्म कर जनता की भाषाई अधिकार ही नहीं वल्कि सामाजिक ,आर्थिक, राजनैतिक अधिकार को भी छीन ली है जो उनके आंख हुआ करते थे ।जब उस भाषी के पत्रकार होगें ही नहीं तब उनके (ओडिया के) जमीन -जायदाद , संपत्ति पर अधिकार जमाना सहज प्रतित होगा , आज वही हर जगह परिलक्षित हो रहा है । एक तरह से हर अंचल कार्यालय दलालों , माफियाओं का अड्डा बना हुआ है । मंत्रियों को भी सरायकेला खरसावां के राजस्व विभाग से मोटी कमाई हो जाती है चाहे वह बिहार सरकार की समय हो या झारखंड अब चरम पर ।

पत्रकार जिन्हे चौथा स्तम्भ माना जाता आज उसकी साख को धूमिल कर किस कदर संविधानिक अधिकारों से लोगों को वंचित किया जाता सरायकेला में वह यह जग जाहिर है । संभव तो झारखंड सरकार यह नहीं जानती की यह इलाका ओडिशा के अनेक महान पत्रकारों की कर्मभूमि रही है जो कालांतर में भारतीय संसद विधानसभाओं में पहुंचे , मंत्री बने ।

कविता प्रभा का साहित्य महाकुंभ :आठ पुस्तकों का लोकार्पण, दस कृतियाँ सम्मानित

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। कविता प्रभा राष्ट्रीय साहित्य समूह का वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ। सुब्रतो पार्क में आयोजित साहित्य महाकुंभ का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। वरिष्ठ साहित्यकार, संपादक व चिंतक प्रज्ञान पुरुष पंडित सुरेश नीरव ने कहा कि साहित्य व्यक्ति,परिवार,समाज और राष्ट्र को संस्कारित करने वाली शक्ति है। यह मानवता, पावनता और सहिष्णुता के मूल्यों को पुष्ट करता है। उन्होंने संस्थापक डॉ. कविता सिंह 'प्रभा' के प्रयासों की मुक्तकंठ से सराहना की।

इस अवसर पर कर्नाटक से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार ज्ञानचंद मर्मज्ञ ने कहा कि साहित्य मानव को बुद्धत्व की ओर अग्रसर करता है और उसे देवमानव से महामानव बनने की प्रेरणा देता है। देश के विभिन्न राज्यों से पधारे कवि, कवयित्रियों, कथाकारों, उपन्यासकारों, समीक्षकों और पत्रकारों की उपस्थिति में आठ कालजयी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया तथा दस पुस्तकों को कृति सम्मान–2025 प्रदान किए गए।

सम्मान समारोह में नामचीन साहित्यकार प्रज्ञान पुरुष पंडित सुरेश नीरव, वरिष्ठ कवयित्री गुरु माँ मधु मिश्रा, कर्नाटक (बेंगलुरु) के शीर्षस्थ साहित्यकार ज्ञानचंद मर्मज्ञ, शरद सिंह, हरियाणा गौरव वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा व दिल्ली अकादमी के पूर्व उपसचिव ऋषि कुमार शर्मा, राजस्थान की वरिष्ठ साहित्यकार व छंद विशेषज्ञ श्रीमती पुष्पा शर्मा 'कुसुम, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित दिल्ली के वरिष्ठ साहित्यकार एस. जी. एस सिसौदिया, गाजियाबाद की कवयित्री डॉ पुष्पा सिंह विसेन और 'एक कोशिश स्पेशल' स्कूल की संस्थापिका सुश्री मृदुल सिंह एवं गुरुग्राम की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती वीणा अग्रवाल, डॉ. शकुंतला मित्तल, राजपाल यादव 'राज',डॉ.अंजू कावतरा सहित अनेक साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। समारोह में डॉ. राधा गोयल की 'सामाजिक मुद्दे' (भाग एक व दो), उमंग जौली सरीन की 'मनरंगी माहिए', अर्चना जैन की 'दोस्ती का पुस्तकालय', डॉ. कविता सिंह 'प्रभा' की 'महकते पल' व 'उम्मीदों के पंख' तथा साझा काव्य-संग्रह 'वृक्ष, चेतना के मौन स्वर' का लोकार्पण किया गया। कृति सम्मान के अंतर्गत अनुवादक रजनीकांत एस. शाह को अनूदित कृति 'मूल्यनिष्ठ सर्जक जय भिख्खु' के लिए सर्वश्रेष्ठ अनुवादित पुस्तक सम्मान, डॉ. पूनम सिन्हा को कहानी संग्रह 'प्यार के दो पल', सुधा अहलुवालिया को गीत-संग्रह 'अनुगूँज', पुष्पा सिन्हा को उपन्यास 'दिक्कतों से पार', गीता चौबे 'गूँज' की 'बहे त्रिवेणी-धार', प्रतीक्षा दिनेश तिवारी की 'साँसों का अनुबंध', कुसुम सिंह 'अविचल' की 'अंतर्नाद', शालू अवस्थी की 'सिर्फ तुम', निवेदिता श्रीवास्तव की 'मौन का नाद' तथा मधु खोवाला की 'गुनगुनाता बसंत' को सम्मानित किया गया ।एवं

विशेष अलंकरण सम्मान मे उमंग जौली सरीन को 'कविता प्रभा कोकिला सम्मान–2025', ज्ञानचंद मर्मज्ञ को 'संत कबीर सम्मान–2025', डॉ. अंजू क्वात्रा को 'समाजसेवी श्री सम्मान–2025', अशोक अश्रु विद्यासागर को 'पत्रकार प्रणेता सम्मान–2025', पुष्पा शर्मा 'कुसुम' को 'गुरु गौरव सम्मान–2025', राजीव गौतम को 'समाचार शिल्पी सम्मान–2025', डॉ. सविता चड्ढा एवं डॉ. पुष्पा सिंह 'विसेन' को 'साहित्य गौरव सम्मान 2025, तथा शास्त्रीय नृत्यांगना कायना बोस को 'नृत्य कला प्रतिभा सम्मान–2025' से अलंकृत किया गया ।इस अवसर पर शास्त्रीय नृत्य, विशेष बच्चों द्वारा नाट्य प्रस्तुति तथा नुक्कड़ नाटक ने समारोह को भावविभोर कर दिया। मंच संचालन उमंग जौली सरीन, डॉ. ममता झा 'रुद्रांशी' और प्रेरणा सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उपाध्यक्ष राजीव गौतम ने बलिदान दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ ।यह साहित्यिक अनुष्ठान न केवल सृजन और सम्मान का पर्व रहा, बल्कि हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा को नई ऊर्जा देने वाला स्मरणीय आयोजन सिद्ध हुआ।

ट्रेन का किराया बढ़ा, अगले 26 तारीख से लागू होगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ट्रेन का बढ़ा हुआ किराया; अगली 26 तारीख से लागू होगा। जनरल कैटेगरी में 215 km से ज़्यादा की यात्रा के लिए 1 पैसे प्रति km की बढ़ोतरी होगी। मेल/एक्सप्रेस नॉन-AC के लिए 2 पैसे प्रति km की बढ़ोतरी होगी। AC यात्राओं के लिए 2 पैसे प्रति km की बढ़ोतरी होगी। नॉन-AC में 500 km की यात्रा के लिए 10 रुपये ज़्यादा देने होंगे।इससे रेलवे को इस साल 600 करोड़ रुपये मिलेंगे। लोकल ट्रेनों और मंथली सर्विस टिकट (MST) में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है।

किराए में बढ़ोतरी 26 दिसंबर से लागू होगी। बढ़ोतरी का असर मुख्य रूप से लंबी दूरी की यात्राओं पर पड़ेगा। जबकि कम दूरी की यात्रा करने वाले यात्रियों को कुछ आश्वासन दिए गए हैं। रेलवे के अनुसार, 215 km तक की जनरल क्लास की यात्राओं के किराए में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है, लेकिन इससे ज़्यादा दूरी के लिए जनरल क्लास में 1 पैसा प्रति किलोमीटर अतिरिक्त चार्ज लिया जाएगा। मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों में यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए, नॉन-AC और AC दोनों क्लास में किराए में 2 पैसे प्रति किलोमीटर की बढ़ोतरी की गई है। इसका मतलब है कि नॉन-AC में 500 km की यात्रा करने वाले यात्री को पहले से लगभग 10 रुपये ज़्यादा देने होंगे।

पुलिस ने आईजी पार्क में युवती के साथ बदसलूकी करने के आरोप में दो युवकों को गिरफ्तार किया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भूबनेश्वर की IG पार्क में एक लड़की के साथ बदसलूकी का मामला सामने आया है। कैपिटल पुलिस स्टेशन ने दो लोगों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों की पहचान आशीष और राकेश के तौर पर हुई है। पता चला है कि गिरफ्तारी के बाद दोनों पर कोर्ट में केस चला ।शनिवार शाम को आईजी पार्क में बदमाशों ने एक युवती को घसीटा ।विरोध करने पर बदमाशों ने लड़की के बॉयफ्रेंड की पिटाई कर दी। उन्होंने लड़की के साथ गलत हरकत करते हुए वीडियो भी बनाया और उसे वायरल करने की धमकी दी। लड़की की शिकायत के आधार पर कैपिटल पुलिस स्टेशन ने छापेमारी कर रात में पुरी से दो आरोपियों को पूछताछ के लिए उठाया। आज दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया।

मिली शिकायत के मुताबिक, शनिवार शाम 6:30 बजे प्रेमी युगल आईजी पार्क घूमने गए थे। वे पार्क के अंदर सुनसान जगह पर बैठे थे। अचानक चार युवक वहां पहुंचे और लड़की को गंदे इशारे करने लगे और छेड़ने लगे। लड़की के बॉयफ्रेंड ने विरोध किया तो उन्होंने उसकी पिटाई कर दी। जब दो युवक लड़की के साथ गलत हरकत कर रहे थे, तो बाकी दो ने यह सब अपने मोबाइल फोन में रिकॉर्ड कर लिया। उनकी आवाज सुनकर कुछ लोग वहां आ गए और युवक भाग गए। कुछ देर बाद युवकों द्वारा बनाया गया वीडियो वायरल हो गया। हमले का शिकार हुए प्रेमी जोड़े के कैपिटल पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराने के बाद पुलिस ने तुरंत आईजी पार्क और आसपास के इलाके में तलाशी ली। लेकिन अपराधी नहीं मिले। वायरल हुए वीडियो के आधार पर पुलिस ने पुरी से दो लोगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ की।

ब्रेक फेल होने से एक ट्रक बिजली के खंभे से टकरा गया; 2 वैन और 7 से ज़्यादा बाइक डैमेज हो गईं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

कोरपूट/भूबनेश्वर : ट्रक ने 2 वैन और 7 से ज़्यादा बाइक को टक्कर मार दी। कई एक्सीडेंट के बाद, ब्रेक फेल होने पर एक ट्रक बिजली के खंभे से टकरा गया। यह एक्सीडेंट कोरापुट ज़िले के सुनाबेड़ा से गुज़रने वाले नेशनल हाईवे नंबर 26 पर हुआ। बताया जा रहा है कि एक्सीडेंट में ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हो गया है। गाड़ियों को एक्सीडेंट वाली जगह से हटा दिया गया है और सड़क को नॉर्मल कर दिया गया है ।सूत्रों के मुताबिक, शुक्रवार दोपहर कोरापुट मेन रोड पर एक ट्रक का ब्रेक फेल हो गया, जिससे RTO ऑफिस में खड़ी आठ बाइक, दो स्कूटर, एक बैंक ATM कैश डिपॉजिट गाड़ी और एक टाटा AC कुचल गई। इस हादसे में मिनी ट्रक के ड्राइवर की मौत हो गई, जबकि दो अन्य को मामूली चोटें आईं। बचाव के उपाय किए गए हैं क्योंकि रेवेन्यू मिनिस्टर सुरेश पुजारी आज उस सड़क से गुजरने वाले हैं।

राजधानी में हवा ज़हरीली हो गई है, एयर क्वालिटी इंडेक्स 366 है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजधानी की हवा खराब हो गई है। कल दोपहर 2:56 बजे खंडगिरी में एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) 366 तक पहुंच गया। रीजनल प्लांट सेंटर इलाके में AQI 329, लिंगराज मंदिर के पास 348, मास्टर कैंटीन स्क्वायर पर 326 और रवींद्रमंडप स्क्वायर पर 321 थहै ।यानी दोपहर होते-होते राजधानी की हवा में सिर्फ़ ज़हर भर गया था। जहाँ भी देखो, सिर्फ़ धुआँ ही धुआँ नज़र आ रहा था। हवा बहुत खराब लेयर से गुज़र रही थी, इसलिए राजधानी के लोगों को बाहर निकलने से बचने की सलाह दी गई थी।

शहर के लोग परेशान हैं क्योंकि EQI को लेकर अलग-अलग चौराहों पर लगे डिजिटल बोर्ड में बार-बार इसका ज़िक्र किया गया है। हालाँकि शहर में एयर पॉल्यूशन एक-दो दिन से नहीं, बल्कि दो हफ़्तों से बढ़ा है, लेकिन इसे रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। स्टेट पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड ने किसी भी तरह से हालात का रिव्यू नहीं किया है और न ही लोकल एडमिनिस्ट्रेशन एक्टिव हुआ है। बल्कि, सबने अपनी-अपनी मनमानी करके लोगों की जान खतरे में डाल दी है।

भुवनेश्वर के आसमान में ज़हरीली हवा !

राजधानी भुवनेश्वर की हवा ज़हरीली हो गई है !

एयर क्वालिटी इंडेक्स 300 के पार हवा में प्रदूषण दो हफ़्ते से बढ़ रहा है आने वाले दिनों में दिल्ली जैसे हालात होने की उम्मीद है

कल दोपहर, खंडगिरी में AQI 366 तक पहुंच गया लिंगराज मंदिर के पास AQI 348 था रवींद्र मंडप स्क्वायर पर एयर क्वालिटी 321 थी 300 से ऊपर AQI को बहुत खतरनाक माना जाता है।

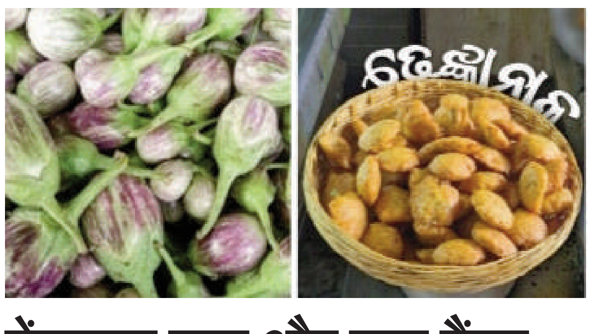

ढेंकनाल बारा और पाल बैंगन को GI का दर्जा दिलाने के प्रयास

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ढेंकनाल के मशहूर बारा और पाल बैंगन को ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (GI) की पहचान दिलाने की कोशिशें शुरू हो गई हैं। इसके लिए गुरुवार सुबह कृषि विज्ञान केंद्र के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक तैयारी मीटिंग हुई। मीटिंग में IAS प्रोबेशन भगत सामल कल्याण राव ने हिस्सा लिया और कहा कि ढेंकनाल जिले का बारा जितना खास है, उतना ही स्वादिष्ट भी है, जबकि कामगारा और जिले की दूसरी जगहों पर उगाए जाने वाले पाल बैंगन देखने में सुंदर और खाने में स्वादिष्ट होते हैं।उन्होंने कहा कि इसे GI स्टेटस मिलना चाहिए। इसके लिए उन्होंने सभी व्यापारी मित्रों, किसान भाइयों, मीडिया प्रतिनिधियों और विभागीय अधिकारियों को सहयोग करने की सलाह दी। कृषि विज्ञान केंद्र के चीफ साइंटिस्ट बिमलेंदू मोहंती ने कहा कि सभी तरह की जानकारी इकट्ठा की जाएगी और 15 जनवरी तक GI स्टेटस के लिए अप्लाई किया जाएगा। पाल बैंगन के बारे में सभी तरह की जानकारी एक कमेटी के ज़रिए इकट्ठा की जाएगी। बारा का असली डेटा भी इकट्ठा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र इन पाल बैंगन और बारा की खासियत को टेस्ट करेगा और GI स्टेटस के लिए अप्लाई करेगा। मीटिंग में डिसट्रिक्ट चीफ एग्रीकल्चर ऑफिसर बिश्वनाथ दास, मिशन शक्ति, ओरमास के डिप्टी CEO, मीठा एसोसिएशन के प्रेसिडेंट और एडिटर सौम्यब्रत साहू शामिल हुए।

मोदीजी - बांग्लादेश में मारते हिंदुओं को बचा लीजिए

लोग बोले – एकता और भाईचारे की बात करने वाले देश के सभी नेताओं के मुंह में आज लकवा मार गया है, इसलिए आपसे ही उम्मीद है मोदी जी योगी जी बांग्लादेश में मर रहे हिंदुओं को बचा लीजिए

अब, पानी सर से ऊपर जा रहा है, बंगलादेश में मर रहे हिन्दुओ को सुरक्षित करने के लिए कुछ कीजिए

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश। बांग्लादेश में खुलेआम हिंदुओं के नरसंहार पर चिंता व्यक्त करते हुए लोगों ने बताया कि कहां गए एकता और भाईचारे की दुहाई देने वाले आज सभी चुप हैं। देश के नेताओं के मुंह में लकवा मार गया हैं। हम सभी भारतीय कि मोदी जी से जोड़ कर बिनती करते हैं कि बंगलादेश से सभी हिन्दुओं को वापस लाये। आज इस बेरहमी पर कोई भी विरोधी पार्टी एक जुबान नहीं बोल रहा हैं। यही इनकी असलियत है, बांग्लादेश में हिंदू मारे जा रहे हैं और यह सभी चुप हैं।

उन्होंने कहा कि मोदी जी हमें सिर्फ आपसे उम्मीद है बांग्लादेश में मर रहे हिंदुओं को बचा लीजिए वह खुलेआम हिंदुओं का नरसंहार हो रहा है। और भारत में एकता की बात करने वाले बंगलादेश में हिंदुओं के मरने का इंतजार कर रहे हैं कोई कुछ नहीं बोल रहा है। देश हमारा है हिंदुओं को मरने मत दीजिए मोदी जी उन्हें बचा लीजिए नहीं तो बांग्लादेश के कट्टरपंथी हिंदुओं को फांसी लगाकर चौराहे पर जलाकर और महिलाओं एवं बच्चियों से सामूहिक बलात्कार करके मार देंगे। मोदी जी आपसे हमारी विनम्र निवेदन है कि अपने हिंदुओं को मारने से बचा लीजिए। देश के नेताओं के मुंह में आज लकवा मार गया है, इसलिए आपसे ही उम्मीद है मोदी जी बांग्लादेश में मर रहे हिंदुओं को बचा लीजिए। उन्होंने आगे कहा कि मोदी जी बांग्लादेश से मर रहे हिंदुओं को ले आई हमारी प्रार्थना हैं कि उनको भारत में सरन दे उनके जान ओर सम्मान की रक्षा केवल आप ही कर सकते हैं। 120 करोड़ हिन्दू आपसे प्रार्थना करहे कि उनकी चीखों चीत्कारों में केवल आप ही से अपेक्षा है, आप पर ही भरोसा है, उनकी जिंदगी को नर्क होने से बचे लीजिए। बांग्लादेश से सभी हिंदुओं को भारत में बसाया जाए क्योंकि कट्टरपंथी वहां उन्हें जिंदा नहीं छोड़ेंगे। अत्याचार सहते अपने हिंदू भाइयों के लिए सभी हिंदुओं को न्याय की आवाज उठानी चाहिए। मोदी जी योगी जी अब बहुत हो गया अब बांग्लादेश से हिंदुओं को बुला लीजिए। अब मोदी जी सब्र की सीमा समाप्त हो चुकी है। बांग्लादेश का उपचार करने का सही समय आ गया है।

उन्होंने कहा कि हिन्दुओ को सेव करने की कार्य वाही करना चाहिए क्योंकि कि आप सिर्फ और सिर्फ हिन्दुओं के वोटों से प्रधानमंत्री हैं। पानी सर से ऊपर जा रहा है, अब बंगलादेश में मर रहे हिन्दुओ को सुरक्षित करने के लिए कुछ करना चाहिए। नजर आ रही यह घटनाएं बिल्कुल बहुत दुखद है, यह जो भीड़ थी वो पहले भी ऐसा हो चुका है। अब यह सोचने वाली बात हैं कि बंगलादेश की पुलिस और सेना क्या कर रही हैं? क्या यह भी इस खेल में शामिल हैं। ऐसे हालत में हिन्दुओं को सेव करने के लिए भारत सरकार को तुरंत कार्यवाही करनी चाहिए।

ऐसी भयावह घटनाओं को देशकर बहुत रोना आता है अपने आप पर - बस इतना कहना चाहते कि सभी हिंदू भाई बहनों से वो जातीय भेदभाव से ऊपर उठकर एकता स्थापित करें और सरकार पर दबाव बनाएं कि ये देश हिंदू के लिए सुरक्षित हो जाए।

आज आपका अपना ऑटो टैक्सी यूनियन का 9वा स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें सैकड़ों ऑटो टैक्सी चालकों ने भाग लिया सभी को आई कार्ड देकर सम्मानित किया गया - उपेन्द्र सिंह

मेगा पी.टी.एम. के दौरान बड़ी संख्या में सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के अभिभावकों ने की सहभागिता

– डी.ई.ओ. राजेश कुमार शर्मा, कंवलजीत सिंह संधू सहित अन्य अधिकारियों ने विभिन्न स्कूलों का किया दौरा

अमृतसर, 21 दिसंबर (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत शिक्षा विभाग पंजाब द्वारा स्कूली विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अभिभावकों, अध्यापकों और सरकार के संयुक्त प्रयास के अंतर्गत प्रदेश के सभी 19,100 सरकारी स्कूलों में चौथी मेगा अभिभावक-शिक्षक बैठक (पी.टी.एम.) तथा पहली विशेष अभिभावक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों के अभिभावकों ने भाग लेकर अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति एवं शैक्षणिक स्तर संबंधी जानकारी प्राप्त की। साथ ही कार्यशाला के माध्यम से अभिभावकों को पंजाब सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के हित में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी गई।

प्रदेश सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित की जा रही मेगा पी.टी.एम. एवं अभिभावक कार्यशाला की समीक्षा के लिए श्री राजेश कुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी (से. सि.) तथा सरदार कंवलजीत सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी (ए. सि.) अमृतसर ने सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल अटारी, सरकारी हाई स्कूल अटारी, सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल कोट बाबा दीप सिंह, एस.ओ.आई. स्कूल छेहर्टा, सरकारी प्राइमरी स्कूल शरीफपुरा, सरकारी प्राइमरी स्कूल तुंग बाला, सरकारी प्राइमरी स्कूल वडाली गुरु तथा पी.एम. श्री सीनियर सेकेंडरी स्कूल वडाली गुरु का दौरा किया।

इस अवसर पर शिक्षा अधिकारियों ने विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को स्कूल प्रबंधन में सक्रिय भागीदारी निभाने तथा सरकारी स्कूलों की उन्नति में सहयोग देने का आह्वान किया। उन्होंने पंजाब सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के हित में चलाई जा रही विभिन्न नीतियों एवं योजनाओं की विस्तृत जानकारी भी साझा की।

शिक्षा अधिकारियों ने बताया कि सरकारी स्कूलों के शिक्षण स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और आज सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में निजी स्कूलों के विद्यार्थियों को कड़ी टक्कर दे रहे हैं। इसी कारण बड़ी संख्या में निजी स्कूलों के विद्यार्थी अब सरकारी स्कूलों में प्रवेश ले रहे हैं।

इस मौके पर उनके साथ श्री राजेश खन्ना, श्रीमती इंदु बाला मंगोतरा (दोनों डिप्टी डी.ई.ओ.), परमिंदर सिंह सरपंच (जिला मीडिया कोऑर्डिनेटर), देविंदर कुमार मंगोतरा (सोशल मीडिया कोऑर्डिनेटर), बलजीत सिंह बी.ई.ई.ओ., हर्ष अरोड़ा (शिक्षा कोऑर्डिनेटर हलका पूर्वी), श्री राजन डी.आर.सी., स्कूल मुखी अवतार सिंह, स्कूल मुखी रोहित देव, प्रिंसिपल कंवलजीत कौर काहलों, संदीप सियाल, यादविंदर सिंह, सी.एच.टी. प्रदीप सिंह भकना, लेक्चरर जगदीपक सिंह, रमिंदर सिंह खालसा, गुरप्रीत सिंह वडाली गुरु, रणजीत सिंह राणा, लेक्चरर धन्ना सिंह, श्रीमती हरप्रीत कौर सहित अन्य शिक्षा अधिकारी उपस्थित रहे।

डिजिटल नशे की गिरफ्त में फँसते जा रहे हैं बच्चे : मुकेश शर्मा रत्ती

अमृतसर, 21 दिसंबर (साहिल बेरी)

आज डिजिटल युग में बढ़ते खतरे समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय बनते जा रहे हैं। मुकेश शर्मा रत्ती ने कहा कि पूरे पंजाब में बच्चों द्वारा मोबाइल फोन, इंटरनेट और डिजिटल साधनों का अत्यधिक उपयोग एक नए प्रकार के नशे के रूप में सामने आ रहा है। यह प्रवृत्ति माता-पिता, शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों और पूरे समाज के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है।

उन्होंने कहा कि मोबाइल फोन, इंटरनेट, ऑनलाइन गेमिंग, सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने बच्चों को मानसिक और भावनात्मक रूप से जकड़ लिया है। इसका सीधा असर उनके व्यवहार, दिनचर्या, स्वास्थ्य और पढ़ाई पर पड़ रहा है। डिजिटल लत की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह धीरे-धीरे बच्चों की एकाग्रता को समाप्त कर देती है, जिसके कारण बच्चे पढ़ाई से दूर होकर चिड़चिड़े और आक्रामक स्वभाव के हो रहे हैं।

उन्होंने बताया कि बच्चों में नींद की कमी, मानसिक तनाव और अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऑनलाइन गेम्स और रील्स के शौकीन बच्चे वास्तविक दुनिया से दूर होते जा रहे हैं।

मुकेश शर्मा रत्ती ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार पर इसके गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में माता-पिता की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

उन्होंने माता-पिता से अपील की कि बच्चों की स्क्रीन टाइम पर निगरानी रखी जाए, घर में स्पष्ट नियम बनाए जाएँ और बच्चों को बाहरी खेलों, खेलकूद तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में शामिल किया जाए, ताकि उन्हें डिजिटल नशे से दूर रखा जा सके।

जिला अमृतसर में "यूथ अगेंस्ट ड्रग्स" अभियान के अंतर्गत एक सेमिनार आयोजित

अमृतसर, 21 दिसंबर (साहिल बेरी)

माननीय न्यायमूर्ति श्री अश्वनी कुमार मिश्रा जी, न्यायाधीश, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय तथा एक्जीक्यूटिव चेयरमैन, पंजाब स्टेट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी, एस.ए.एस. नगर (मोहाली) के नेतृत्व में तथा माननीय सदस्य सचिव, पंजाब स्टेट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी, एस.ए.एस. नगर (मोहाली) और मिस जतिंदर कौर, जिला एवं सत्र न्यायाधीश–कम–चेयरपर्सन, जिला लीगल सर्विसेज अथॉरिटी, अमृतसर के मार्गदर्शन में, जिला लीगल सर्विसेज अथॉरिटी (डी.एल.एस.ए.), अमृतसर द्वारा दिनांक 20.12.2025 को लीगल एड क्लीनिक, बाबा बकाला साहिब, जिला अमृतसर में "यूथ अगेंस्ट ड्रग्स" अभियान के अंतर्गत एक सेमिनार का आयोजन किया गया।

यह सेमिनार पैरा लीगल वॉलंटियर्स (पी.एल.वीज़) द्वारा श्री अमरदीप सिंह बैंस, सचिव, जिला लीगल सर्विसेज अथॉरिटी, अमृतसर की देखरेख एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। सेमिनार का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को नशे की लत के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा युवाओं को स्वस्थ, अनुशासित और नशा-मुक्त जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। इस दौरान प्रतिभागियों को नशे की आदत के सामाजिक, शारीरिक एवं कानूनी परिणामों की जानकारी दी गई।

सेमिनार के दौरान पी.एल.वीज़ ने देश की प्रगति में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया और प्रतिभागियों को नशे तथा अन्य नकारात्मक प्रभावों से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने युवाओं से अपने साथियों, परिवारों और समाज में नशा विरोधी जागरूकता फैलाने हेतु परिवर्तन के दूत बनने की अपील की।

लीगल एड क्लीनिक, बाबा बकाला साहिब में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। कार्यक्रम का समापन एक इंटरएक्टिव सत्र एवं सामूहिक शपथ के साथ किया गया, जिसके माध्यम से "यूथ अगेंस्ट ड्रग्स" अभियान को समर्थन देने का संकल्प दोहराया गया तथा डी.एल.एस.ए., अमृतसर की जन-जागरूकता एवं सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया गया।

सरकार की भूमिका देश के लोगो को अवसर प्रदान करती है- अजीत तेवतिया

परिवहन विशेष न्यूज

अंतर्राष्ट्रीय सोशल वर्कर्स कॉन्फ्रेंस में मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार से अजीत तेवतिया ने अपने संबोधन में पूरे देश भर से आए लोगो को बताया -

किसी भी राष्ट्र की उन्नति इस बात से नहीं मापी जाती कि उसके सबसे अमीर लोग कितने संपन्न हैं, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि उस राष्ट्र के सबसे कमजोर, वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान है या नहीं।

अक्सर यह प्रश्न उठता है कि सामाजिक कल्याण में सरकार की क्या भूमिका है?

मेरा मानना है कि एक लोक-कल्याणकारी राज्य में सरकार की भूमिका केवल 'प्रशासक' की नहीं, बल्कि एक 'अभिभावक' और 'साथी' की होती है। हमारा काम केवल नीतियां बनाना नहीं है, बल्कि उन नीतियों के माध्यम से समाज के हर वर्ग को गरिमा (Dignity) और अवसर (Opportunity) प्रदान करना है।

हमारी प्राथमिकताएं और प्रयास

हमारा विभाग, ₹सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास₹ के मूल मंत्र पर काम कर रहा है।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक सामाजिक स्वतंत्रता न मिले। हमारी सरकार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए छात्रवृत्ति से लेकर कौशल विकास (Skill Development) तक, हर कदम पर उनके साथ खड़ी है।

हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। 'वयोश्रेष्ठ सम्मान' और वृद्धाश्रमों की आधुनिक व्यवस्था के जरिए हम उनका सम्मान सुनिश्चित कर रहे हैं। साथ ही, 'नशा मुक्त भारत अभियान' के जरिए हम अपनी युवा पीढ़ी को एक नई दिशा देने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

साथियों, सरकार संसाधन दे सकती है, कानून बना सकती है और अवसर पैदा कर सकती है। लेकिन सामाजिक न्याय को धरातल पर उतारने के लिए संवेदना (Empathy) की आवश्यकता है।

सरकार की भूमिका एक पुल (Bridge) की तरह है जो वंचित वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ता है। हम यह सुनिश्चित करने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं कि किसी भी व्यक्ति को उसकी जाति, उम्र, या शारीरिक क्षमता के कारण पीछे न रहना ।सामाजिक कल्याण कोई 'दान' नहीं है, यह नागरिकों का 'अधिकार' है और सरकार का 'कर्तव्य' है।

करमजीत सिंह रिंटू ने ब्लिस एवेन्यू में बिजली का नया ट्रांसफर शुरू करवाया: कहा, इलाके के पार्क की करवाई जाएगी ब्यूटीफिकेशन

अमृतसर, 21 दिसंबर (साहिल बेरी)

इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज कर्मजीत सिंह रिंटू ने वार्ड नंबर 8 में ब्लिस एवेन्यू में वहां के लोगों से मुलाकात की। रिंटू ने क्षेत्र के लोगों को बिजली से जुड़ी दिक्कतों को दूर करते हुए बिजली का नया ट्रांसफॉर्मर शुरू करवाया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों को बिजली से संबंधित जो भी समस्या आ रही थी अब नया ट्रांसफार्मर शुरू होने से बिजली से संबंधित कोई परेशानी नहीं आएगी। उन्होंने कहा कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के लोगों से प्रतिदिन मिलकर उनकी समस्याओं का हल निकाला जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पिछले 3 महीनो में उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की अधिकांश टूटी हुई सड़कों को बनवा दिया गया है। रिंटू ने कहा कि सर्दी के बढ़ जाने के कारण सड़के बनवाने के प्रीमिक्स प्लांट बंद हो गए हैं। उन्होंने कहा कि उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की जो सड़क अधूरी रह गई है उसको आने वाले वर्ष मार्च महीने में शुरू करवा दिया जाएगा।

इसके साथ ही, करमजीत सिंह रिंटू ने इस इलाके के पार्क का दौरा किया और ब्यूटीफिकेशन के लिए ज़रूरी कामों का रिव्यू किया। रिंटू ने कहा कि पार्क की ब्यूटीफिकेशन का कार्य जल्द शुरू करवा दिया जाएगा।उन्होंने इलाके के लोगों से बात की और दूसरी दिक्कतों के बारे में जाना और हर दिक्कत को प्रायोरिटी के आधार पर हल करने का भरोसा दिया। इस मौके पर वार्ड इंचार्ज प्रणव धवन जी और बड़ी संख्या में इलाके के लोग मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023